हज़रत मख़दूमे जहाँ
शैख़ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी

जीवन और संदेश
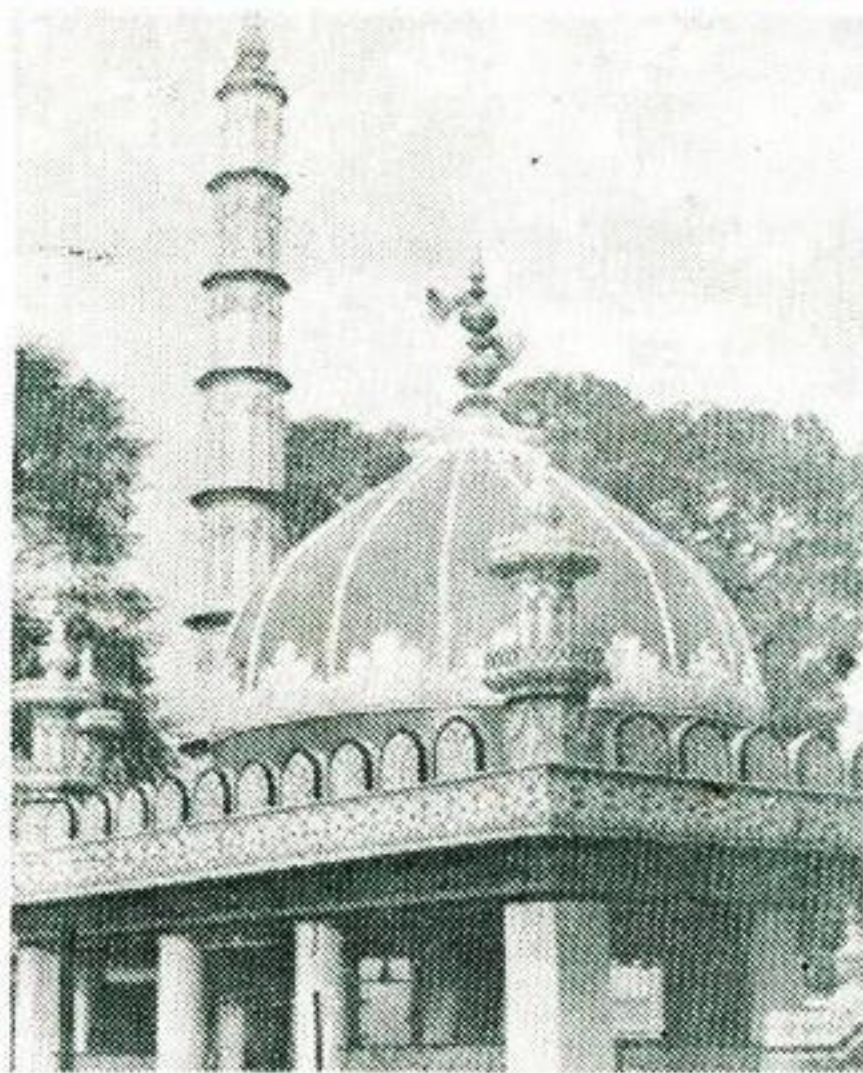
सैयद शमीम मुनएमी

मकतब-ए-शरफ़

बैतुश्शरफ़, ख़ानक़ाह मोअज़्ज़म

बिहार शरीफ़, नालन्दा

हज़रत मख़दूमे जहाँ

शैख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी

(1263 - 1380 ई०)

जीवन और संदेश

सैयद शमीम मुनएमी

एम० ए० अरबी. फ़ारसी, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व
बी० लिब० एवं इनफ़० साईंस
अरबी विभाग, ऑरियन्टल कॉलेज पटना सिटी

मक्तबा शरफ़ बैतुश्शरफ़ ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म
बिहार शरीफ़

प्राक्कथन

इस संसार में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिन की चर्चा कर लेखक उन पर कृपा करता है परन्तु कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं, कि जिनकी चर्चा और गुणगान कर लेखनी, लेखक सभी धन्य हो जाते हैं। सारे संसार के लिए दया और करूणा का केन्द्र बिन्दु बना कर अवतरित किये गए पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का गुणगान करते हुए उनके प्रसिद्ध शिष्य और अरबी भाषा के विख्यात कवि हज़रत हस्सान बिन साबित ने कहा था-

मा इन मदहतो मुहम्मदन बेमक़ालती
लाकिन मदहतो मक़ालती बेमुहम्मदिन

मैं अपनी रचना के द्वारा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का गुणगान क्या करूँगा सत्य तो यह है कि मैं ने उनकी चर्चा के द्वारा अपनी रचना को प्रशंसा के योग्य बना दिया है।

महान पैगम्बर के मार्ग का अनुसरण कर ईश कृपा से हज़रत मख़दूमे जहाँ भी ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी हुए हैं कि मैं उनके गुणगान को स्वंय अपने लिए मोक्ष और मुक्ति का साधन मानता हुँ।

जो व्यक्तित्व परमात्मा की दृष्टि में प्रिय हो जाता है उसे परमात्मा अपनी आभा से ढाँक लेता है, हर किसी को न तो उसकी महानता सूझती है, न ही हर किसी को उसके चरणों का स्पर्श प्राप्त होता है और न ही हर व्यक्ति को उनके गुणगान का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह तो मात्र परमात्मा की कृपा है कि वह अपने किसी सेवक को यह शक्ति प्रदान करता है कि वह उसके प्रिय व्यक्तित्व का अपनी क्षमतानुसार गुणगान कर सके। वरना कहाँ मख़दूमे जहाँ का व्यक्तित्व और कहाँ संसार की मोह माया में लिप्त यह तुच्छ लेखक।

जो व्यक्तित्व परमात्मा के समीप अपनी आस्था और पवित्र जीवन के

कारण स्वीकृत हो जाता है, उसके प्रति परमात्मा लोगों के दिलों में प्रेम और आदर की धड़कनें पैदा कर देता है सारा जग उसके वशीभूत हो जाता है। यही कारण है कि मख़दूमे जहाँ की दरगाह शरीफ़ पर धर्म, आस्था, पंथ, सम्प्रदाय, जात-पात, नागरिकता और पहचान से ऊपर उठकर सभी लोग श्रद्धा अर्पित करने पहुँचते हैं, जिनमें बहुत बड़ी संख्या में हिन्दी भाषी होते हैं, उनकी जिज्ञासा और बारंबार इच्छा का सम्मान करते हुए, हज़रत **मख़दूमे जहाँ** के वर्तमान सज्जादानशीन जनाबहुज़ूर सैयद शाह मुहम्मद **सैफुद्दीन फ़िरदौसी** साहब ने मुझे इस कार्य के लिए उत्प्रेरित किया और मात्र उनके आदेश की अवहेलना से बचने के लिए मैं ने इस लक्ष्य को स्वीकार किया साथ ही श्री **शैलेष कुमार सिंह**, जिलाधिकारी, नालन्दा, श्री **सभापति कुशवाहा**, अपर समाहर्त्ता, नालन्दा और श्री **सुरेश कुमार भारद्वाज**, पूर्व आरक्षी निरीक्षक, नालन्दा, का मुखर प्रयास भी इस पुस्तक के इस रूप में आने का कारण बना और मात्र एक महीने में, वह भी रमज़ान जैसे महीने में अपनी क्षमता के अनुरूप यह प्रयास पाठकों की सेवा में स्वीकृति के लिए अर्पित है।

इस पुस्तक की तैयारी में मैं अपने बड़े भाई श्री अहमद बद्र का भी हार्दिक आभारी हूँ कि उन्होंने अपनी व्यस्तता के बातजूद समय निकाल कर इस पुस्तक पर एक दृष्टि डाली और बहुमूल्य सुझाव दिये। मैं इस सन्दर्भ में डा० अली अरशद साहेब शरफ़ी का भी आभारी हूँ। समय की कमी और अपनी दूसरी व्यस्तताओं के कारण इस प्रयास में ढेर सारी कमी रह गई है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि इस पुस्तक में आप की दृष्टि में कोई त्रूटि आये तो मुझे क्षमा कर सूचित करने की कृपा करें ताकि भविष्य में इसका सुधार हो सके।

ख़ानक़ाह मुनएमीया क़मरीया
मीतन घाट, पटना सिटी

शमीम मुनएमी

संदेश

यह मेरा सौभाग्य है कि एक ऐसी पावन धरती पर कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है, जो हज़रत मख़दूमे जहाँ जैसे महान सूफ़ी संत की एतिहासिक कर्मस्थली और सारे उपमहाद्वीप के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रही है। आपकी दरगाह पर श्रद्धांजली अर्पित करने जब भी गया तो आत्मिक शांति तो प्राप्त हुई ही साथ ही आशीर्वाद जन सेवा के लिए उत्प्रेरक शक्ति भी प्राप्त हुई। मख़दूम साहेब के विलक्षण व्यक्तित्व के बारे में कभी-कभी कुछ सुनने को मिलता तो यह जिज्ञासा अवश्य होती थी कि आपकी जीवनी और संदेश से सम्बन्धित कोई पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिए होनी चाहिए। जब मुझे इस दिशा में पहल किए जाने की सूचना मिली तो बड़ी प्रसन्नता हुई। हज़रत मख़दूम साहेब के वर्तमान गद्दीनशीन श्री सैयद शाह सैफुद्दीन फ़िरदौसी साहेब तथा इस पुस्तक के लेखक, प्रकाशक और मुद्रक सभी के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं।

शैलेष कुमार सिंह

भा० प्रा० सं०

जिलाधिकारी, नालन्दा

संदेश

यह जानकर मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि महान सूफ़ी संत, अपने संदेशों में मानवीय संवेदना को सर्वोच्च स्थान देने वाले बिहार की मिट्टी को पवित्र बनाकर बिहारशरीफ़ बनाने वाले हज़रत मख़दूम-अल-मुल्क शरफुद्दीन यहया मनेरी के जीवन, साधना एवं संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए हिन्दी में यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। इसमें वर्तमान सज्जादा नशीन सैफुद्दीन साहब का अपूर्व योग्यदान है। मुझे आशा है, भौतिकवादी विचार धारा की ओर खींच रहे करोड़ो लोगों को, हज़रत मख़दूम का संदेश एक नई प्रेरणा, एक नयी दिशा प्रदान करेगा। हज़रत को नमन और प्रकाशक को कोटिशः शुभकामनाओं के सा"।

सभापति कुशवाहा
अपर समाहर्त्ता, नालन्दा एवं
अध्यक्ष
अन्वेषण मंच, बिहारशरीफ़

विषय सूची

दिल्ली, बदायूँ और जौनपूर की भाँति बिहार प्राँत के नालन्दा जिला का बिहार शरीफ़ प्रखण्ड भी उत्तर पूर्व भारत के ख्याति प्राप्त स्थलों में से एक है, जहाँ बड़ी संख्या में सूफी संतों की दरगाहें और ख़ानक़ाहें मौजूद हैं। बिहार प्राँत के प्राय: सभी क्षेत्रों में सूफी संतों के मज़ार, मक़बरे, ख़ानक़ाहें और दरगाहें तथा उनसे जुड़ी यादगारें फैली हुई हैं परन्तु बिहार शरीफ़ इन सभी में सर्वप्रथम है। विभिन्न विचारधारा और जीवन शैली वाले सूफ़ी संत अपने-अपने काल में महत्वपूर्ण योग्यदान देकर यहाँ अपनी समाधियों में आराम कर रहे हैं, लेकिन इन सभी में सर्वाधिक लोकप्रिय, महान और सर्वोत्तम मख़दूमे जहाँ शैख़ **शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी** का अस्तित्व है।

जन्म

इस धरती के महान सपूत हज़रत मख़्दूमे जहाँ का जन्म 26 शाबान 661 हि०/1263 ई० को पटना जिले के मनेर शरीफ़ में हुआ। उस समय सुल्तान नासिरूद्दीन महमूद जैसा न्यायप्रीय और सज्जन शासक दिल्ली की गद्दी पर आसीन था। मनेर शरीफ़ में आज भी ख़ानक़ाह से सटे एक दालान और दो कमरों वाली एक असुसज्जित इमारत में, जो **"रवाक़"** कहलाती है, आपका जन्म स्थान सुरक्षित है।

पिता और परिवार

सर्वप्रथम मख़दूमे जहाँ का परिवार 576 हि०/1180 ई० में भारत वर्ष पधारा था, जबकि राजा मनयर इस क्षेत्र में निरंकुश और बर्बर शासक था और मनेर उसकी राजधानी थी उसी वर्ष हज़रत मख़दूमे जहाँ के दादा के पिता हज़रत इमाम मुहम्मद ताज फक़ीह ने उसके कुशासन से पीड़ित जनता को मुक्ति प्रदान की थी। वे स्वंय तो अपने देश येरूशलम (*बैतअलमुक़द्दस*) वापस लौट गए लेकिन उनके पुत्र (*शैख़इस्राईल,शैख़ इस्माईलतथाशैख़अब्दुलअज़ीज़*) उनकी अज्ञानुसार यहीं रह गए। इन तीनों भाईयों का वंश खुब फला-फूला और उनके वंशज में बड़े-बड़े सुफी संत और बुद्धिजीवी हुए, जिनके विवरण की लिए एक अलग पुस्तक की आवश्यकता है यहाँ केवल इस परिवार के सबसे उज्जवल और महत्वपूर्ण उपलब्धि हज़रत मख़दूमे जहाँ का उल्लेख किया जाता है।

हजरत मख़दूमे जहाँ की वंशावली सारे संसार के लिए साक्षात दया और कृपा बना कर अवतरित किए गए पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के सगे चचा ज़ुबैर बिन अब्दूलमुत्तलिब से इस प्रकार जा मिलती है।

मख़दूमे जहाँ शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी पुत्र शैख़ कमालुद्दीन यहया मनेरी पुत्र शैख़ इस्राईल पुत्र हज़रत इमाम मुहम्मद ताज फ़क़ीह पुत्र इमाम अबूबक्र पुत्र इमाम अबुलफ़तेह पुत्र इमाम अबुल कासिम पुत्र इमाम अबुस्साएम पुत्र इमाम अबुदहर पुत्र इमाम अबुल्लैस पुत्र इमाम अबूसहमा पुत्र अबूदीन पुत्र इमाम अबूमसऊद पुत्र इमाम अबूज़र पुत्र ज़ुबैर पुत्र अब्दुलमुत्तलिब पुत्र हाशिम

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पिता हज़रत मख़दूम कमालुद्दीन यहया मनेरी भी अपने समय के एक महान सुफ़ी संत थे, उन्होंने सुफ़ीवाद की शिक्षा-दीक्षा विख्यात सुफ़ी संत हज़रत शैख़अल्शयूख़ उमर बिन मुहम्मद शहाबुद्दीन सुहरवर्दी से प्राप्त की थी और मनेर शरीफ़ में अपने पिता शैख़ इस्राईल के बाद उनका स्थान ग्रहण किया था।

हज़रत मख़दूम को मिलाकर आपके चार पुत्र और एक पुत्री थीं। हज़रत मख़दूमे जहाँ के बड़े भाई शैख़ जलीलुद्दीन ने, अपने पिता के बाद मनेर में उनका स्थान ग्रहण किया।

मंझले स्वंय हज़रत मख़दूमे जहाँ थे और तीसरे भाई शैख़ ख़लीलुद्दीन थे, जिन्होंने बिहार शरीफ़ में मख़दूमे जहाँ के साथ सारा जीवन व्यतीत किया और उनकी क़ब्र भी मख़दूमे जहाँ के चरणों के पास स्थित है। चौथे भाई शैख़ हबीबुद्दीन, मख़दूम नगर जिला वीरभूम बंगाल में हज़रत मख़दूमे जहाँ के एक मात्र पुत्र शैख़ ज़कीउद्दीन के साथ रहते थे और वहीं इन दोंनो संतों की क़ब्रे हैं। हज़रत मख़दूम जहाँ की बहन बीबी माह, मौलाना शमसुद्दीन माज़न्दरानी की पत्नी थी।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पिताश्री की दरगाह मनेर शरीफ़ में उँचे टीले पर अवस्थित है और मनेर शरीफ़ की बड़ी दरगाह कहलाती है। प्रत्येक वर्ष इस्लामी कैलन्डर से 11 शाबान को उनका उर्स होता है।

माता और उनका परिवार

हज़रत मख़दूमे जहाँ की माताश्री बीबी रज़िया, जो बड़ी बुआ भी कहलाती थीं प्रसिद्ध सुफ़ी संत शैख़ शहाबुद्दीन पीर **"जगजोत"** की बड़ी पुत्री थीं। पीर जगजोत अफ़गानिस्तान से उत्तर स्थित काशगर प्रांत से भारत आए थे कहते हैं कि वे काशगर के राजा या न्यायधीश थे और उन्होंने राजसी ठाठ-बाट को लात मार कर संत मार्ग अपना लिया था। उन्होंने भी मख़दूमे जहाँ के पिता की भाँति विख्यात सुफ़ी संत शैख़ अल्शयूख उमर शहाबूद्दीन सुहरवर्दी से दीक्षा प्राप्त की थी और उन्हीं के आदेशानुसार इस क्षेत्र में पधारे थे। आज भी पटना में आपकी दरगाह, कच्ची दरगाह के नाम से विख्यात है और सभों की श्रद्धा का क्रेन्द्रबिन्दु है। प्रत्येक वर्ष इस्लामी कैलन्डर से ज़ीक़ाद मास की 21को आपका वार्षिक उर्स सम्पन्न होता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की वंशावली अपनी माता की ओर से पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलेहे वसल्लम से इस प्रकार जा मिलती है:-

मख़दूमे जहाँ शैख़ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी पुत्र बीबी रज़िया पुत्री मख़दूम शहाबुद्दीन पीर जगजोत पुत्र सैयद मुहम्मद पुत्र सैयद अहमद पुत्र सैयद नासिरूद्दीन पुत्र सैयद युसुफ़ पुत्र सैयद हसन पुत्र सैयद क़ासिम पुत्र सैयद मूसा पुत्र सैयद हमज़ा पुत्र सैयद दाऊद पुत्र सैयद रूकुनुद्दीन पुत्र सैयद क़ुत्बुद्दीन पुत्र सैयद इस्माईल पुत्र सैयदना इमाम जाफ़र सादिक़ पुत्र

हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र पुत्र हज़रत इमाम जैनुलआबेदीन पुत्र इमाम हुसैन पुत्र बीबी फ़ातिमा पुत्री हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम।

आपकी माताश्री बीबी रज़िया की तीन छोटी बहनें और थीं। उनकी दूसरी छोटी बहन बीबी हबीबा, हज़रत मुसा हमदानी की पत्नी थीं, जिनके सुपुत्र हज़रत मख़दूम अहमद चरमपोश (*नि:776 हि०/1374 ई०*) प्रसिद्ध सुफ़ी संत हुए। उनकी दरगाह बिहार शरीफ़ के अम्बेर मुहल्ले में मशहूर है।

उनकी तीसरी बहन बीबी कमाल, हज़रत इमाम मोहम्मद ताज फ़कीह के पौत्र सुलेमान लंगर ज़मीन की पत्नी थी। उनकी दरगाह जहानाबाद जिला के काको ग्राम में श्रद्धा का केन्द्र बिन्दु है।

उनकी चौथी बहन मख़दूम हमीदुद्दीन चिशती की पत्नी थीं जिनकी दरगाह अपने पिता के साथ कच्ची दरगाह के समीप पक्की दरगाह में प्रसिद्ध है। मख़दूम हमीदुद्दीन के सुपुत्र मख़दूम तय्यमुल्लाह चिशती की दरगाह बिहार शरीफ़ के बीजवन ग्राम में स्थित है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की माता और उनकी बहनें तथा उनकी सन्तान सभी का व्यक्तिव सूफ़ी दर्शन व जीवन शैली का श्रेष्ठ उदाहारण था और ये सभी ईश्वर की असाधारण कृपादृष्टि के पात्र थे।

जन्मजात वली

हज़रत मख़दूमे जहाँ की महानता के लक्षण तो उनके जन्म से पूर्व ही परिलक्षित होने लगे थे फिर जब आपका जन्म हुआ तो आपने रमज़ान मास में व्रत की अवधि में स्तनपान कभी नहीं किया। आपके स्तनपान की अवधि में एक बार **29** रमज़ान को आकाश बादल भरा था, लोग सामान्य रूप से चाँद न देख सके। कारणवश चाँद दिखने के सम्बन्ध में मतभेद हुआ। प्रातः लोग हज़रत मख़दूमे जहाँ के पिता के पास अपने मतभेद के निदान के लिए पहुँचे कि रोज़ा रखा जाये या नमाज़े ईद की तैयारी की जाये? उसी क्षण घर के भीतर से दाई यह समाचार लायी कि नवजात शिशु ने आज भी दूध नहीं पीया है। हज़रत मख़दूमे जहाँ के पिताश्री ने लोगों से कहा कि आप लोग रोज़ा रखें और दाई से कहा कि बच्चे को मत छेड़ो वह रोज़े से है।

पवित्र लालन पालन

हज़रत मख़दूमे जहाँ की माता श्री न केवल एक महापुरूष की पुत्री और एक सुफ़ी संत की पत्नी थीं बल्कि वे स्वंय भी एक आदर्श महिला और ईशभक्ति में लीन थीं। उन्हें भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के असधारण भविष्य का भलीभाँति आभास था इसीलिए उन्होंने भी आपके लालन पालन में विशेष सतर्कता और पवित्रता का ध्यान रखा यहाँ तक कि कभी भी अपवित्र अवस्था में आपको स्तनपान नहीं कराया।

एक दिन आपकी माताश्री आपको पालने में अकेला छोड़कर पड़ोस में गई जब लौटीं तो एक अजनबी व्यक्ति को देखा कि वह पालने के पास बैठे हैं और धीरे-धीरे पालना भी हिला रहे हैं। यह देखकर माताश्री भयभीत हो उठीं उसी क्षण वह अजनबी व्यक्ति आखों से ओझल हो गये जब आप भयमुक्त हुई और अपने पिताश्री को इस बात की जानकारी दी तो उन्होंने कहा! डरो मत वह ख़्वाजा ख़िज़र थे, वही पालने को हिला रहे थे और बच्चे की सुरक्षा कर रहे थे, तुम्हारा लड़का महापुरूष होगा, ख़्वाजा ख़िज़र मुझसे कह कर गये हैं कि तुम्हारी बेटी बच्चे को अकेला छोड़ कर गयी ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि अकेला छोड़ने में बच्चे की असुरक्षा की अशंका है।

प्रारम्भिक शिक्षा

प्रारम्भिक शिक्षा हज़रत मख़दूमे जहाँ की अपने माता पिता के संरक्षण में हुई। फिर मनेर शरीफ़ में हज़रत शाह रूकनुद्दीन मरग़ीनानी से भी कुछ मौलिक शिक्षा प्राप्त हुई। इस सम्बन्ध में कोई विशेष या विस्तृत विवरण प्राप्त नहीं होता है लेकिन हज़रत मख़दूमे जहाँ स्वंय स्पष्ट कहते हैं कि

> *" मु झेबचपनमेंगुरूओंनेकुछपुस्तकेंकन्ठस्थकराईजैसे मसादिर, मिफ़ताह अल्लुग़ात वैगरह, मिफ़ताह अल्लुग़ात बीस भाग की पुस्तक होगी जिसको कन्ठस्त कराया गया औरउसेबार-बारमुझेबिनादेखेसुनानापड़ता"*

मौलाना अशरफुद्दीन अबू तवामा

उस काल में जिन व्यक्तियों की शैक्षणिक महानता और विधता को पूरी इस्लामी दूनिया स्वीकारती थी उसमें एक महत्वपूर्ण नाम मौलाना अशरफुद्दीन अबू तवामा का भी था। वे उस काल की सभी प्रचलित विद्या में निपुण थे न केवल धार्मिक शिक्षा बलिक रसायन विज्ञान तथा हीमया एवं सीमया नामी विज्ञान में भी पंडित थे। वे सुल्तान बलबन (*1228-1281*) के शासनकाल में बुख़ारा से दिल्ली आये थे। सामान्य जनता, दरबारी, सामन्त और राजा सभी आपसे श्रद्धा रखते थे और आपका उनपर अच्छा प्रभाव था। हज़रत मख़दूमे जहाँ आपकी चर्चा करते हुए कहते हैं :-

"मौलानाअशरफुद्दीनतवामाभारतकेविद्वानोंमेंबहुतप्रसिद्धथे यहाँ तक कि उनकी विद्वता में किसी को भ्रम न था। आप रेशमी पगड़ी और इज़ारबन्द प्रयोग में लाते थे आप ने ऐसी चीज़ें लिखीं कि दूसरे विद्वानों को भीइसकीपैरवीकरनीचाहिए।"

मौलाना की असामान्य लोकप्रियता को देखकर स्वंय दिल्ली के सुल्तान को भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि मौलाना राजपाट पर अपना अधिपत्य जमा लें, कारणवश एक बहाना बना कर मौलाना को राजधानी छोड़ सोनार गाँव जाने के लिए सहमत करा लिया। मौलाना की दूरदर्शिता सब समझ गयी लेकिन सुल्तान के आदेश का पालन करने को उचित समझा और सुनार गाँव की ओर प्रस्थान किया और मार्ग में मनेर में विश्राम के लिए रुके।

सोनार गाँव प्रस्थान

हज़रत मख़दूमे जहाँ की आयु 10 या 12 साल थी कि मौलाना अशरफुद्दीन अबु तवामा मनेर में रुके। हज़रत मख़दूमे जहाँ भी उनकी प्रशंसा सुन दर्शन के लिए सेवा में गए और दिल ही दिल में यह निर्णय किया कि इन की सेवा में धर्मज्ञान की पूर्णरूपेण प्राप्ति की जा सकती है। हज़रत मौलाना अबुतवामा की दृष्टि से भी किशोर मख़दूमे जहाँ की मेधा और विद्या प्रेम छिपा न रहा और दोनों ने एक दूसरे को स्वीकार करने का मन बना लिया। हज़रत मख़दूमे जहाँ के माता पिता के दिल में

भी अपने होनहार पुत्र के लिए उज्जवल भविष्य की जैसी कामना थी उसकी पूर्ति के लिए इससे उत्तम मार्ग नहीं था। मौलाना अबुतवामा ने जब मनेर से सोनार गाँव की ओर प्रस्थान किया तो उनके साथ नवयौवन में पदार्पन कर रहे हज़रत मख़दूमे जहाँ भी बड़ी प्रसन्नता के साथ उनके शिष्यों में सम्मिलित होकर साथ-साथ चले।

सोनार गाँव वर्तमान बंगलादेश में उस मार्ग पर है जो चटगाम को जाती है। उस काल में दो शताब्दियों तक उसकी महत्ता रही। अज़ीम शाह सिकन्दर के पुत्र ने यहीं से विद्रोह और स्वशासन का झण्डा उठाया और उसने यहीं से फ़ारसी भाषा के विख्यात ईरानी सुफ़ी कवि हाफ़िज़ शीराज़ी को बंगाल पधारने का निमंत्रण दिया था।

ज्ञान-विज्ञान प्राप्ति

सोनार गाँव में हज़रत मख़दूमे जहाँ मौलाना अबू तवामा की सेवा में रात दिन एक करके शिक्षा की प्राप्ति में जुट गये लेकिन इस तन्मयता के बावजूद तप और साधना को भी त्यागा नहीं और लगातार तीन दिनों का व्रत कर अपने ब्रहह्मचर्य को सार्थक बनाते रहे।

मौलाना अशरफुद्दीन बुतवामा के गुरूकूल में खाने के समय सभी छात्र एकत्र होते, दस्तरख़ान बिछता और स्वंय मौलाना बूतवामा पधारते एवं सब साथ मिलकर भोजन करते। हज़रत मख़दूमे जहाँ कुछ दिनों तक तो इस नियम का पालन करते रहे, लेकिन इस नियम के पालन में समय कुछ अधिक व्यय होता है, ऐसा देखकर हज़रत मख़दूमे जहाँ ने दस्तरख़ान पर उपस्थित होना छोड़ दिया, मौलाना का आप पर विशेष ध्यान रहता था, दस्तरख़ान पर उपस्थित न देखकर जब आप को खोजा गया तो आपने अपने अध्ययन के लिए अधिक समय की आवश्यकता के कारण दस्तरख़ान पर अपनी उपस्थिति से स्वंय को मुक्त करने की प्रार्थना की। मौलाना ने अपका खाना अलग रखने का निर्देश दिया।

लगभग 17 वर्ष हज़रत मख़दूमे जहाँ ने मौलाना अबूतवामा की सेवा में सोनार गाँव में गुज़ारे। इस अवधि में धार्मिक ज्ञान और विज्ञान की सभी शाखाओं में शीर्षस्थ शिक्षा प्राप्त की। तफ़सीर (*पवित्रकुरआनकी व्याख्या*), हदीस (*पैग़म्बरहज़रतमुहम्मदकीवाणी*) फ़िक़ह (*जीवन*

निर्वाहकाइस्लामीविधान), उसूल फ़िक़्ह (*कुरआनऔरहदीसमेंविधि विधान की पहचान और उनके कर्यान्वियन के लिए उनके समझने की विधि)*, तस्व्वुफ़ (*सूफ़ीवाद*) इत्यादि ज्ञान शाखाओं में आसाधारण परिश्रम और घोर अध्ययन के बाद इन सभी क्षेत्रों में मील का पत्थर और प्रकाश पुंज बन गये।

शुभ विवाह

शिक्षा प्राप्ति, अध्ययन और शोध में तल्लीन रहने के कारण आपका ब्रह्मचर्य जीवन तो सफल हो गया परन्तु एक ऐसे रोग के लक्षण परिलक्षित होने लगे, जिसके निदान स्वरूप हकीमों के परार्मशानुसार आप ने वानप्रस्थ जीवन में पदार्पण किया और आपके गुरू मौलाना अबूतवामा की सुपुत्री बीबी बहू बादाम से गुरू की परम अभिलाषा के अनुसार शुभ विवाह सम्पन्न हुआ। जिनसे वहीं सुनार गाँव में एक पुत्र ज़कीउद्दीन का जन्म हुआ।

मनेर वापसी

पठन-पाठन के सम्पूर्ण काल में अपने घर से आने वाले किसी पत्र को भी हज़रत मख़दूमे जहाँ ने केवल इस लिए खोल कर नहीं पढ़ा कि पता नहीं किस समाचार से घर की याद सताने लगे और पढ़ने लिखने से दिल उचाट हो जाये। जब सोनार गाँव आना सार्थक हो गया और स्वंय गुरू ने सात बार आप की यह कहते हुए परिक्रमा कर डाली कि "*तुम्हारी ऐसीहिम्मतपरमैंबलिहारीजाऊँ*" तब आप ने उस थैली को खोला, जिस में घर से आने वाले सारे पत्र सजो कर रखे हुए थे तो प्रथम पत्र में ही पिताश्री हज़रत मख़दूम कमालुद्दीन यहया मनेरी के 11, शाबान 690 हि० को स्वर्गवास हो जाने का समाचार मिला। इस समाचार को पढ़कर आप चिंतित हो उठे और माताश्री की याद ने आपको व्याकुल कर दिया। प्रिय गुरू से आज्ञा ली और अपने अल्पायु पुत्र के साथ मनेर की ओर प्रस्थान किया। मनेर शरीफ़ पहुँच कर कुछ दिनों माताश्री के चरणों में बिताये परन्तु जैसी शिक्षा-दीक्षा आपने ग्रहण की थी, उसके फलस्वरूप लक्ष्य सांसारिक एश्वर्य या शाही नौकरी या क़ाज़ी, मुफ़्ती बनना नहीं था

बलिक एकमात्र सर्वशक्तिमान, सब के सृष्टिकर्त्ता और पालनहार *अल्लाह* की तलाश, जिज्ञासा, उसकी निकटता और सेवा की ऐसी ज्वाला हृदय में भड़क चुकी थी कि संसार के किसी कार्य में कदापि मन नहीं लगता था और आँखें हर समय किसी ऐसे गुरू, पीर, शैख़ और मुर्शिद को ढूंढती रहती थीं जो इस परम लक्ष्य की प्राप्ति करा सके।

इसी आशय से एक रोज़ आपनी माताश्री के चरणों में अपने अल्पायु पुत्र को यह कहते हुए रखा कि-

> *"इस को मेरे स्थान पर स्वीकार कीजिए और मुझे आज्ञा दीजिए कि जहाँ चाहूँ जाऊँ बल्कि यह समझ लीजिए की शरफुद्दीनमरचुका।"*

मख़दूमे जहाँ और दिल्ली

माताश्री स्वंय ईशभक्ति में लीन थीं, उन्होंने शुभ कार्य में आगे बढ़ने के लिए अपने प्रियतम पुत्र को प्रसन्नता के साथ आज्ञा दी। बड़े भाई शैख़ जलीलुद्दीन भी साथ चले। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने दिल्ली की ओर कूच किया। दिल्ली तब अल्लाह वालों की नगरी कहलाती थी, सल्तनत की राजधानी होने के साथ-साथ वहाँ सुल्तानुल मशाएख़ ख़ाजा निज़ामुद्दीन औलिया की उपस्थिति से मानो अध्यात्मिक राजधानी का भी रूप ले चुकी थी।

दिल्ली पहुँच कर हज़रत मख़दूमे जहाँ वहाँ के आलिमों की सभाओं में सम्मिलित हुए, सुफ़ी संतो से भेंट की और सभी का गहराई से निरीक्षण कर अधिकांश से असंतुष्ट ही रहे और उन लोगों के बारे में अपनी राय इस तरह दी कि

"*अगरएकसंतकीआभायहीहैतोमैंभीएकसंतहूँ।*"

हज़रत शरफुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर पानीपाती की महानता का सभी दम भरते थे हज़रत मख़दूमे जहाँ उनकी शरण में गए लेकिन बात नहीं बनी और यह कहते हुए वापिस हुए कि यहाँ आकर संत से भेंट हुई लेकिन इनकी दशा कदापि ऐसी नहीं कि दूसरों का मार्ग दर्शन कर सकें।

फिर हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया की सेवा में बड़े आदर और श्रद्धा के साथ हाज़िर हुए उस समय ख़्वाजा साहेब के समक्ष बड़े-बड़े

बुद्धिजीवी और विद्ववान इकट्ठा थे और किसी विषय पर चर्चा चल रही थी। इस चर्चा में सभी श्रोता भाग ले रहे थे, मख़दूमे जहाँ ने भी चर्चा में भाग लेते हुए बड़े सटीक उत्तर दिये। हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया ने भी आपका आदर सत्कार किया, हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अब अपना लक्ष्य और दिल्ली आने का कारण बताया तो ख़्वाजा साहेब ने उनका मार्ग दर्शन करने के बजाय पान की गिलौरियों से भरी थाली उनके सामने रख दी और कहा-

"*वास्तवमेंयहपक्षीविलक्षणहै,लेकिनमेरेजालके भाग्यकानहीं।*"

सुफ़ी संतों के यहाँ पान बढ़ाना विदा करने का चिह्न है। मख़दूमे जहाँ पान स्वीकार कर जब निराश लौटने लगे तो ख़्वाजा साहेब ने उनसे कहा-

"*मेरे भाई शरफुद्दीन आपके मार्गदर्शन और गुरू होने का गर्व प्रकृति ने भाई नजीबुद्दीन के भाग में लिख दिया है आपवहाँजायें।*"

सिलसिलए फ़िरदौसिया में प्रवेश

ख़्वाजा साहेब की बारगाह से हज़रत मख़दूमे जहाँ बड़े निराश होकर लौटे, बड़े भाई ने ख़्वाजा नजीबुद्दीन की शरण में चलने का परामर्श दिया तो बड़ी हताशा के साथ कहने लगे, जो दिल्ली का क़ुतुब और सबसे बड़ा संत था उसने तो पान देकर लौटा दिया। अब दूसरों के पास क्या जाऊँ। लेकिन बड़े भाई के बार-बार कहने पर आप हज़रत ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी के शरण में चल पड़े। मार्ग में कुछ पान पगड़ी में रख लिये और कुछ हाथ में लेकर खाते हुए आगे बढ़े यहाँ तक कि ख़्वाजा नजीबुद्दीन के द्वार तक जा पहुँचे। अभी ठीक से समीप भी नहीं पहुँचे थे कि दूर से ही ख़्वाजा नजीबुद्दीन की एक झलक देखी तो शरीर काँप उठा और एक अपरिचित भाव से विभोर हो उठे, हज़रत मख़दूमे जहाँ को लगा कि ऐसा किसी भी संत का सामना करने पर नहीं हुआ था, तो आश्चर्य-चकित रह गये उसी दशा में जब समीप पहुँचे तो हज़रत ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी ने आप को सम्बोधित किया और कहा-

"मुँह मेंपान,पगड़ीमेंपानऔरहाथमेंभीपानऔरउस
परबोलीयह किमैंभीसंतहूँ"

आप ने तुरंत पान निकाल फेंका, आश्चर्य-चकित, भाव विभोर और निस्तब्ध हो बैठे, कुछ ही क्षणों में दशा सुधरी तो ख़्वाजा नजीबुद्दीन से बड़े आदर श्रद्धा और भाव के साथ अपने मार्गदर्शन में स्वीकार करने की प्रार्थना की तो हज़रत ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी ने आपको मुरीद किया और अपने आध्यात्मिक उत्तराधिकार और दूसरों के मार्गदर्शन का लिखित आदेश (*ख़िलाफ़तनामा*) यह कहते हुए सौंपा-

"12वर्षपूर्वसेयहतुम्हारेलिएलिखकररखाहुआहै"

आपका आश्चर्य और बढ़ा फिर बड़ी श्रद्धा के साथ घबरा कर विनती करने लगे कि-

"अभीतकनतोआपकीसेवाकाहीकोईअवसरप्राप्त
हुआ है और न अभी आप से संतजीवन की दीक्षा ही ली
है, जिस अभूतपूर्व कार्य का आदेश हो रहा है उसे मैं कैसे
पूराकरसकूँगा"

पीरो मुर्शिद ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी ने यह कहते हुए सान्तवना दी कि:-

"यहआज्ञापत्र(इजाज़तनामा)हज़रतरिसालतपनाह
सल्लल्लाहोअलैहेंवसल्लमकेआदेशसेलिखागयाहै,पैगम्बर
की अमर ज्योति से स्वंय तुम्हारी दीक्षा होगी। मेरे गुरूओं
की आध्यात्मिक शक्ति प्राय: हर घड़ी अपने कार्य में लगी
हुई हैं और अपने कर्त्तव्यों से भलीभाँति परिचित है, तुम
कोदीक्षाकीक्याचिन्ता?"

फिर संत जीवन से सम्बन्धित कुछ लिखित निर्देश अपनी पवित्र पोशाक के साथ सौंप दिये और कहा-

"जाओ,मार्गमेंअगरकुछसुनोतोकदापिवापिसन
होना"

सिलसिलए फ़िरदौसिया

सूफ़ी संतों में जो महान व्यक्तित्व और उत्कृष्ट उपलब्धियों के स्वामी हुए हैं, उनके मुरीदों और जुड़ने वालों ने स्वंय को उनके नाम या

जन्मस्थान से जोड़ा और उनका मार्ग भी उसी सम्बन्ध से प्रसिद्ध हुआ उदाहारण स्वरूप- शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी का सिलसिला क़ादरिया कहलाया और उससे जुड़ने वाले क़ादरी कहलाये। शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी का सिलसिला सुहरवर्दीया कहलाया और इस सिलसिले में सम्मिलित होने वाले सुहरवर्दी कहलाये, ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़शबन्द का सिलसिला नक़शबन्दिया कहलाया और इस सिलसिले वाले नक़शबन्दी कहलाते हैं।

सिलसिलए चिश्तिया की ही भाँति सिलसिलए फ़िरदौसिया में भी सबसे पहले फ़िरदौसी कौन कहलाये इसपर मतभेद है। कुछ ने ख़्वाजा नजीबुद्दीन कुबरा के सम्बन्ध में लिखा है कि उनके शैख़ (*अध्यात्मिक गुरू*) हज़रत अबू नजीब सूहरवर्दी ने उन्हें मशाएख़ फ़िरदौस में गिना इसीलिए उनके मुरीदीन ने स्वंय को फ़िरदौसी लिखा परन्तु कुछ का विचार है कि हज़रत ख़्वाजा रुकनुद्दीन फ़िरदौसी सर्वप्रथम फ़िरदौसी प्रसिद्ध हुए।

सिलसिलए फ़िरदौसिया भी सिलसिलए सुहरवर्दीया की ही भाँति हज़रत शैख़ अबू नजीब सुहरवर्दी (*नि:562हि०*) के शिष्यों से प्रगारित हुआ। हज़रत अबू नजीब सुहरवर्दी के दो ख़लीफ़ा अति महत्वपूर्ण सूफ़ी संत गुजरे हैं। पहले हज़रत शैख़ अलश्यूख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (*नि:632 हि०*), जिन से सिलसिला सुहरवर्दीया प्रारंभ हुआ और दूसरे हज़रत शैख़ुल इस्लाम नजमुद्दीन कुबरा वली तराश (*नि:610हि०*) जिन का सिलसिला कुबरवीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ, इसी कुबरवीया सिलसिले की एक शाखा फ़िरदौसीया के नाम से विख्यात हुई सिलसिलए फ़िरदौसिया की संगतावली (*शजरा*) इस प्रकार पैगम्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जा मिलती है।

1. **हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम**
2. **हज़रत अली बिन अबी तालीब**
3. **हज़रत इमाम हुसैन**
4. **हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन**
5. **हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र**
6. **हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़**

7. हज़रत इमाम मूसा काज़िम
8. हज़रत इमाम अली रज़ा
9. हज़रत ख़्वाजा मारूफ़ करख़ी
10. हज़रत ख़्वाजा सिर्री सक़ती
11. हज़रत ख़वाजा जुनैद बग़दादी
12. हज़रत ख़्वाजा मिमशाद उल्व दीनौरी
13. हज़रत ख़्वाजा अहमद सेयाह दीनौरी
14. हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अलमारूफ़ ब अमवीया
15. हज़रत ख़्वाजा वजीहुद्दीन अबूहफ़्स
16. हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउद्दीन अबूनजीब सुहरवर्दी
17. हज़रत ख़्वाजा नजमुद्दीन कुबरा वली तराश फ़िरदौसी
18. हज़रत ख़्वाजा सैफुद्दीन बाख़रजी
19. हज़रत ख़्वाजा बदरुद्दीन समरकन्दी
20. हज़रत ख़्वाजा रुकुनुद्दीन फ़िरदौसी
21. हज़रत ख़्वाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी
22. हज़रत मख़दूम शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी फ़िरदौसी।

इस प्रकार पैगम्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा से हज़रत मख़दूमे जहाँ तक 21 पीढ़ियाँ गुजरीं और स्वंय मख़दूमे जहाँ 22 वीं पीढ़ी में थे।

इस फ़िरदौसी सिलसिले के सूफ़ी संतों में सर्वप्रथम भारत आनेवाले हज़रत बदरुद्दीन समरकन्दी हैं। उनका मज़ार शरीफ़ दिल्ली में फ़िरोज़ शाह कोटला के पीछे संगोला नामक स्थान में स्थित है। उनके शिष्य हज़रत रुकुनुद्दीन फ़िरदौसी की दरगाह कीलोखरी में गुरूद्वारा और डी.डी.ए. फ़्लैटों के मध्य है। हज़रत रुकुनुद्दीन फ़िरदौसी के सौतेले भाई और शिष्य हज़रत नजीबुद्दीन फ़िरदौसी की दरगाह दिल्ली के महरौली में प्रसिद्ध है।

बिहिया तथा राजगीर में तप और साधना

अपने पीरो मुर्शिद शैख़ नजीबुद्दीन फ़िरदौसी के आदेशानुसार मख़दूमे जहाँ अपने बड़े भाई के साथ दिल्ली से वापस हुए तो मन असाधारण रूप से व्याकुल था, हृदय में दुख और पीड़ा इस प्रकार समाई हुई थी कि दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती थी दिल्ली से मातृभूमि की ओर अभी दो पड़ाव

ही गए थे कि पीरोमुर्शिद शैख़ नजीबुद्दीन के स्वर्गवास का समाचार सुना लेकिन निर्देशानुसार आगे बढ़ते गए। चलते-चलते बिहिया के निकट पहुँचे तो घना वन सामने था। उसी समय एक मोर की पीड़ा भरी आवाज़ सुन कर आपकी पीड़ा और ईश वियोग चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया और इस से पहले कि साथ वाले कुछ समझें आप एकाएक जंगल में दौड़ते चले गए और आँखों से ओझल हो गए। बड़े भाई और दूसरे साथी आपको खोज कर थक गए लेकिन आप का पता न चल सका अन्ततः वे पवित्र वस्तुएं और इजाज़त नामा जो शैख़ नजीबुद्दीन से मख़दूमे जहाँ को प्राप्त हुआ था उसे सम्भाल कर मनेर वापस लौट आये और माताश्री की सेवा में सारी व्यथा सुनाई माताश्री ने संयम बरता और अपने प्रिय पुत्र को अल्लाह पाक की सुरक्षा में सौंपा।

मनाक़िबुल असफ़िया नामक पुस्तक के अनुसार बिहिया के जंगल में आपने 12 वर्ष इस प्रकार गुज़ारे के न कोई आपको पहचानता था और न ही आपको किसी की चिन्ता और चेतना थी।

एक बार उनको किसी व्यक्ति ने घने जंगल में देखा कि एक वृक्ष पर हाथ रखे इस प्रकार तल्लीन खड़े हैं कि चीटियाँ मूँह में आती और जाती हैं और उन को अपनी इस दशा की कोई ख़बर नहीं।

शाहजहाँ काल के नामी सूफ़ी संत मौलाना अज़ीज़ुल्लाह हुसामुद्दीन बनारसी अपनी हस्तलिखित पुस्तक गौहरिस्तान में लिखते हैं कि अपने तप काल में हज़रत मख़दूमे जहाँ का 12 वर्ष ऐसा गुजरा कि कभी आप को पवित्रता प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

जंगल में तप और साधना में व्यतीत हुए वर्षों में कश्मीर के हवाले से जगप्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत मीर सैयद अली हमदानी (*नि:786 हि०*) भी भारत दर्शन और सूफ़ी संतों से मिलने की कामना से जब इधर से गुजरे तो मख़दूमे जहाँ की सेवा में भी 6 महीने व्यतीत किये। इन 6 महीनों में वे मख़दूमे जहाँ को आवश्यक मानवीय और प्राकृतिक आवश्यकताओं से सम्पूर्णतः निस्पृह पाकर आश्चर्य चकित रह गये और उनकी श्रद्धा में डूब गये। फिर तो ख़ूब लाभान्वित हुए और ख़िलाफ़त भी प्राप्त की।

इसी बिहिया के जंगल में एक दिन मख़दूमे जहाँ के सामने से चुल्हाई

अपनी बाछी चराते हुए गुज़रे, हज़रत मख़दूमे जहाँ चुल्हाई के पास गए और कहा कि मुझे थोड़ा दूध अपनी गाय से दूह कर दो, चुल्हाई कहने लगा कि अभी ये बछिया है, इसको दुध नहीं होता। मख़दूम जहाँ न माने बार-बार एक ही उत्तर देते-देते चुल्हाई भी आक्रोश में आ गये और केवल इसलिए बछिया को दूहने बैठ गये की कदाचित जो बात कहने से समझ में नहीं आ रही है, वह कर के दिखा देने से समझ में आ जाये। लेकिन हुआ इसके विपरीत बछिया ने इतना दूध दिया कि बर्तन भर गया, फिर क्या था चुल्हाई चरणों में गिर पड़े और तन मन धन सब आप पर वार दिया और आप की संगत में हो लिये। आज भी आपका मज़ार हज़रत मख़दूमे जहाँ के मज़ार से समीप ही है।

बिहिया में अब जंगल तो न रहा परन्तु मख़दूमे जहाँ की एक तपस्थली अब तक विद्यमान है और हर धर्म और विश्वास के लोग बड़ी आस्था और श्रद्धा के साथ इस पावन स्थली पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने आते हैं। कहते हैं कि मख़दूमे जहाँ इस स्थान पर तल्लीन थे कि जगदीशपूर का जमींदार वहाँ से गुज़रा पहले तो उसने आपको मृत समझा परन्तु जब समीप जा कर देखा तो उसे आपके जीवित होने का आभास हुआ। वह आपको उठा कर अपने घर ले गया। बड़ी श्रद्धा से आपकी सेवा की। उपयुक्त आहार दिया और शरीर में शक्ति और गर्मी के संचार के लिए तेलों की मालिश की। धीरे-धीरे आप सामान्य जीवन में लौटे। फिर ठहरना अप्रिय लगने लगा। बार-बार निकल जाना चाहते, जमींदार ने जब देखा आप किसी प्रकार भी रुकने को तैयार नहीं हैं तो पहुँचाने साथ चला। मख़दूमे जहाँ वापस करना चाहते तो वापिस न होता यहाँ तक कि सरोध ग्राम तक साथ चला आया लेकिन वहाँ से मख़दूमे जहाँ ने उसे किसी तरह समझा कर लौटा दिया और हज़रत मख़दूमे जहाँ ने फिर जंगलों में स्वंय को गुम कर दिया। हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा के फलस्वरूप जहाँ तक साथ छोड़ने आया था, वहाँ तक उस की जमींदारी की सीमा पहुँच गयी। जगदीशपूर और डुमराँव के बाबूसाहब लोग इसी परिवार के थे।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की माताश्री, जो अपने प्रिय पुत्र के बिछुड़ने पर संयम बरते हुए थीं, एक अंधेरी रात जबकि मूसलाधार वर्षा हो रही थी,

आप को याद करके व्याकुल हो उठीं और रोने लगीं। अचानक देखा कि घर के आंगन में पड़े पत्थर पर मख़दूमे जहाँ खड़े हैं। ममता वश बोल उठीं, बेटा इस वर्षा में आंगन में क्यों खड़े हो, भीतर आ जाओ, हज़रत मख़दूमे जहाँ ने नम्रता से कहा- माताश्री आप स्वंय आंगन में पधारें और देख लें कि मैं इस वर्षा में किस प्रकार खड़ा हूँ। माताश्री जब आंगन में आईं तो देखा कि जिस स्थान पर मख़दूमे जहाँ खड़े हैं वहाँ न कोई वर्षा है और न ही उनके कपड़े ही गीले हुए हैं। फिर मख़दूम ने कहा- माताश्री मुझको मेरा पालनहार इस तरह रखे हुए है फिर आप मेरे लिए क्यों चिंतित रहती हैं। मुझ को अल्लाह को सौंप दीजिए और मुझसे प्रसन्न रहिये। इसके बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ कुछ दिन घर पर ठहरे और फिर लापता हो गये।

बिहिया के जंगल में खो जाने के 12 वर्षों के उपरांत एक व्यक्ति ने आपको राजगीर के जंगल में देखा। फिर राजगीर के पहाड़ी जंगलों में भी वर्षों बीत गये, परन्तु किसी से आप की भेंट न हुई और इस काल में आप की व्यस्तता वास्तव में अल्लाह पाक के साथ ऐसी घनिष्ठता है, जिसका रहस्य अल्लाह पाक ही सर्वस्व जानता है।

इस अवधि में आपको यह अभूतपूर्व सौभाग्य प्राप्त हुआ कि आपकी विशेष शिक्षा दीक्षा बिना किसी माध्यम के सीधे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलेहे वसल्लम की पवित्र आत्मा से हुई।

बिहिया और राजगीर के इलाके में आप के तप, साधना और व्यस्तता की कुल अवधि का अनुमान 30 वर्ष लगाया गया है इन तीस वर्षों में विभिन्न प्रकार के अनुभव, दर्शन और स्तरों एवं श्रेणियों से आप गुज़रे। एक बार मख़दूमे जहाँ ने फ़रमाया-

" मैंनेऐसातपऔरसाधनाकिहैकेअगरपहाड़करता
तोपानीहोजातापरन्तुयहशरफुद्दीनकुछनहोसका।"

सिद्ध की पहचान

राजगीर के पहाड़ों और वहाँ के प्राकृतिक वातावरण ने हमेशा से ही तप और साधना के लिए उपयुक्त स्थान के रूप में उसे प्रसिद्धी प्रदान की है, हर धर्म और विश्वास के ऋषि-मुनि, तीर्थंकर, भिक्षु और सूफ़ी संतों

के यहाँ तप और साधना में कुछ समय बिताने के प्रमाण मिलते हैं। हज़रत मख़दूमे जहाँ जिस समय वहाँ व्यस्त थे उस समय एक योगी भी राजगीर के पहाड़ों में किसी पारंगत व्यक्तित्व की खोज में व्यस्त था, कि जिससे अपने अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर पूछ सके। जब उसे मख़दूमे जहाँ के बारे में किसी ने बताया तो वह आप की खोज में निकला जब दर्शन प्राप्त हुए तो आप से प्रश्न किया कि सिद्ध पुरूष की पहचान क्या है? हज़रत मख़दूमे जहाँ ने कहा कि सिद्ध पुरूष की पहचान यह है कि अगर वह इस जंगल को कहे कि सोना हो जा तो सोना हो जाये। आपका यह कहना था कि सम्पूर्ण जंगल सोना हो गया फिर हज़रत मख़दूम ने जंगल को सम्बोधित कर तुरंत कहा कि तुम अपनी प्रकृति पर रहो मैं तो एक बात कह रहा था। सुनते ही जंगल पूर्ववत: हो गया

राजगीर में वह स्थान जहाँ मख़दूमे जहाँ ईश जाप में तल्लीन रहा करते थे और जहाँ पर ढेर सारे भेद आप पर खुले थे आज भी सुरक्षित है और मख़दूम कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है। हल्के गर्म पानी का झरना और उससे कुछ सीढ़ीयाँ चढ़कर ऊपर आप के इबादत की जगह और उससे कुछ सीढ़ीयाँ और ऊपर जाने पर वह पवित्र स्थान जहाँ हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से आपकी भेंट हुई थी आज भी उसी तरह पवित्र और पावन है और संसार की मोह-माया से मुँह मोड़कर सर्वशक्तिमान पालनहार की ओर लोगों का ध्यान खींचती रहती है।

बिहार शरीफ़ आगमन

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के मुँह हज़रत मख़दूमे जहाँ की प्रशंसा और प्रतिष्ठा का समाचार ढका छिपा न था विशेष कर उनके शिष्यों में उसकी चर्चा रहती थी, बिहार शरीफ़ में भी ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्यों की अच्छी संख्या थी, जब हज़रत मख़दूमे जहाँ के राजगीर के वनों में दिखने का समाचार मिला तो ख़्वाजा साहेब के शिष्यों ने विशेष रूप से राजगीर के पहाड़ों में आप की खोज बीन प्रारंभ की। हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के एक मुरीद ने जिन्हें ख़िलाफ़त का भी सौभाग्य प्राप्त था और जिनका नाम भी मौलाना निज़ामुद्दीन मौला था, बड़े प्रयास के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ को राजगीर के वन में खोज ही

लिया और बराबर सेवा में जाने लगे, फिर उन्हीं के निवेदन और वन में मिलने के लिए आनेवालों की कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए हज़रत मख़दूमे जहाँ शुक्रवार के शुक्रवार जुमा की नमाज़ में बिहार शरीफ़ आने के लिए सहमत हो गए। हज़रत मख़दूमे जहाँ बिहार शरीफ़ की तत्कालीन जामा मस्जिद में जुमा की नमाज़ पढ़ने के लिए पधारते तो कुछ ही देर ठहरते और सत्संग तथा प्रवचन के बाद फिर राजगीर लौट जाते।

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का निज़ामी निर्माण

जुमा की नमाज़ के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के सत्संग में बैठने वालों को इस बात की चिन्ता हुई कि मख़दूमे जहाँ के दुलर्भ व महान व्यक्तित्व से अल्प समय और अनुपयुक्त स्थान के कारण संतुष्टि नहीं हो पा रही है तो जिस जगह आज तक ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का भवन है उसी स्थान पर हज़रत निज़ामुद्दीन मौला ने एक सामान्य सा खपड़पोश ढाँचा खड़ा किया और उसी घास-फूस से ढकी कच्ची ज़मीन पर हज़रत मख़दूमे जहाँ के चरणों में जुमा की नमाज़ के बाद सत्संग सजने लगा। हज़रत मख़दूमे जहाँ कभी-कभी जुमा की नमाज़ के बाद यहाँ एक दो दिन तक रुक जाते और फिर पहाड़ियों की ओर गुम हो जाते।

कुछ समय इसी तरह बीता फिर उन्हीं निजामुद्दीन मौला ने दिन-प्रतिदिन श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या और उनकी कठिनाईयों को ध्यान में रखकर अपनी पवित्र जमा पूँजी से उसी सामान्य ढाँचे को एक सामान्य भवन का रूप दे दिया। ऐसा अनुमान है कि यह निमार्ण **721** हि० से **724** हि० के मध्य किसी समय हुआ होगा। भवन तैयार हुआ तो भोज का भी आयोजन किया और इस अवसर पर सामान्य जनता और गण मान्य व्यक्तियों सभी को आमंत्रित किया। फिर हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के बिहार शरीफ़ वासी शिष्यों ने बड़े आग्रह और अनुरोध के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ को इस भवन में निवास कर लोगों की दीक्षा और मार्गदर्शन कि लिए राज़ी कराया। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने न चाहते हुए भी सब की इच्छाओं का आदर किया परन्तु जब तक आप की शरीरिक क्षमता आज्ञा देती रही आप कभी लम्बी और कभी संक्षिप्त यात्रा

हेतु निकलते रहे। इसी इमारत में आपके उपदेशों को सुन सुन कर आपके प्रिय मुरीद ज़ैन बदर अरबी ने प्रसिद्ध उपदेशावली **"मादेनुल मआनी"** संग्रहित की। यह उपदेशावली आप के उपदेशों का पहला संग्रह है, जो बहुमूल्य तथ्यों और अनुपम विचारों पर आधारित है।

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का राजकीय निमार्ण

आठवीं शताब्दी हिजरी की चौथी दहाई में हज़रत मख़दूमे जहाँ की प्रसिद्धी, महानता और लोकप्रियता तुगलक़ साम्राज्य की सीमाओं को लाँघ गई। सामान्य जनता से लेकर सम्राट तक आप की ओर आकर्षित हुए यहाँ तक की सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक़ भी आप की भूरी-भूरी प्रशंसा सुनते-सुनते आपकी सेवा के लिए आतुर हुआ और बिहार में अपने सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी मजदुल मुल्क मुक़तए बिहार के पास बुलग़ारिया से आयातित नमाज़ और इबादत के लिए बिछाने वाला मुसल्ला इस आदेश के साथ भेजा कि इस बुल्ग़ारी मुसल्ले को मख़दूमे जहाँ की सेवा में मेरी ओर से भेंट करो और उनके लिए एक ख़ानक़ाह (*आश्रम*) का निमार्ण कराओ और उस ख़ानक़ाह के खर्चे के लिए परगना राजगीर मख़दूमे जहाँ को भेंट करो और अगर वे इसे स्वीकार न करें तो बलात् स्वीकार कराओ। यह घटना **736** हि०/**1334** ई० से **737** हि०**1335** ई० के मध्य की है।

मजदुल मुल्क मुक़तए बिहार के लिए यह बड़ी कठिन घड़ी थी। वह स्वंय पहले से ही मख़दूमे जहाँ का भक्त था और उसी के परामर्श से निज़ामुद्दीन मौला ने पवित्र जमा पूँजी से जो भवन तैयार कराया था उसमें बैठने को तो मख़दूमे जहाँ बड़े प्रयास के बाद तैयार हुए थे इसलिए सुल्तान की भेंट उनके लिए स्वीकार्य होगी इसकी आशा नहीं के बराबर थी। इसी दुविधा में हताश मजदुल मुल्क, हज़रत मख़दूमे जहाँ की शरण में आये और अपना फैसला मख़दूम साहेब पर छोड़ दिया। हज़रत मख़दूमे जहाँ की दया और करुणा ने यह उचित नहीं समझा कि आदेश का पालन न होने के कारण मजदुल मुल्क पर कोई दण्डनीय कार्यवाही हो इसीलिए स्वंय अपनी अन्तरात्मा पर राजकीय जागीर की पीड़ा और कड़वाहट को

स्वीकार कर लिया। फिर तो बड़ी तीव्रता के साथ सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ के आदेश का पालन हुआ। ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का राजकीय निमार्ण कैसा हुआ, इसका विस्तृत विवरण तो नहीं मिलता परन्तु मख़दूमे जहाँ के उपदेशावलियों में बिखरी सूचनाओं को एकत्र करने से यह आभास होता है कि उस भवन में लंगर ख़ाना, जमाअत ख़ाना, सेहने जमाअत ख़ाना इत्यादि था। इसके अतिरिक्त ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के साथ ही साथ इसके भवन से तनिक हट कर हज़रत मख़दूमे जहाँ के लिए हुजरा (*कोठरी*) और रवाक़ (*साएबान*) का भी निमार्ण हुआ।

जब ख़ानक़ाह का निमार्ण कार्य पूरा हुआ तो मजदुल मुल्क मुक़तए बिहार ने भोज का आयोजन किया सभी लंगरदारों, सूफ़ी संतों और हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्यों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। नवनिर्मित जमाअत ख़ाने के प्रांगण में मजलिसे समा (*सूफ़ी परम्परानुसारकव्वालीकीसभा*) सजी और हज़रत मख़दूमे जहाँ सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक के द्वारा भेजे बुलग़ारी मुसल्ले पर अपने हुजरे में आसीन हुए। उस विशेष अवसर की एक झलक हज़रत ज़ैन बदरे अरबी ने "**मादेनुल मआनी**" में सुरक्षित कर ली है। एक यात्री संत भी उस ऐतिहासिक आयोजन में सम्मिलित थे, कव्वाली की सभा से उठकर मख़दूमे जहाँ की सेवा में आये तो मख़दूम साहेब ने उनका अभिनन्दन यह कहते हुए किया–

" *कियेमंज़िलऔरस्थानतोआपलोगोंकाहैतत्कालीन सम्राट के आदेशों का पालन आवश्यक है, इससे बचना मुशकिल है और मलिक मज़दुल मुल्क को सुल्तान की ओर से यह आदेश है कि इसे स्वीकार कराओ और सब जो कुछ भी है उन्हीं संतों का न्योछावर है अन्यथा यह व्यक्ति इस्लाम के योग्य भी नहीं फिर मुसल्ले के योग्य क्योंकरहोसकताहै।*"

मख़दूम के मुख से यह सुन वह पर्यटक संत कहने लगे

"*मख़दूम आप को किसी ने भी ख़ानक़ाह और मुसल्ले के कारण नहीं पहचाना है, आप को जो व्यक्ति भी पहचानता है सत्य के कारण पहचानता है। हमलोग यहाँ आपकी*

अन्तःशक्ति और आप की श्रद्धा के कारण आये हैं। यहाँ आपकी विभुति से इस्लाम का सुर्योदय होगा और उसकी किरणों में शक्ति आयेगी।"

मख़दूमे जहाँ न केवल इतना कह कर चुप्पी साध ली कि- "*जोसंतोंकेमुखसेनिकलताहैवहीहोताहै।*"

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का वली उल्लाही निमार्ण

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ द्वारा निर्मित ख़ानक़ाह में भवन के अतिरिक्त खुला प्रांगन और काफी फैला हुआ खासा इलाक़ा भी था, जो ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत बाद में मख़दूमे जहाँ के वंशजों में बंटने के कारण अब विशेष ख़ानक़ाह का क्षेत्र बहुत थोड़ा रह गया है। परन्तु अभी भी ख़ानक़ाह और हुजरे के अतिरिक्त पूरब में खुला मैदान मौजूद है जिसके दक्षिणी पूर्वी छोर पर जनाबहुज़ूर सैयद शाह अमीन अहमद फिरदौसी द्वारा निर्मित मस्जिद है और बीच में मुख्य द्वार है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के बाद उन के 12वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम दीवान शाह अली फ़िरदौसी ने सर्वप्रथम ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के क्षेत्र में निवास करना प्रारम्भ किया और ख़ानक़ाह को सामान्य दिनों में भी आबाद किया। इसीलिए ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का इलाक़ा आपके शुभ नाम से जुड़कर मुहल्ला शाह अली कहलाया।

उन्होंने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म की खुली जमीन पर इमारतें बनवाई और एक विशाल लंगरखाना संतों और दीन दुखियों के लिए खोला, परन्तु ख़ानक़ाह का भवन शायद तुग़लक़ निर्मित ही रहा।

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के राजकीय निर्माण के लगभग साढ़े चार सौ वर्ष बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 21 वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह वली उल्लाह फ़िरदौसी (*निः1234हि०/1818-19* ई०) ने बड़े जीवट के साथ ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का नवनिर्माण कराया। उनके द्वारा निर्मित भवन में पाँच मेहराबों पर आधारित ख़ानक़ाह के मुख्य भवन में दो कोटी बरामदे, दोंनो छोर पर कोठरियाँ, सम्मुख खुला प्रांगण और मजलिसे समा हेतु सेहन में चबूतरा था।

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का नवीनतम निर्माण!

ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के वलीउल्लाही निर्माण के लगभग 200 वर्षों बाद वर्ष 1996 ई० में हज़रत मख़दूमे जहाँ के 26 वें सज्जादानशीन हज़रत सैयद शाह मो० अमजाद फ़िरदौसी ने इसके नव निर्माण की नींव रखी और वर्ष 1997 में ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का नव निर्माण सम्पूर्ण हो गया। बड़ी लागत अथक परिश्रम, लगन और गहरी सूझबूझ से ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के भव्य निर्माण में 26 वें सज्जादानशीन के ज्येष्ठ पुत्र और वर्तमान सज्जादानशीन श्री हज़रत मौलाना सैयद शाह सैफुद्दीन फ़िरदौसी का बहुत बड़ा योग्यदान रहा। मख़दूमे जहाँ के जीवन काल में जिस प्रकार ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के एक मुरीद निज़ामुद्दीन मौला ने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का निर्माण कराया था उसी प्रकार मख़दूमे जहाँ के 25 वें सज्जादानशीन हज़रत सैयद शाह मोहम्मद सज्जाद फ़िरदौसी के एक प्रिय मुरीद श्री शमसुज़्ज़ुहा फ़िरदौसी साहेब वर्तमान नवनिमार्ण कराकर धन्य हो गये।

मार्ग दर्शन और जन मानस की सेवा

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने इसी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में बैठकर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के स्वर्णिम जीवन का ऐसा जीता जागता उदाहारण जन मानस के सामने रखा कि पाप, ईर्ष्या, राग द्वेश, बर्बता, निर्दयता, विषमता का अन्धकार छँटने लगा तथा पुण्य, परोपकारिता, मानवीयता, सहभागिता और ईश भक्ति का प्रकाश फैलने लगा। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अर्द्धशताब्दी से अधिक समय तक स्वंय को सामान्य जनता के प्रति समर्पित रखा। उनके साफ़ सुथरे व्यक्तित्व में एक आदर्श पुरूष के सारे लक्षण और गुण विद्यमान थे। मनाक़िबुल आसफ़िया जो मख़दूमे जहाँ के स्वर्गवास के 50 वर्षों के भीतर लिखी गई निकटतम पुस्तक है, उसके लेखक लिखते हैं कि:-

" शैख़शरफुद्दीनमहानधर्मगुरूथेउनकाजीवनजन्मसेमृत्युतक इस प्रकार सुरक्षित था, कि कोई छोटा से छोटा और निम्न से निम्न स्तर का भी पाप उन से नहीं हुआ। उन के जन्म पूर्व ही उनके माता पिता कोउनकीमहानताकीशुभसूचनामिलनेलगीथी।"

यही कारण था आप बिहार शरीफ़ की धरती पर प्रकाश-पुंज की भाँति चमके, जिसका प्रकाश इस उपमहाद्वीप की सीमाओं के पार तक अपनी किरणें बिखरने लगा। बल्ख़, बुख़ारा, चिश्त, सीसतान, समकन्द और दूरस्थ क्षेत्रों से भी सच्ची भक्ति, मनमोहक धर्म शिक्षा और चुम्बकीय व्यक्तित्व की खोज करते हुए लोगों के क़ाफ़िले बिहार शरीफ़ पहुँचने लगे और बिहार शरीफ़ मानो छदम् भक्ति के फैले असीम रेगिस्तान में आत्मिक शांति और सच्ची भक्ति का *नख़लिस्तान* (मरुस्वर्ग) बन गया। जो लोग रात दिन आप की सेवा में समर्पित थे उनका कथन है कि उस काल में आप के शिष्यों की संख्या एक लाख से पार कर गई थी उन में 40 व्यक्ति स्पष्ट: पारंगत हो चुके थे, और 300 लोग ईश भक्ति में इस प्रकार सिद्धहस्त थे, कि उनका सवर्स्व गुप्त था।

प्रात: से शाम तक हज़रत मख़दूमे जहाँ कभी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में आसीन रहते तो कभी अपने हुजरे में बैठते और समर्पित देशी और विदेशी छात्रों और सत्यान्वेषियों का जमघट लगा रहता। क़ुरआन, तफ़सीर, फ़िक़ह, उसूले फ़िक़ह, इल्मेकलाम, तसव्वुफ़ और सदाचार तथा व्यवहार के विषयों पर चर्चा होती' भ्रम दूर किये जाते, समस्या हल की जाती। पापों का प्रायशचित कराया जाता। महापुरूषों, परमात्मा को समर्पित व्यक्तियों की जीवनी सुनाई जाती। जाप और तप का मार्ग दिखाया जाता। मानवीय गुणों का पोषण होता, अमानवीयता से घृणा पैदा कराई जाती। जो लोग अपने कर्त्तव्यों के निर्वाह के कारण या दूरी के कारण दिन प्रतिदिन इस सत्संग में सम्मिलित नहीं हो पाते और हज़रत मख़दूमे जहाँ से पत्राचार के द्वारा शिक्षा और ज्ञानार्जन का निवेदन करते, उनको चिट्ठियाँ लिखी जातीं। उनकी समस्याओं के समाधान के लिए लिखी गई चिट्ठयों का उत्तर लिखवाया जाता। जो छात्र किसी पुस्तक का पाठ लेना चाहते या गहण शिक्षा का इच्छा करते, उन्हें बड़े प्रेम और तन्मयता के साथ शिक्षा दी जाती। पीड़ित और दलित व्यक्तियों की सुनवाई और कल्याण के लिए अधिकारियों और राजाओं के पास अनुशंसा पत्र लिखे जाते और सबसे समय निकाल कर हज़रत मख़दूमे जहाँ अपने सगे सम्बन्धियों, शिष्यों और चाहने वालों से मिलने के लिए बिहार शरीफ़ और उसके बाहर भी पदार्पन करते। यात्रा में भी दिनचर्या वही होती जगह-जगह आप ठहरते,

लोगों के क़रीब जाते, उनके दुख दर्द सुनते, उनके काम आते। सूफ़ी संतों के मज़ारों और मक़बरों पर जाते और वहाँ ध्यान मग्न होकर आत्मलाभ करते। किसी का शुभ समाचार सुनते तो कभी स्वंय जाकर और कभी चिट्ठी के द्वारा अपनी मनोकामना और भेंट भेजते। नवजात शिशु के जन्म पर अपनी ओर से कपड़े-जोड़े भेजते। दुख का समाचार सुनते तो इस तरह अपना शोक व्यक्त करते कि न केवल दुख दूर होता बलिक दुखदाता और दुखहरता परमात्मा से निकटता बढ़ती।

वेष भूषा, खान पान

हज़रत मख़दूमे जहाँ का जीवन अति सादा और सरल था आप अधिकतर मिर्ज़ई, कुर्ता, तहमद और चादर प्रयोग में लाते थे सिर पर सूफ़ी संतों की भाँति सामान्य पगड़ी होती, जो संदली रंग की होती है। दूसरे ध र्मगुरूओं की भाँति लम्बा चोगा या असामान्य वस्त्र आप नहीं पहनते थे।

खान पान अति सरल और मामूली था। अधिकतर सूखी रोटी, सूखे चावल या सूखी खिचड़ी खाकर कार्यक्षमता को बनाये रखते थे। दिन के समय अपनी निजि रसोई में चुल्हा जलाने की मनाही थी।

एक बार प्रिय अतीथि पधारे तो आप की माताश्री ने उनके सत्कार के लिए दिन मे चुल्हा जला कर रोटी सालन पकाना चाहा। हज़रत मख़दूमे जहाँ को इसकी सूचना नहीं थी उन्हों ने घर से धुआँ उठते देखा तो सीधे घर पहुँचे और माताश्री की सेवा में बड़ी नम्रता के साथ याचना की-

"माताश्रीआपमेराएकनिवेदनभीस्वीकारनकरसकीं"

तो माताश्री ने तुरंत चुल्हा बुझा दिया और आटा और जो कुछ खाने का सामान था, अतीथि के हवाले कर दिया कि किसी के यहाँ पकवा कर खा लें।

आप बराबर कहते थे कि-

"संतों को खाना इस प्रकार खाना चाहिए जिस प्रकार दवा खाईजातीहै।"

समकालीन सूफ़ी संतों से आपके सम्बन्ध

हज़रत मख़दूमे जहाँ के आदर्श जीवन में समकालीन सूफ़ी संतों के प्रति मधुर सम्बन्धों का अद्वितीय उदाहरण मिलता है। आपके पत्रों के संग्रह में समकालीन सूफ़ी संतों, आलिमों, बुद्धिजीवियों और धर्म से सम्बन्धित सरकारी पदों पर आसीन व्यक्तियों की सुन्दर चर्चा देखने को मिलती है। आपके काल में आपकी व्यापक दृष्टि और मधुर स्वाभाव ने बिहार शरीफ़ को एक महान सूफ़ी केन्द्र के रूप में परिवर्तित कर दिया था। देश विदेश के सूफ़ी संत कभी अपनी जिज्ञासा और श्रद्धा से और कभी मख़दूमे जहाँ के आमंत्रण पर बिहार शरीफ़ पधारते रहते थे। उनमें से बहुत सारे ऐसे व्यक्ति भी थे, जिन्होंने हज़रत मख़दूमे जहाँ की इच्छानुसार बिहार शरीफ़ या इसके आस पास अपनी ख़ानक़ाह स्थापित कर मार्गदर्शन की जिम्मेवारी स्वीकार कर ली थी।

आपके संकलित प्रवचनों में दूरस्थ प्रदेशों और विदेश से आने वाले संतों, संत पुत्रों और संत प्रेमियों की बार-बार चर्चा मिलती है। विभिन्न प्रकार के सूफ़ी संत आते और हज़रत मख़दूमे जहाँ के सत्संग में सम्मिलित होकर अपना समय प्रसन्न कर जाते या फिर मख़दूम की नगरी में हमेशा के लिए रह जाते।

शैख़ इस्हाक़ मग़रबी

आपके पूर्वज पश्चिमी इलाके के थे। पूर्वजों में से एक ईरान में आ कर बस गए थे। आपके पिता ख़्वाजा अबू इस्हाक़ मग़रबी धनी और समृद्ध व्यक्ति थे। उनकी एक वाटिका भी ईरान के हमदान नगर में थी। शैख़ इस्हाक़ मग़रबी जब नवयुवक थे उस समय उस वाटिका की देखभाल के लिए एक व्यक्ति अपने परिवार के संग वाटिका में रहता था, उसकी एक सुन्दर कन्या थी। दुर्भाग्यवश उसे गर्भ रह गया तो उस कन्या के पिता को यह भ्रम हुआ कि इस कन्या का गर्भ वाटिका के स्वामीपुत्र इस्हाक़ मग़रबी से मित्रता का परिणाम है। उसने आपके पिता से अपना अनुमान बताया तो आपके पिता ने क्रोधित होकर कहा कि आज इस्हाक़ को घर आने दो उसकी खाल खींच लूँगा।

जब किसी ने यह समाचार इस्हाक़ मग़रबी को सुनाया तो उन्होंने स्वंय ही अपना हाथ सर पर रखा और कहा कि-

" ऐमेरेशरीरकीखालतूमेरेशरीरकोछोड़दे "

क्षण भर में सारी खाल शरीर से अलग हो गयी। आपने उसे एक थाल में सजा कर पिता के पास भेज दिया और स्वंय देश छोड़ कर भारत का प्रण किया और हज़रत मख़दूमे जहाँ की ख्याति सुनकर बिहार शरीफ़ पधारे हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उनका अभिनन्दन किया और अपनी ख़ानक़ाह में उन्हें ठहराया। कुछ दिनों पशचात् उनकी इच्छानुसार वर्तमान शैख़पूरा जिले के मटोखर नामक तत्कालीन निर्जन स्थान पर ईश जाप में व्यस्त रहने की आज्ञा दे दी। हज़रत मख़दूमे जहाँ आपका बड़ा आदर करते और आपको बहुत प्रिय रखते। दोनों ओर से चिट्ठियाँ आती जाती रहतीं दुर्भाग्यवश अभी तक मख़दूमे जहाँ के नाम शैख़ इस्हाक़ मग़रबी का कोई पत्र नहीं मिल सका है परन्तु हज़रत मख़दूमे जहाँ का एक पत्र ख़्वाजा इस्हाक़ मग़रबी के नाम उनके दो सौ पत्रों के संग्रह में सम्मिलित है।

आपकी कविताओं के संग्रह की हस्तलिखित प्रतियाँ विभिन्न पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं जिनमें फ़ारसी भाषा की उच्य कोटि की कविताओं के अतिरिक्त ईश प्रेम का गुणगान है।

मख़दूम जहानियाँ जहाँगश्त सैयद जलाल बुख़ारी

मख़दूम जहानियाँ अपने काल में बड़े महान सूफ़ी संत गुज़रे हैं। उनके संसार भ्रमण के कारण उन्हें जहानियाँ जहाँ गश्त कहा जाता है। दिल्ली दरबार में उनका बड़ा आदर सत्कार होता था। सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुगलक उनका भक्त था। उन्होंने सारे संसार में घूम-घूम कर सूफ़ी संतों से भेंट की थी और आत्मलाभ किया था। हज़रत मख़दूमे जहाँ से इस प्रकार स्नेह और प्रेम रखते थे कि दिल्ली में रहते हुए बराबर बिहार की ओर मुँह रखे अपने हृदय को मलते और कहते-

" इश्क़औरमुहब्बतकीसुगंधबिहारसेआतीहै "

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों का एक संग्रह आप तक भी पहुँच गया था। हज़रत मख़दूम जहानियाँ जहाँगशत की अन्तिम आयु में किसी ने

पूछा कि श्रीमान् आज कल आप की क्या व्यस्तता है? तो वे बोले कि शैख़ शरफुद्दीन के पत्रों का अध्ययन करता रहता हूँ। फिर किसी ने पूछा कि आप ने उन पत्रों को कैसा पाया? उत्तर दिया कि-

"अभी तक मैं इन पत्रों में कुछ बातों को समझ नहीं सका हूँ"

मख़दूमे जहाँ की महान उपाधि

गन्जे अरशदी नामक पुस्तक से पता चलता है कि हज़रत मख़दूमे जहाँ को सर्वप्रथम "**मख़दूमे जहाँ**" से हज़रत सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी ने सम्बोधित किया, जिसके उत्तर में हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उन्हें मख़दूमे जहाँनियाँ फ़रमाया, उसी दिन से यह दोनों महापुरूष इसी उपाधि से प्रसिद्ध हो गए।

किसी महान सूफ़ी संत का कथन है कि "*हरकेख़िदमतकर्दऊ मख़दूमशूद*" जो सेवा करेगा उसकी सेवा की जायेगी मख़दूम का अर्थ सेव्य होता है अर्थात स्वामि मख़दूमे जहाँ- संसार के स्वामि

शैख़ इज़ काकवी और अहमद बिहारी

यह दोनो संत मख़दूमे जहाँ के बहुत निकट थे। शैख़ इज़ काकवी जो जहानाबाद जिले के काको ग्राम के रहने वाले थे उनके और हज़रत मख़दूमे जहाँ के मध्य पत्राचार भी होता था। शैख़ इज़ काकवी के प्रश्नों पर आधारित पत्रों का मख़दूमे जहाँ के द्वारा दिया गया उत्तर "**अजवबए काकवी**" के नाम से प्रसिद्ध है। यह दोनों संत ईश प्रेम में इस प्रकार संलिप्त हो गये थे कि सारी मर्यादिओं से मुक्त हो गए थे और ईश प्रेम में गोपनियता की सीमाओं को भी पार कर जाते थे। भ्रमण करते हुए यह दोनों संत दिल्ली जा पहुँचे। दिल्ली के निवासी उनकी प्रेमाग्नि से ज्वरित भाषा को नहीं समझ सके। तत्कालीन सम्राट सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ तक शिकायत पहुँची। धर्मज्ञानियों, मुल्लाओं से सम्राट ने उनके बारे में परामर्श किया और लिखित उत्तर माँगा। सभों ने इन दोनों संतों के लिए प्राणदण्ड को उचित बताया अन्ततः इन दोनों संत को प्राण्दण्ड दे दिया गया।

इन दोनों संतो की हत्या का समाचार जब हज़रत मख़दूमे जहाँ को

मिला तो वे भाव विभोर होकर बोले-

" *जिसनगरमेंऐसेव्यक्तियोंकारक्तपातहुआहोयदि वहआबादरहजायेतोआश्चर्यहोगा*"

हज़रत मख़दूमे जहाँ की इस कटू आलोचना का समाचार सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ तक भी जा पहुँचा। बादशाह ने मुल्लाओं को एकत्रित कर सम्बोधित किया कि मैं ने तुम लोगों के धर्म निर्णय के अनुसार उन संतों की हत्या कराई। फिर शैख़ शरफुद्दीन ऐसी आलोचना क्यों कर रहे हैं। सभी उपस्थित मुल्लाओं ने एकमुख होकर कहा कि सम्राट उन को बुलायें, जब वे पधारेंगे तब ही पता चलेगा कि उन्होंने यह बात क्यों कही?

सुल्तान उन लोगों के बहकावे में आ गया और हज़रत मख़दूमे जहाँ को दिल्ली आने का आदेश भेज दिया। जब इस आदेश के पारित हो का समाचार हज़रत मख़दूमे जहाँ को मिला तो आप ने फ़रमाया-

" *सैयदजलालुद्दीन (मख़दूमजहानियाँ) केकारणयह आदेश निरस्त हो चुका है और इसके पीछे दुसरा आदेश आरहाहै।*"

हुआ भी ठीक वैसा ही अभी दिल्ली बुलाने का आदेश भेजा ही था कि हज़रत सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी का एक सेवक सुल्तान की ा में आया और अपने स्वामी की ओर से भेजी गई भेंट स्वरूप वस्तुएं सुल्तान के समक्ष रखीं तो सुल्तान ने उससे प्रश्न किया कि पता नहीं क्या कारण है कि मख़दूम जहानियाँ ने इस बार मुझे बहुत दिनों बाद याद किया है। सेवक ने आदरपूर्वक कहा कि आजकल शैख़ शरफुद्दीन के पत्रों का एक संग्रह मेरे स्वामी के पास आ गया है उसी के अध्ययन के लिए वे एकांतवास में हैं। इसी कारण किसी को मिलने का अवसर नहीं मिलता और आप तक इन पवित्र भेंटों के पहुँचने में विलम्ब का कारण भी यही है। सेवक से यह बात सुनकर सुल्तान को हज़रत मख़दूमे जहाँ की महानता का भली भाँति ज्ञान हुआ और अपने आदेश पर पछतावा हुआ। तुरंत दूसरा आदेश पारित किया कि यदि मेरा पहला आदेश बिहार पहुँच गया हो तो उसे रोक लिया जाये। ऐसे महापुरूष को अपने स्थान से हटाना अच्छा नहीं है।

शैख़ नसीरूद्दीन महमूद चिराग़ देहलवी

शैख़ नसीरूद्दीन महमूद, हज़रत ख़्वाजा निजामुद्दीन औलिया के बाद उनके सज्जादानशीन और दिल्ली के सर्वोच्च सूफ़ी संतों में से थे। वे भी हज़रत मख़्दूमे जहाँ की भूरी-भूरी प्रशंसा करते रहते थे। हज़रत मख़्दूमे जहाँ के पत्रों के संग्रह की एक प्रति जब आप तक पहुँची तो आप ने इसके बड़े चाव और आदर के साथ अध्ययन किया और इन पत्रों की बड़ी सराहना की।

सैयद अहमद चिरमपोश सुहरवर्दी

हज़रत सैयद अहमद चिमरपोश (*नि:776हि०/1374ई०*) हज़रत मख़्दूमे जहाँ के सगे मौसेरे भाई थे और बिहार शरीफ़ में ही लोगों के मार्गदर्शन में व्यस्त रहते थे। हज़रत मख़्दूमे जहाँ और हज़रत मख़्दूम चिरमपोश के मध्य कार्य शैली की भिन्नता के बावजूद बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था और दोनों एक दूसरे का बड़ा आदर करते थे।

एक बार एक व्यक्ति कुछ मक्खियाँ मार कर हज़रत मख़्दूमे जहाँ की सेवा में आया और कहने लगा कि पारंगत संत (*शैख़*) के बारे में यह प्रसिद्ध है कि वह मारता और जीवन दान देता है, तो लीजिए आदेश दीजिए कि यह मक्खियाँ जीवित हो जायें। हज़रत मख़्दूम ने बड़ी नम्रता के साथ उत्तर दिया-

"*भाई,मैंतोस्वयंतुच्छहूँ,दूसरोंकोक्याजीवितकरूँगा।*"

वह व्यक्ति मख़्दूमे जहाँ के यहाँ से लौटकर मख़्दूम चिरमपोश की सेवा में वही प्रश्न लेकर जा पहुँचा।

मख़्दूम चिरमपोश ने उत्तर दिया कि यह शक्ति तो अल्लाह पाक ने शैख़ शरफ़ुद्दीन को प्रदान की है, मुझ से क्या हो सकेगा? फिर मक्खियों को कहा कि उड़ जाओ। मक्खियाँ उड़ने लगीं उस व्यक्ति ने कहा-हाँ जीवित होना तो देखा तनिक मरना भी दिखाइए; यह सुन कर मख़्दूम चिरमपोश ने कहा- "जाओ रास्ते में देखोगे।"

वह व्यक्ति मख़्दूम चिरमपोश के यहाँ से लौटा तो मार्ग में एक बैल ने उस को ऐसा मारा कि वह मर गया। हज़रत मख़्दूमे जहाँ को इसकी

सूचना मिली तो वे उसके जनाज़े की नमाज़ में सम्मिलित होने के लिए पधारे। जब मख़दूमे चिरमपोश को मख़दूमे जहाँ के पधारने की सूचना मिली तो वे भी उसकी नमाज़े जनाज़ा में सम्मिलित हुए और दोनों के समक्ष वह दफ़न किया गया।

हज़रत अमीरे कबीर मीर सैयद अली हमदानी

कशमीर के सर्वोच्च प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत मीर सैयद अली हमदानी (*नि:786हि०/1384ई०*) ने भी चौथाइ संसार का भ्रमण करते हुए हज़रत मख़दूम जहाँ की सेवा में, जबकि वे घने जंगल और निर्जन स्थलों पर तप और साधना में लीन थे, कुछ समय बिताने का सौभाग्य प्राप्त किया था। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उनकी कुछ आध्यात्मिक गुत्थियाँ बड़ी सुगमता के साथ जीवंत उदाहारण के द्वारा सुलझा दी थीं और वे हज़रत मख़दूमे जहाँ से लाभान्वित होकर लौटे थे।

आपके पौत्र अर्थात हज़रत मुहम्मद हमदानी के पुत्र सैयद अलाउद्दीन हमदानी भी सपरिवार बिहार शरीफ़ पधारे थे, उनका मज़ार लोहगानी ग्राम में बिहार शरीफ़ के समीप मौजूद है। सैयद अलाउद्दीन हमदानी के पुत्र सैयद शमसुद्दीन सयाह पोश हमदानी का मज़ार बड़ी दरगाह के पास स्वर्गीय हाफ़िज़ ताजुद्दीन के मकान में स्थित है।

इन हमदानी संतों की सन्तान बिहार के मुहल्ला चुहड़ी चक में आबाद थी और उसकी एक शाखा इस्लामपूर प्रखण्ड में भी जा बसी थी। तेरहवीं शताब्दी हिजरी के प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत सैयद शाह विलायत अली मुनएमी इस्लामपूरी इसी वंश से थे।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के देशी और विदेशी समकालीन सूफ़ी संतों में कुछ प्रसिद्ध व्यक्तित्व निम्नलिखित हैं:-

हज़रत अलाउल हक़ पण्डवी चिश्ती (*पण्डवा,मालदा,प०बंगाल*), हज़रत राजु क़त्ताल (*उचा,मुल्तान,पाकिस्तान*), शैख़ अलाउद्दीन सम्मानी (*समनान,ईरान*), इमाम याफ़ई (*मक्का,सऊदीअरब*), हज़रत सैयद तय्यमुल्लाह सफ़ीद बाज़ चिश्ती (*बीजवन,बिहारशरीफ़*), हज़रत बदरूद्दीन बदरे आलम ज़ाहेदी (*छोटीदरगाह,बिहारशरीफ़*) इत्यादि।

हज़रत मख़दूमे जहाँ करतार रूप में

एक बार एक बड़े सुन्दर और आकर्षक मुखमण्डल वाला योगी बिहार शरीफ़ आया। मख़दूमे जहाँ के कुछ शिष्यों ने उससे भेंट की तो उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक योगी भी इस प्रकार आकर्षक मुख मण्डल वाला हो सकता है? वह चतुर योगी उनकी मन:स्थिति भाँप गया और बोला ऐसी बात दिल में नहीं लानी चाहिए फिर उसने प्रश्न किया क्या तुम लोगों का कोई गुरू है? हज़रत मख़दूमे जहाँ के शिष्यों ने उत्तर दिया कि हाँ हमारे गुरू हैं, और हज़रत मख़दूमे जहाँ की उसके आगे कुछ प्रशंसा की तो उसने उत्सुकता वश कहा कि क्या वह मेरे पास आ सकते हैं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के शिष्यों ने कहा कि वे महान् हैं, किसी के पास नहीं जाते बल्कि लोग उनकी सेवा में जाते हैं।

यह सुनकर वह योगी बोला तो मुझे उनकी सेवा में ले चलो? वे लोग उस को साथ लेकर मख़दूमे जहाँ की सेवा में चले।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में पहुँचते ही जैसे ही दूर से योगी की दृष्टि मख़दूमे जहाँ पर पड़ी वह उल्टे पैर वापस हुआ। लोगों ने लौटने का कारण पूछा तो योगी बोला के-

" *वेकरताररूपमेंहै,मैंउनकेसमक्षजानेकीक्षमतानहीं रखता।यदिजाऊँगातोजलजाऊँगा* "

मख़दूमे जहाँ के शिष्यों ने जब योगी का समाचार मख़दूमे जहाँ को दिया तो वे मुस्कुराये और कहा अच्छा जाओ उससे कहो कि अब चलो, अब तुम देख सकोगे।

वह योगी फिर दूसरी बार आया। देखा तो कहने लगा, हाँ अब समीप जा सकता हूँ। आकर सेवा में आदर पूर्वक बैठ गया। कुछ अधिक समय न बैठा होगा कि उसने इस्लाम धर्म को स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उसकी इच्छा पूरी करते हुए अपने शिष्यों में स्वीकार कर लिया। उस योगी को हज़रत मख़दूमे जहाँ ने केवल तीन दिन अपनी सेवा में रखा फिर विदा कर दिया और एक बार फिर वह भ्रमण पर निकल गया।

किसी ने हज़रत मख़दूमे जहाँ से प्रश्न किया कि उस योगी को इतने कम समय अपने पास क्यों रखा? तो हज़रत ने फ़रमाया वह अपना काम लगभग पूर्ण करके पहुँचा था। केवल ईश्वर और उसके मध्य एक पर्दा मात्र रह गया था जिसे मैं ने अपनी सेवा में रख कर उठा दिया। वह निपुण हो गया तो उसे विदा कर दिया।

मख़दूमे जहाँ की नज़र से लोहा चूर-चूर

एक बार स्वतंत्र प्रवृति का संत (क़लन्दर) इस प्रकार मख़दूमे जहाँ की सेवा में पहुँचा कि उसका शरीर लोहे की जंज़ीरों और कवच से ढका हुआ था। उपस्थित लोगों ने आश्चर्य से पूछा कि तुम लोहा अपने शरीर से क्यों नहीं उतारते हो।

उसने उत्तर दिया- "कोई है, जो इसे उतार दे"

हज़रत मख़दूमे जहाँ ध्यान मग्न हुए और स्वत: उसके शरीर से सारा लोहा धरती पर गिर कर चूर हो बिखर गया।

मख़दूमे जहाँ की अलौकिक शक्ति

हज़रत मख़दूमे जहाँ एक दिन भावविभोर होकर चुप-चाप राजगीर की ओर चल पड़े। एक व्यक्ति आप की इच्छा भाँप कर उनके पीछे चल पड़ा। वह व्यक्ति मख़दूमे जहाँ के पीछे चलता हुआ जंगल के समीप पहुँचा तो देखा कि दो बाघ मख़दूम के समक्ष आये और मख़दूम के चरणों में अपना माथा रख दिया। मख़दूमे जहाँ ने उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया और पहाड़ के ऊपर चढ़ते चले गये। बाघ के भय से वह व्यक्ति उनका पीछा नहीं कर सका। कुछ देर बाद हिम्मत जुटा कर वह भी आगे बढ़ा जब बाघों के समीप पहुँचा तो उसने उनसे कहा कि मैं शैख़ शरफुद्दीन के माध्यम से तुझसे विनती करता हुँ जो अभी इस मार्ग से ऊपर गए हैं, कि मुझे रास्ता दे दो। बाघ मार्ग से हट गए। वह व्यक्ति जब पहाड़ पर पहुँचा तो मख़दूमे जहाँ ने पीछे मुड़ कर देखा और पूछा कि उन कुत्तों से बच कर कैसे निकल आये।

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि मैं ने उनसे मख़दूमे जहाँ का नाम लेकर विनती की तो उन्होंने मुझे छोड़ दिया।

मख़दूम ने फ़रमाया- मैं कौन हुँ कि मेरा नाम सुनकर वे मार्ग से हट गए। हो सकता है कि यह तुम्हारी लाठी के भय के कारण हुआ हो जो कि तुम्हारे हाथ में है। हो न हो इसी के कारण वे भाग गए होंगे। इसके बाद मख़दूमे जहाँ ने उस व्यक्ति से कहा कि ऐ संत! मुझको एक मित्र से भेंट करनी है, तू उस समय तक यहीं ठहर जब तक कि मैं वापस न आ जाऊँ। यह कह कर उस व्यक्ति को एक चट्टान पर बैठा दिया। फिर पवित्र क़ुरआन का वह भाग जो आयतल कुर्सी कहलाता है, उसका जापकर फूँका और उड़ चले, यहाँ तक कि दृष्टि से ओझल हो गए। जब तीन घड़ी रात्रि बीत गई तो आकाश से वापस आये जब प्रात: हुई तो अलौकिक व्यक्तियों का एक दल प्रकट हुआ। मख़दूमे जहाँ आगे बढ़े और सभी ने उनके पीछे सीधी कतार में नमाज़ की तैयारी की। मख़दूमे जहाँ ने सुबह की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद सभी आगे बढ़े और मख़दूम के हाथों का श्रद्धास्वरूप चुम्बन लिया और अन्तरध्यान होते गए।

मक्का में शुक्रवार की रात्रि और मख़दूमे जहाँ

एक व्यक्ति पवित्र मक्का का दर्शन कर लौटा तो एक जाप माला (तस्बीह), लेकर मख़दूमे जहाँ की सेवा में आया और कहने लगा कि मक्का की पावन धरती में शुक्रवार की रात्रि को मैं ने इस जापमाला को पाया था। जो लोग वहाँ थे उनसे पुछा कि यह जापमाला किसकी है? तो लोगों ने बताया कि यह जाप माला शैख़ शरफ़ुद्दीन मनेरी की है जो बिहार शरीफ़ में रहते हैं। जुमा (*शुक्रवार*) की रात्रि को यहाँ आते हैं। पर्यटक ने कहा कि मैं ने उस जापमाला को इसलिए संभाल कर रख लिया था कि मैं स्वंय उनके दर्शन कर यह जाप माला उन्हें पहुँचाऊँगा।

लोगों के दोषों को ढाँकना

एक बार एक व्यक्ति सामुहिक नमाज़ में मख़दूमे जहाँ की उपस्थिति में नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे बढ़ा और नमाज़ पढ़ाई नमाज़ के बाद मख़दूमे जहाँ के पास कुछ लोग यह सूचना लाये कि वह व्यक्ति जिसने नमाज़ पढ़ाई, शराबी है। आप ने फ़रमाया- हर समय नहीं पीता होगा।

लोगों ने कहा- मख़दूम यह व्यक्ति हमेशा पीता है। मख़दूम ने कहा कि- रमज़ान के पवित्र मास में नहीं पीता होगा।

भेंट स्वीकार करते परन्तु रखते नहीं

एक बार एक व्यक्ति ने पाँच स्वर्ण मुद्राएें मख़दूमे जहाँ के पास भेंट स्वरूप भेजीं। चार स्वर्ण मुद्राएें तो आप ने दीन दुखियों में बाँट दीं और एक को यह कहते हुए प्रांगण में फेंक दिया कि यह ज़ाहिद के भाग्य का है। वह स्वर्ण मुद्रा प्रांगण में गिरते ही आँख से ओझल हो गई।

जब क़ाज़ी ज़ाहिद जो कि आपके शिष्य थे, आपकी सेवा में पधारे तो उनसे आपने फ़रमाया ज़ाहिद अपना हिस्सा ले लो। उन्होंने प्रांगण में स्वर्ण मुद्रा देखी और उठा लिया।

दिल्ली दरबार में जाकर राजगीर को लौटाया

15 वर्षों तक सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ के भेंट किये हुए परगना राजगीर का स्वामित्व ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के पास रहा। जब 751 हि०/ 1350 ई० में सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ का देहांत हुआ तो हज़रत मख़दूमे जहाँ राजगीर की जागीर से सम्बन्धित कागज़ात के साथ दिल्ली की ओर चल पड़े।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के दिल्ली पहुँचने पर सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ के दरबार में प्रवेश से पहले ही आपके आगमन का समाचार वहाँ पहुँच गया। सुल्तान फ़िरोज़ तुग़लक़ नया नया सिंहासनारूढ़ हुआ था इसलिए राज्य के हर क्षेत्र से अधिकारी और दूसरे सम्बन्धित व्यक्ति अपने अपने प्रमाण-पत्रों, पट्टों और भिन्न-भिन्न प्रकार के दस्तावेज़ों के नवीकरण और उसमें बढ़ोत्तरी के लिए दिल्ली आ रहे थे। हर व्यक्ति नये सुल्तान को प्रसन्न करके, नज़रें गुज़ार कर लाभान्वित होने का अवसर खोज रहा था। हज़रत मख़दूमे जहाँ जब दिल्ली पहुँचे तो सुल्तान के प्रशासनिक अधिकारियों, दरबारियों और दरबार से जुड़े मुल्लाओं को ऐसा भ्रम हुआ कि शैख़ शरफ़ुद्दीन भी बहती गंगा में हाथ धोने आ गए हैं और स्वर्गीय सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ की भेंट राजगीर में कुछ और बढ़ोत्तरी कराना उनका ध्येय है। अपने दरबारियों के इस अनुमान की भनक जब सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ तक पहुँची तो उस ने कहा कि अगर शैख़ शरफ़ुद्दीन सम्पूर्ण बिहार चाहेंगे तो मैं दूँगा। दरबार में पहुँचने पर सुल्तान ने आप का बड़ा आदर सत्कार किया और कहने लगा कि आप के दिल्ली

में अपने दरबार में पधारने पर मैं धन्य हो गया।

मख़दूम ने कहा कि एक स्वार्थ लेकर आया हूँ। यदि स्वीकर करने का वचन दें तो मैं कहूँ।

सुल्तान ने बड़ी प्रसन्नता के साथ सहमति जताई तो मख़दूम ने अपनी पोशाक से परगना राजगीर से सम्बन्धित राजकीय काग़ज़ात निकालकर सुल्तान के हाथ में दिये और फ़रमाया कि अल्लाह के लिए इनको वापस ले लीजिये, यह मेरे काम के नहीं हैं।

मख़दूम के मुख से यह अनहोनी सुन कर सुल्तान समेत सारा दरबार स्तब्ध और चकित रह गया। सुल्तान चूँकि पहले ही वचन दे चुका था इसलिए वापस लेना ही पड़ा। फिर बादशाह ने बड़े आदर और श्रद्धा के साथ कुछ धन यात्रा व्यय के रूप में स्वीकार करने का बार-बार निवेदन किया तो उसे हज़रत मख़दूमे जहाँ ने स्वीकार कर लिया परन्तु दरबार से बाहर निकलते ही हज़रत मख़दूमे जहाँ ने सारा धन दीन, दुखियों, भिखारियों, धनहीनों में बाँट दिया और ख़ाली हाथ बिहार लौट आये।

सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ का ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में आगमन

एक बार सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ को एक प्रकार के कुष्ठ रोग के लक्षण का आभास हुआ तो वह बड़ा चिंतित हुआ। राजकीय वैद्य, हकीम के अतिरिक्त अन्य नामी गिरामी हकीमों ने इलाज किया लेकिन कारगर नहीं हुआ तो चिन्ता और बढ़ी। ऐसे में सुलतान को सूफ़ी संतों से आशीर्वाद प्राप्त करने में रोगमुक्त होने की उम्मीद जगी तो हज़रत मख़दूमे जहाँ का विचार आया। इसलिए बड़ी श्रद्धा और आदर के साथ सुल्तान फ़िरोज़ तुग़लक़ बिहार शरीफ़ आया। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म से निकल कर उसका अभिनन्दन किया तो सुल्तान ने हज़रत मख़दूम का पवित्र हाथ पकड़ कर आगे चलने को कहा परन्तु हज़रत मख़दूम ने बादशाह को ही आगे किया और स्वंय पीछे चले।

सुल्तान जब ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में प्रवेश कर बैठा तो हज़रत मख़दूमे जहाँ ने ख़ानक़ाह मुअज [illegible] के लंगरख़ाने के प्रभारी मौलाना मुज़फ़्फ़र

बल्ख़ी से कहा कि सुल्तान अतिथि है, जो कुछ पका हुआ हो उसे लाकर सामने रखो उस समय रोटी और कुछ पक्षियों के माँस पके हुए थे। हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र ने स्वंय अपने हाथों से सुल्तान के आगे परोसा। बादशाह ने जब पक्षियों के माँस को देखा तो मन में सोचने लगा कि जिस वस्तु को मुझे हकीमों ने खाने से मना किया है वही खाने को मिल रही है। ऐसा लगता है कि यहाँ भी मेरे भाग्य में रोग से मुक्ति प्राप्त होना नहीं लिखा है।

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी अपनी महानता से बादशाह की अन्त: स्थिति को ताड़ गये और आवेश में आकर भूने हुए पक्षी को इंगत कर इस प्रकार सम्बोधित किया कि यह बादशाह भ्रम में है, नहीं खायेगा, क्यों पड़े हो, जाओ उड़ जाओ। यह कहना था कि भुने हुए पक्षी उड़ गये।

हज़रत मख़दूमे जहाँ को जब इसकी सूचना मिली तो फिर रोटी और भुने पक्षी सुल्तान के पास भिजवाये, जिसे सुल्तान ने बड़े आदर और श्रद्धा के साथ खाया और रोग मुक्त हो गया। परन्तु हज़रत मख़दूम ने भुने पक्षी को उड़ाकर चमत्कार दिखाने के लिए अपने प्रिय शिष्य मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी पर कड़ा रोष व्यक्त किया। अपने प्रिय गुरू के आक्रोश से भयभीत होकर मौलाना मुज़फ़्फ़र परनाले में जाकर छिप गये। अकस्मात वर्षा हो गई और वर्षा का पानी उनके परनाले में छिपे होने के कारण निकलना बन्द हो गया। हज़रत मख़दूम जब इस ओर निकले तो आपको प्यार से बुलाया बाहर आईये, वहाँ क्या कर रहे हैं। मौलाना बाहर आये तो हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उन्हें अपने अलिंगन में ले लिया और फ़रमाया

तन (*शरीर*) मुज़फ़्फ़र जाँ (*आत्मा*) शरफ़ुद्दीन, जाँ मुज़फ़्फ़र तन शरफ़ुद्दीन
शरफ़ुद्दीन मुज़फ़्फ़र मुज़फ़्फ़र शरफ़ुद्दीन

तप और साधना का मख़दूमे जहाँ के शरीर पर प्रभाव

हज़रत अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी ने अपने शिष्यों को बताया कि एक दिन हज़रत मख़दूमे जहाँ के सिर के बालों को नाई मूँड रहा था तभी अस्तुरे से अपका सिर तनिक छिल गया तो नाई आश्चर्य चकित रह गया कि रक्त के स्थान पर मात्र थोड़ा सा पानी बह निकला। हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रश्न करने पर नाई ने अचरज के साथ कहा कि मात्र पतला सा

पानी दिखता है। यह सुनकर हज़रत मख़दूमे जहाँ ने फ़रमाया-

" *शरफुद्दीनकेशरीरमेंअभीतकनमीबचरहीहै!* "

हज़रत मख़दूमे जहाँ के मुरीद और ख़लीफ़ा

हज़रत मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद बल्ख़ी लिखते हैं कि हज़रत मख़दूमे जहाँ के मुरीदों (*अध्यात्मिकशिष्यों*) की संख्या 1 लाख तक पहुँच गई थी। इन मुरीदों में सामान्य जन से लेकर राजकीय पदाधिकारी और राजपरिवार के लोग सभी सम्मिलित थे। आपके मुरीदों में देशी और विदेशी सभी प्रकार के सत्य प्रेमी थे। आपके संकलित प्रवचनों और पत्रों के संग्रह में कहीं कहीं पर इन मुरीदों की चर्चा आ जाती है लेकिन वह इतनी व्याख्या के साथ नहीं है कि कुछ अधिक नाम और नागरिकता जुटाई जा सके। आपके प्रसिद्ध मुरीदों में शैख़ चुल्हाई, हेलाल, अक़ीक़, फ़तूहा, ज़ैन बदरे अरबी, मौलाना निज़ामुद्दीन कोही, हाजी रुक्नुद्दीन, मनव्वर, क़ाज़ी आलम, इत्यादि ऐसे मुरीद थे जो आपके स्वर्गवास के समय मौजूद थे। मजदुल मुल्क मुक़्तए बिहार, जिसने मुहम्मद बिन तुग़लक़ के आदेशानुसार ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का राजकीय निमार्ण कराया था उसके बारे में भी प्रबल संभावना है कि वह भी आपके मुरीदों में से था। तुग़लक़ राजपरिवार के कई सदस्य भी आपके मुरीद थे। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ के दामाद दावर मलिक के नाम आपके पत्र मिलते हैं। तुग़लक़ प्रशासन के कई उच्चाधिकारी भी आपके मुरीदीन में थे। बंगाल, जौनपूर, ज़फ़राबाद और बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में आपके शिष्यों की संख्या बहुत अधिक थी। हज़रत मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद (*पहाड़ पूरा*) को भी आपके शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त था।

आपके ऐसे मुरीद जिन्हें आपने शिक्षा दीक्षा में पारंगत करने के उपरांत उन्हें भी शिष्य बनाने की आज्ञा (*ख़िलाफ़त*) प्रदान कर दी थी उनकी संख्या 313 बताई जाती है जिनमे प्रसिद्ध व्यक्तित्व निम्नलिखित हैं-

(1) मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी (*नि:803हि०*) (2) मौलाना नसीरूद्दीन सिमनानी (3) हज़रत मख़दूम शुऐब (4) हज़रत मौलाना इब्राहीम (5) मौलाना आमूँ (6) मौलाना शमसुद्दीन मशहदी (7)

मख़दूम मिनहाजुद्दीन रास्ती (8) क़ाज़ी शमसुद्दीन (चौसा के जिलाधि कारी) (9) मौलाना क़ाज़ी सदरुद्दीन (10) क़ाज़ी अशरफुद्दीन (11) हज़रत सैय्यद अलीमुद्दीन गेसूदराज़ नीशापूरी (12) हज़रत मीर सैयद अली हमदानी (13) शैख़ शमसुद्दीन महमूद बदायूनी

हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में उनके अपने मुरीदों के अतिरिक्त दूसरे सूफ़ी संतों के मुरीद भी बड़ी संख्या में आते थे और आप उनमें कोई भेद भाव नहीं करते थे और दूसरे संतों के शिष्यों पर भी कृपादृष्टि रखते हुए उनकी प्यास बुझाते थे। उनके मार्गदर्शन में भी पूरी दिलचस्पी लेते थे। एक युवराज मुबारक क़सूरी लम्बी यात्रा करके आपके दर्शन के लिए पध ारा और आपकी सेवा में कहने लगा कि जब मैं अपने पीर (*धर्मगुरू*) का मुरीद हुआ तो उन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम्हारी क्या इच्छा है? तुम युवराज हो, तुम्हारी प्रकृति आदेश देने और आदेश पालन कराने की ओर सधी है या ईश्वर में रमने की ओर।

मैंने आदरपूवर्क उत्तर दिया कि अब तो मैं आपकी सेवा में हूँ जैसा आदेश हो वैसा ही करूँगा।

तो धर्मगुरू ने कहा कि इस मार्ग में सबसे उत्तम यह है कि हर वस्तु को तज दिया जाये।

मैं ने भी इसको स्वीकार कर लिया और मेरे मन में भी यही बात है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उसकी बातें सुनकर उसको सम्बोधित कर यह प्रवचन दिया कि-

> " *इसमेंकोईभ्रमनहींकिसमस्तवस्तुओंकोतजदेना सर्वोत्तम है, यदि उसमें दृढ़ता हो, परन्तु कुछ दिनों समस्त वस्तुओं को तज देने और उनसे दूर रहने के बाद फिर उनकी ओर मन चला जाये तो निराशा होती है और इस प्रकार के सन्यास से कोई लाभ नहीं। सन्यास तो उसी समय सर्वोत्तम है कि तज दी गई वस्तुओं की ओर फिर कभी ध्यान न जाये, तभी कार्य में दृढ़ता और सत्यता पैदा होती है।*
>
> *तुम युवराज हो, अपने मित्रों के संग में उठने बैठने के अभ्यस्त हो। उनके संग में जाकर तुम में फिर परिर्वतन हो*

जाये तो ऐसे सन्यास से क्या लाभ। ऐसे बहुत से लोग हैं जो कहते हैं कि हम ने सभी चीजों को तज दिया। हम उपासक हैं, हमें इन्द्रियों पर विजय प्राप्त हो गई है परन्तु जब समय आता है तो झूठे प्रमाणित होते हैं। मानव मन के ऐसे बहुत से धोखे हैं इसलिए बिना परीक्षा के कोई भी दावभरोसेकेलायकनहीं।" (**"मादेनुल मआनी"**)

लिखित और संकलित रचनायें

हज़रत मख़दूमे जहाँ अभूतपूर्व सामर्थ्य, शक्ति और विलक्षण प्रतिभाशाली सम्पन्न महापूरूष थे। एक ऐसा जीवन जो खुली किताब की भाँति था। जिसमें हर एक आराम से झाँक कर देख सकता था, छू सकता था, परख सकता था। इतनी व्यस्तता और सार्वजनिक जीवन जीते हुए आप ने संसार को उच्चतम और सर्वोत्तम कोटी की ऐसी पुस्तकें और रचनायें प्रदान की हैं कि जिनको पढ़ कर मन झूम उठता है, बात हृदय को छू जाती है और अन्तरात्मा इस महात्मा को कोटी-कोटी नमन करने को व्याकुल हो उठती है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ की सम्पूर्ण रचनाओं को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। (1) आपके लिखित पत्र और पुस्तकें (2) आपके प्रवचन (3) दूसरों की रचनाओं की व्याख्या

(1) आपके लिखित पत्र और पुस्तकें

आपकी महानता और अभूतपूर्व व्यक्तिव के सबसे प्रबल साक्षी आपके पत्र हैं, जिन्होंने हर काल में अपनी श्रेष्ठता, योग्यता और सार्थकता को सिद्ध किया है। फ़ारसी भाषा में लिखे गए यह पत्र न केवल अपने अर्थ और संदेश के कारण महत्वपूर्ण हैं बलिक भाषा और साहित्य की कसौटी पर भी यह अतिमूल्यवान और खरे हैं। पत्राचार के द्वारा संत मार्ग की शिक्षा का प्रचार प्रसार हज़रत मख़दूमे जहाँ से बढ़कर किसी ने भी नहीं किया। यधपि मख़दूमे जहाँ के पूर्व भी पत्राचार के द्वारा यह कार्य अन्य संतों ने भी किया है परन्तु जैसी व्यापक लोकप्रियता हज़रत मख़दूमे

जहाँ को प्राप्त हुई वह अभूतपूर्व है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने ख़ानक़ाहे मुअज़्ज़म में निवास करने के उपरांत पत्राचार की दुनिया में अपने सम्मोहक पत्रों के द्वारा क्रांति ला दी। बड़े-बड़े राजा महाराजा के मन में यह लालसा जगी कि शैख़ शरफुद्दीन यहया मनेरी हमें भी एक पत्र लिख दें तो हम धन्य हो जायें। केवल एक पत्र अपने नाम लिखवाने हेतु बड़े-बड़े धनी और गुणी व्यक्ति मख़दूम की सेवा में कई-कई पत्र लिखते, निकटतम शिष्यों से पैरवी कराते।

मख़दूम के पत्र लिखने और उसके प्रसारण का ढंग भी निराला था। मख़दूम जिसे पत्र लिखते उसके आध्यात्मिक व बौद्धिक स्तर और जीवन शैली का विशेष ध्यान रखते। कुछ लोगों के लिए जो पत्र लिखा जाता वह केवल उसी के लिए होता उसमें यह निर्देश होता कि यह पत्रों की थाल केवल तुम्हारे लिए है। इसमें वैचारिक मंथन और ईशकृपा से बने मूल्यवान पकवान केवल तुम्हारे लिए हैं, इसकी सुगंध भी किसी को न लगे और किसी को ऐसे पत्र लिखे जाते जो सारे संसार के लिए हर एक काल के लिए शाश्वत होते, तो उसे उपस्थित शिष्यों के मध्य अध्ययन के लिए रखा जाता और उस पत्र की वे सब अपने-अपने पास एक प्रतिलिपि तैयार कर लेते फिर पत्र जिसके नाम होता उसे भेज दिया जाता।

(i) मकतूबाते सदी

(शत पत्रों का संग्रह)

यह हज़रत मख़दूमे जहाँ के द्वारा सर्वप्रथम लिखे गए ऐसे शत पत्रों का अतिमूल्यवान संग्रह है, जो उन्होंने अपने प्रिय शिष्य क़ाज़ी शमसुद्दीन के नाम लिखे थे। इन शत पत्रों के संग्रह को मकतूबाते क़दीम अर्थात प्रचीन पत्रों के भी नाम से भी जाना जाता है।

क़ाज़ी शमसुद्दीन बक्सर से समीप चौसा जो शायद उस काल में एक बड़ा प्रशासनिक प्रखण्ड या जिला रहा होगा, के प्रशास्निक अधिकारी या जिलाधीश थे। अपनी प्रशासनिक व्यस्तता के कारण दिन-प्रतिदिन मख़दूमे जहाँ की सेवा में आने से लाचार थे इसीलिए उन्हों ने बड़ी नम्रता के साथ आपकी सेवा में कई बार यह विनती की थी कि मझे पत्रों के द्वारा शिक्षा

दी जाये तो बड़ी कृपा होगी। उनकी विनती को स्वीकार करते हुए हज़रत मख़दूमे जहाँ ने एक-एक करके यह 100 पत्र 749 हि०/1348-49 ई० में उनके नाम भेजे थे। इन 100 पत्रों में हर एक अलग विषय पर आधारित है और पूरा संग्रह सूफ़ी मार्ग और दर्शन का सुन्दर ब्योरा प्रस्तुत करता है। रहस्यों और अर्थों को सरल और सहज करके बखान किया गया है। भाषा और शैली आकर्षक और मनमोहक है। जगह-जगह पर अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न सूफ़ी कवियों के पद्यों से मकतूबात को और भी मनमोहक बना दिया गया है।

जब यह पत्र लिख कर भेजे जाते थे तो उपस्थित शिष्य भी उसकी प्रतिलिपि अपने पास रख लेते थे विशेषकर हज़रत मख़दूमे जहाँ के शिष्य और सेवक हज़रत ज़ैन बदरे अरबी ने बड़ी मेहनत के साथ सारे पत्रों की प्रतिलिपि अपने पास सजो कर रखी थी, और उन्होंने ही इन शत पत्रों के संग्रह को अपनी संक्षिप्त भूमिका के साथ संग्रहित किया, जो आज मकतूबाते सदी के नाम से विश्व विख्यात है। इसका मौलिक स्वरूप फ़ारसी भाषा में कई बार छप चुका है। ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म बिहार शरीफ़ के हज़रत सैयद शाह नजमुद्दीन अहमद फ़िरदौसी और हज़रत सैयद शाह इलयास यास बिहारी ने इसका उर्दू अनुवाद किया जिसे ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का मक्तबा शरफ़ कई बार छाप चुका है। इसका अंग्रजी अनुवाद फ़ादर पॉल जैक्सन ने किया, इसके भी कई संस्करण अब तक आ चुके हैं। मकतूबाते सदी का बंगला अनुवाद भी हुआ है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपने अन्तिम समय में इन पत्रों और क़ाज़ी शमसुद्दीन के बारे में इस प्रकार फ़रमाया:-

> " *क़ाज़ीशमसुद्दीनकेबारेमेंक्याकहूँ,क़ाज़ीशमसुद्दीन*
> *मेरा आध्यात्मिक पुत्र है। पत्र में कई स्थान पर मैं इस को*
> *पुत्र लिख चुका हूँ। पत्र में मैं ने इसको भ्राता भी लिखा है।*
> *इन को संतज्ञान के प्रकट करने की आज्ञा मिल चुकी है।*
> *इन्हीं के लिए इतना कहने और लिखने का मन हुआ, नहीं*
> *तोकौनलिखता?* "

बड़े-बड़े सूफ़ी संतों ने हज़रत मख़दूमे जहाँ के शत-पत्रों के संग्रह की भूरी-भूरी प्रंशसा की है। शत्तारिया सिलसिले के विख्यात सूफ़ी संत

और तानसेन के आध्यात्मिक गुरू हज़रत ग़ौस ग्वालियारी इन पत्रों के बारे में कहते हैं-

" अगरकिसीकोधर्मगुरूकासत्संगप्राप्तनहोतोउसे चाहियेकिशैख़शरफुद्दीनअहमदयहयामनेरीकेपत्रोंको अपने अध्ययन में रखे, इसीसे उसके मन का छल-कपट और उद्दण्डता दूर हो जायेगी अर्थात यह पत्र उसके धर्मगुरू कापर्यायबनजायेंगे" (**"औरादे ग़ौसिया"**)

चिश्ती साबरी सिलसिले के महान सूफ़ी हज़रत जलालुद्दीन कबीर औलिया पानीपती शत पत्रों के संग्रह के बारे में कहते हैं:-

" मख़दूमकेपत्रोंकेअध्ययनकेसमयऐसाअनुभवहोता हैकिमुझपरआलौकिकप्रकाशकीवर्षाहोरहीहै।"

मुग़ल सम्राटों की भी शत पत्रों के संग्रह की ओर विशेष अभिरुचि का प्रमाण मिलता है। सम्राट औरंगज़ेब के अध्ययन में जो किताबें प्रमुखता से रहती थीं उनमें यह मकतूबात भी थे। औरंगज़ेब को मख़दूमे जहाँ के पत्रों से कैसा गहरा प्रेम था इस का आभास इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि जब औरंगज़ेब की मृत्यु हुई तो उसकी तकिये के नीचे से एक पुस्तक मिली जो कि यही शत पत्रों का संग्रह था।

(ii) मकतूबाते दो सदी

(द्विशत पत्रों का संग्रह)

इस संग्रह में विभिन्न व्यक्तियों के नाम हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्र हैं। कुछ के नाम स्पष्ट हैं और कुछ पत्र बिना नाम के है। जिन के नाम स्पष्ट हैं वे निम्नलिखित हैं:-

शैख़ उमर, क़ाज़ी शमसुद्दीन, क़ाज़ी ज़ाहिद, कमालुद्दीन सन्तूसी, मौलाना सदरूद्दीन (*सोनारगाँवकेक़ाज़ी*), मलिक ख़िज़र, ख़्वाजगी ख़ासपूरी, मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी, रफ़ी उल मुल्क एवज़ी, मौलाना महमूद संगामी, ख़्वाजा सुलेमान, मौलाना हमीदुलमिल्लत, मुहम्मद दीवाना, मलिक मुफ़र्रेह, इमाम निज़ामुद्दीन, क़ाज़ी हुसामुद्दीन, फ़िरोज़ शाह तुग़लक़, शैख़ इस्हाक़ मग़रबी, दाऊद मलिक, मौलाना बायज़ीद, मौलाना नसीरूद्दीन

और सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ इत्यादि।

इन पत्रों के संग्रहकर्त्ता हज़रत मख़दूमे जहाँ के एक प्रिय शिष्य हज़रत मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन ईसा बल्ख़ी हैं जो कि अशरफ़ बिन रुक्न के नाम से प्रसिद्ध थे।

विभिन्न व्यक्तियों के नाम पत्र होने के कारण मकतूबाते सदी की भाँति एकसूत्रता नहीं है और विभिन्न मानसिकता और जीवन शैली के लोगों के नाम पत्र होने के कारण पत्रों का स्तर भी भिन्न-भिन्न है। संदेशों और प्रवचनों की पुनरावृत्ति भी है।

यह संग्रह भी अनमोल विचारों और अनगिनत लाभों से भरा हुआ है। हर स्तर की समझ रखने वाले के लिए इस संग्रह में सामग्री मौजूद है।

यह संग्रह भी कई बार छप चुका है मुल फ़ारसी भी और उर्दू अनुवाद भी। इसका एक अच्छा उर्दू अनुवाद 5 वर्ष पूर्व मकतबा शरफ़ ने प्रकाशित किया है, जिसमें कुल 208 पत्रों का अनुवाद हज़रत सैयद शाह क़सीमुद्दीन शरफ़ी ने किया है।

(iii) बिस्तो हश्त मक्तूबात
(28 पत्रों का संग्रह)

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपने सबसे प्रिय मुरीद और ख़लीफ़ा जो आप के बाद सज्जादानशीन भी हुए अर्थात मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी पर पूरे मन से मेहनत की थी और उन्हें अपने जीवन में ही पारंगत संत बना दिया था। हज़रत मख़दूमे जहाँ उनसे अपने हृदय का मर्म कहते थे, क्योंकि वे ही उनके मर्मज्ञ थे। आपके आदेशनुसार या आज्ञानुसार जब मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी कहीं बाहर चले जाते तो वहाँ से भी पत्रों का नियमित आदान प्रदान चलता रहता था।

कहते हैं कि हज़रत मख़दूमे जहाँ ने 200 से अधिक पत्र मौलाना को लिखे थे, जिन्हें सार्वजनिक करने की अनुमति नहीं थी। हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने भी अपने अन्तिम समय में यह वसीयत कर दी थी कि मेरे नाम मेरे पीरो मुर्शिद के पत्रों का थैला मेरे साथ ही दफ़ना दिया जाये, और ऐसा ही हुआ भी। परन्तु एक स्थान पर अलग एकत्र 28 पत्र

दफ़न होने से बच गए, और कुछ दिनों बाद आप के सगे भतीजे, प्रिय शिष्य और ख़लीफ़ा मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद बल्ख़ी को प्राप्त हुए तो उन्होंने उन 28 पत्रों को एकत्र कर इस संग्रह का रूप दे दिया।

इस संग्रह में उच्च कोटी के सूफ़ी दर्शन और गूढ़ विचारों के मंथन का सारांश विद्यमान है। भाषा उत्तम है पर हर एक की समझ से परे है। सूफ़ी संतों के उच्चस्थ शिखर पर पहुँचने वालों के लिए ईश्वर और परलोक के मर्म का यह एक अनमोल ख़ज़ाना है। कुछ पत्र बहुत ही संक्षिप्त हैं पर गागर में सागर के समान हैं। इन पत्रों को "**मकतूबाते जवाबी**" भी कहा जाता है क्योंकि यह सभी मौलाना मुज़फ़्फ़र के प्रश्नों के उत्तर में लिखे गए हैं। इसका फ़ारसी मूल भी बहुत पहले छप चुका है और इसका उर्दू अनुवाद भी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के मकतबा शरफ़ से प्रकाशित हो चुका है।

(iv) इण्डिया ऑफिस पुस्तकालय में पत्रों का एक अछूता संग्रह

इंग्लैण्ड के इण्डिया ऑफिस पुस्तकालय में हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों का एक अछूता संग्रह सुरक्षित है, जिसमें कुल 125 पत्र हैं। इन पत्रों को ख़्वाजा मोहम्मद सईद और ख़्वाजा मुहम्मद मासूम के नाम लिखा गया है और उन्हें पुत्र कह कर सम्बोधित किया गया है, जिससे इण्डिया ऑफिस के सूची कर्त्ता को यह भ्रम हुआ है कि यह दोनों आपके पुत्र थे जबकि सत्य तो यह है कि अपने शिष्यों को भी, जो पुत्र के समान प्रिय होते उन्हें, आप पुत्र से सम्बोधित किया करते थे। इन पत्रों पर शोध अति आवश्यक है।

(v) फ़वायदे रुक्नी

हज़रत मख़दूमे जहाँ के एक शिष्य हाजी रुक्नुद्दीन हज करने के उद्देश्य से अरब जा रहे थे। इस पवित्र यात्रा पर जाने से पहले उन्होंने मार्गदर्शक गुरू हज़रत मख़दूमे जहाँ से यह निवेदन किया कि इस तुच्छ के लिए अपने बहुमूल्य पत्रों के संग्रह से कुछ सार संक्षेप सारांश के रूप

में इस प्रकार लिख दिये जायें कि मुझे यात्रा में सहायक हो और मार्गदर्शक का काम दे सकें।

हज़रत मख़्दूमे जहाँ ने उसकी इच्छानुसार स्वंय अपने पत्रों का सारांश और कुछ पत्रों का चयन संकलित कर दिया था। यह कुछ मूलभूत बिन्दुओं पर चयनित पत्रों का बड़ा ही लाभकारी संग्रह है। भाषा और शैली अनुपम है और जो बात भी कही गई है वह दिल में उतर जाने वाली है।

फ़वायदे रुक्नी का अधूरा अनुवाद एक बार भारत में और एक बार पाकिस्तान में छप चुका है अब मकतबा शरफ़ इसका सम्पूर्ण उर्दू अनुवाद प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा है जिसके अनुवादक अली अरशद साहेब शरफ़ी हैं।

(vi) अजवबए काकवी/अजवबए ख़ुर्द

जहानाबाद जिले के काको ग्राम के निवासी और स्वतंत्र प्रकृति के संत हज़रत इज़ काकवी ने मख़्दूमे जहाँ से पत्र लिखकर तीन प्रश्न पूछे थे। उन प्रश्नों के उत्तर में लिखा गया पत्र ही एक पत्रिका के रूप में अजवबए काकवी कहलाता है।

किये गए प्रश्न और उनके उत्तर बड़े ही उच्च कोटी के संतों की समझ और स्वाद के हैं। भाषा बड़ी ही सुन्दर और संक्षेपण एवं रहस्यता के गुणों से भरपूर है। इस पत्रिका की पाण्डुलिपि विभिन्न ग्रन्थालयों में सुरक्षित है।

(vii) अजवबए कलाँ

यह विभिन्न प्रश्नों के उत्तरों पर आधारित एक पत्रिका है। यह प्रश्न ज़ाहिद बिन मुहम्मद बिन निज़ाम और दूसरे शिष्यों ने आपसे पूछे थे, जिसका संक्षिप्त और संतोषप्रद उत्तर मख़्दूम ने बड़ी कुशलता के साथ दिया है। भाषा बड़ी सरल है और अर्थपूर्ण है। यह भी पाण्डूलिपि के रूप में सुरक्षित है।

(viii) इरशादुत्तालेबीन

इस संक्षिप्त पत्रिका में इस बात का उल्लेख है कि ईश भक्ति के मार्ग पर चलने वालों को कैसा होना चाहिए और उनका उद्देश्य क्या होना चाहिए। इसका उर्दू अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

(ix) अक़ायदे शरफ़ी

अपनी इस रचना में हज़रत मख़दूमे जहाँ ने सूफ़ी संतों के धर्म विश्वासों पर प्रकाश डाला है। इस पुस्तक को 19 भागों में विभक्त कर सूफ़ीयों के सभी प्रमुख विषयों से सम्बन्धित विश्वास की चर्चा की गई है। इसका उर्दू अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

(x) फ़वायदुल मुरीदीन

इसमें 22 बिन्दुओं पर चर्चा की गई है और संक्षेप में सभी महत्वपूर्ण बातों का सारांश इकट्ठा कर दिया गया है। इसका उर्दू अनुवाद भी मकतबा शरफ़ ने प्रकाशित कर दिया है।

(xi) औराद

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने पवित्र क़ुरआन और हदीस तथा महान सूफ़ी संतों से प्राप्त मंत्रों और जापों का एक वृहत् संग्रह तैयार किया था और उसे "**औरादे कलाँ**" नाम दिया था। फिर उससे चयन कर एक दूसरा संग्रह बनाया और उसे "**औरादे औसत**" नाम दिया। सभों के लिए सभी प्रकार के जाप न तो सुगम होते हैं और न लाभकारी इसीलिए सामान्य लोगों के लिए एक संक्षिप्त संग्रह मंत्रों और जापों का तैयार कर दिया और उसे औरादे खुर्द नाम दिया। इन सभी की पाण्डुलिपियाँ कहीं कहीं सुरक्षित हैं।

इनके अतिरिक्त इरशादुस्सालेकीन, रिसाला मक्किया, रिसाला बिदायते हाल, मिरआतुल मुहक़्क़ेकीन, इशारात और अस्बाबुन्नजात लेमारफ़तिल ओसात की पाण्डुलिपियाँ भी विभिन्न पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं।

2. आपके प्रवचन

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने बिहार शरीफ़ में जब से निवास प्रारम्भ किया तब से सारा जीवन लोगों की भलाई, मार्गदर्शन, धर्मव्याख्या और शिक्षा एवं दीक्षा के लिए समर्पित कर दिया था। कोई समय ऐसा नहीं होता, जबकि आप अर्थहीन बातों में लीन हों या लोगों की भलाई से निश्चिंत हों। एक बार शैख़ हमीदुद्दीन जो हज़रत मख़दूमे जहाँ से श्रद्धा और प्रेम रखते थे और बराबर सेवा में आते रहते थे, आधी रात को आपकी सेवा में पहुँचे। हज़रत मख़दूमे जहाँ पदचाप सुनकर अपने हुजरे से बरामदे में आकर आसीन हुए। शैख़ हमीदुद्दीन भी कुछ देर चुप बैठे रहे फिर बोले कि यह चबूतरा कुछ और बढ़ा दिया जाये तो प्रांगण साफ़ दिखे। हज़रत मख़दूमे जहाँ उनकी यह बात सुनकर उठ खड़े हुए और फ़रमाया मैं ने समझा था कि तुम आधी रात को आये हो अवश्य ही कुछ धर्मसंकट होगा पर तुम तो चबूतरे की बात कर रहे हो यह क्यों नहीं कहते कि इस चबूतरे को ढा दिया जाये और इसकी ईंट से ईंट बजा दी जाये।

बड़े-बड़े आलिम, धर्मपण्डित, बुद्धिजीवी, शोधकर्त्ता और शिक्षाविद आपकी सेवा में आते और अपनी-अपनी उलझन और समस्या को आपके आगे रखते और आप उन्हें बड़ी सुगमता और सहजता से इस प्रकार सुलझा देते कि लोग आश्चर्यचकित रह जाते। सैकड़ों पुस्तकें मानो आप को कन्ठस्थ थीं। आप का व्यक्तित्व स्वंय में एक उच्च कोटी के ग्रन्थालय से कम नहीं था। ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी संदर्भ में जिस किताब से कोई अंश या अर्थ आप सुनाते या बताते तो उसके लिए आपको वह पुस्तक उस समय देखनी पड़ी हो। अगर ऐसा कभी हुआ भी तो दूसरों की संतुष्टि के लिए आप अपने ग्रन्थालय से किताब मँगवाते और उन्हें वह अंश दिखाने के लिए कहते।

धर्म विधान (*फ़िक़ह*) से सम्बन्धित कोई प्रश्न पूछता तो आप ऐसा उत्तर देते जिससे धर्म की पैरवी के लिए मन बढ़े, जटिलता का मार्ग नहीं चुनते, सहजता और सरलता को पसन्द करते। शीघ्र आलोचना से बचते। समस्या की जड़ तक पहुँचते और सर्वमान्य हल निकालते। स्वभाव में प्रचण्डता नहीं थी, यही कारण था कि आप जिस मार्ग का चुनाव करते

उसमें में भी प्रचण्डता नहीं होती। सभी के विचारों का आदर करते और संतुलित मार्ग अपनाते। धर्म विधान के सभी मार्गों का आपको असामान्य ज्ञान था और आप सभी का आदर करते थे। प्राय: हनफ़ी मार्ग को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देते परन्तु कभी-कभी दूसरों की भी कुछ विशेषताओं को स्वीकार करते थे। पवित्र कुरआन की व्याख्या (*तफ़सीर*) पर आप का ज्ञान बहुत विस्तृत था। पवित्र कुरआन के रहस्यों की ऐसी व्याख्या करते कि मन झूम उठता, ऐसे मर्म पर से परदा उठाते कि अर्थ पूर्णत: स्पष्ट हो जाता। अरबी और फ़ारसी में लिखी गई तफ़सीरों पर आप की सुक्ष्म दृष्टि थी और आप सभी की गुण्वत्ता का बखान करते रहते थे परन्तु फ़ारसी में लिखी गई *तफ़सीरेज़ाहेदी* आप के समीप सर्वश्रेष्ठ थी और इसका अध्ययन आपके समीप सभी तफ़सीरों के अध्ययन करने तुल्य था। *तफ़सीरेकिरमानी* का भी आप कभी-कभी उदाहारण देते थे।

आपके शत पत्रों के संग्रह की ही भाँति प्रिय शिष्य और सेवक हज़रत ज़ैन बदरे अरबी का संसार पर आभार है कि उन्होंने आपके प्रवचनों को भी संकलित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। हज़रत ज़ैन बदरे अरबी प्राय: प्रतिदिन आपकी सेवा में उपस्थित होते, और बड़ी तन्मयता के साथ लोगों के प्रश्न और आप के उत्तर सुनते। कभी स्वंय भी प्रश्न करते और सभी प्रश्नोत्तर को घर पहुँच कर मस्तिष्क से कागज़ पर ले आते। जब लिखते-लिखते एक पुस्तक के बराबर प्रवचन जमा हो जाते तो अनुकूल समय देखकर हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में उसे ले जाकर दिखाते और त्रूटियों को दूर करने का निवेदन करते। हज़रत मख़दूमे जहाँ उनकी इस सेवा से बड़े प्रसन्न होते और उनके द्वारा संग्रहित अपने प्रवचनों पर एक दृष्टि डाल कर आवश्यकतानुसार अपना लेखनी लगा देते। ऐसे ही उपलब्ध प्रवचनों के संग्रहों का यहाँ संक्षिप्त परिचय कराया जा रहा है।

(i) मादेनुलमआनी

(रहस्यों का ख़ज़ाना)

यह 63 भागों में विभक्त हज़रत मख़दूमे जहाँ के अनमोल प्रवचनों का संग्रह है। इसके संग्रह कर्त्ता हज़रत ज़ैन बदरे अरबी, संग्रह के क्रम की चर्चा करते हुए अपनी भुमिका में लिखते हैं-

"मैं ने अपनी शक्ति और क्षमता के अनुसार जो प्रवचन सुने उनको याद रख लिया और लिखना प्रारम्भ किया। यथा सम्भव इसका पूरा ध्यान रखा कि आपके पवित्र मुख से जो शब्द निकला है, वही संग्रह में आये, यदि कभी मैं वह शब्द या वाक्य भूल गया हूँ (जो कि बहुत कम हुआ है) तो मैंने मजबूरीवश दूसरे वाक्य से उस अर्थ को पूरा कर दिया है क्योंकि उद्देश्य तो अर्थ है। मैं इस अक्षम्य पाप में कभी संलिप्त नहीं हुआ कि जान बूझकर प्रवचन के अर्थ में अपनी ओर से कोई फेरबदल किया हो, यहाँ तक कि अगर कोई बात याद न रही तो उस पृष्ठ को रिक्त छोड़ देता और जब सेवा का अवसर प्राप्त होता, तो उसके बारे में पूछने का साहस करता फिर जो उत्तर प्रदान होता उसे भली भाँति याद कर लेता और रिक्त पृष्ठ को पूरा कर लेता। जब यह संग्रह पूर्ण हो गया तो मात्र इस विचार से कि शायद मनुष्य होने के कारण कहीं कोई भूल चूक न हो गई हो आपकी सेवा में निवेदन किया कि आपके सेवक ने आपके प्रवचन को संग्रहित किया है यदि वह सुन लिया जाये तो इस तुच्छ के दोनों लोक धन्य हो जायें। अपार दया से मेरा यह निवेदन स्वीकार हुआ फिर तो मुँह माँगी मुराद मिल गयी। सुविधानुसार आपकी सेवा में शब्दश: और अक्षरश: पूरा संग्रह मैं ने आपको सुनाना प्रारम्भ किया। कई स्थान पर भूलवश इस तुच्छ से शब्द छूट गए थे या अनुचित लिखा गये थे, उसे बड़ी दया और कृपा करते हुए सही कर दिया गया। जिस समय हज़रत मख़दूमे जहाँ इस प्रवचन को सुनते तो समय-समय से कोई उदाहरण या घटना या कविता या अतिरिक्त व्याख्या भी बताते जाते थे, उनको भी मैं ने इस प्रवचन में लिख लिया ताकि हज़रत के बहुमुल्य प्रवचन से संसार वाले वंचित न रहें"

इस संग्रह में हज़रत मख़दूमे जहाँ के 749 हिजरी/1348-49 ई० से पूर्व के प्रवचनों का संग्रह है।

हज़रत सैयद शाह क़सीमुद्दीन शरफ़ी के द्वारा किया गया इसका उर्दू अनुवाद 604 पृष्ठों में मकतबा शरफ़ से प्रकाशित हो चुका है।

(ii) ख़्वाने पुरनेमत

(मूल्यवान वस्तुओं से भरी थाल)

वस्तुत: यह मादेनुलमआनी का दूसरा भाग है। इसमें हज़रत जै़न बदरे अरबी ने 15 शाबान 749 हि०/1348 ई० से लेकर शव्वाल 751 हि०/1350 ई० तक के हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रवचनों को एकत्र किया है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रवचनों में ऐतिहासिक घटना या अपनी चर्चा या समकालीन व्यक्तियों की चर्चा बहुत कम है परन्तु जो भी है वह अति महत्वपूर्ण है और तत्कालीन इतिहास की रचना में बड़ा सहायक है। इसका भी उर्दू अनुवाद मकतबा शरफ़ से प्रकाशित हो चुका है और इसका फ़ारसी मूल भी छप चुका है।

(iii) मुख़्ख़ुलमआनी

(रहस्यों का सारतत्व)

इस के संग्रह कर्त्ता भी हज़रत जै़न बदरे अरबी हैं। इसमें किसी शीर्षक के अन्तर्गत प्रवचन संग्रह नहीं किया गया है बलिक जिस सभा में जो कुछ सुना गया उसे लिख लिया गया। कुल 53 सभाओं के प्रवचनों का यह संग्रह है। इसका मूल छप चुका है।

(iv) राहतुल क़ुलूब

(दिलों का सुख चैन)

इसके संग्रह कर्त्ता भी हज़रत जै़न बदरे अरबी हैं। इसमें दस सभाओं के प्रवचनों को एकत्र किया गया है। इसका मूल प्रकाशित हो चुका है और उर्दू अनुवाद भी ख़ानक़ाह फ़िरदौसिया सिमला पाक से प्रकाशित हो गया है।

(v) मलफ़ूज़ुस्सफ़र

इसके संग्रहकर्ता भी हज़रत जै़न बदरे अरबी हैं इस संग्रह में 762 हि०/1360-61 ई० में दिये गये प्रवचनों को एकत्र किया गया है। इस संग्रह में हर सभा की तिथि भी लिख दी गयी है।

(vi) तोहफ़ए ग़ैबी

इसके संग्रहकर्त्ता भी हज़रत जै़न बदरे अरबी हैं इस संग्रह में 759 हि० से 770 हि० 1357 से 1368 ई० तक के प्रवचन एकत्र किये गये हैं।

(3) दूसरों की रचनाओं की व्याख्या और उन पर टीका

हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रवचनों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आपके शिष्यों में से कई एक आपकी सेवा में विभिन्न पुस्तकों का पाठ लेते थे और आप उनको इसकी शिक्षा देते समय सुन्दर व्याख्या भी करते जाते थे। अगर उन सब व्याख्याओं को सावधानी के साथ एकत्र किया गया होता तो कई पुस्तकों पर हज़रत मख़दूमे जहाँ की व्याख्या से संसार लाभान्वित होता।

(i) शरहे आदाबुल मुरीदीन

आदाबुल मुरीदीन अरबी भाषा में सूफ़ी वाद की महत्वपूर्ण पुस्तक है इसके लेखक हज़रत शैख़ अबू नजीब सोहरवर्दी (*नि:563 हि०*) थे जो कि आपके फ़िरदौसी सिलसिले के मुख्य गुरू गुज़रे हैं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपने एक प्रिय शिष्य मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन ईसा बल्ख़ी जो कि अशरफ़ बिन रुकन के नाम से प्रसिद्ध थे, की इच्छा और निवेदन पर आदाबुल मुरीदीन की व्याख्या का कार्य **765** हिजरी के रबीउल अव्वल मास में शुक्रवार के दिन प्रारम्भ किया और एक वर्ष **10** महीना उपरांत **766** हि० के ज़िल हिज्जा मास में मंगल के दिन समाप्त किया।

इसकी व्याख्या हज़रत मख़दूमे जहाँ ने इस प्रकार की है कि सर्वप्रथम थोड़ा अरबी मूल लिखते हैं, फिर उसका फ़ारसी भाषा में अनुवाद करते हैं इसके बाद भाषा विज्ञान और व्याकरण के अनुसार व्याख्या प्रारम्भ करते हैं और अन्त में सूफ़ी दर्शन के अनुसार सुन्दर और स्पष्ट व्याख्या करते हैं। इस टीका में हज़रत मख़दूमे जहाँ के ज्ञान का सागर स्पष्टत: झलकता है। यह टीका बहुमूल्य है और इसमें सम्पूर्ण सूफ़ी दर्शन समा गया है। हज़रत मख़दूमे जहाँ की व्याख्या और टीका का ढंग बड़ा प्यारा और सरल है। हर समस्या पर विस्तृत चर्चा की है और सभी संभव हल एकत्र कर दिया है। आदाबुल मुरीदीन की एक टीका हज़रत सैयद मुहम्मद गेसूदराज़ बन्दानवाज़ (*नि:825 हि०/1422 ई०*) जिनकी दरगाह कर्नाटक

के गुलबर्गा में स्थित है, की भी मिलती है पर वह संक्षिप्त है। हज़रत मख़दूमे जहाँ की इस टीका की सूचना भारत से बाहर कम ही पहूँची है। इस टीका पर शोध और इसके प्रकाशन से हज़रत मख़दूमे जहाँ का अदभूत ज्ञानी व्यक्तित्व और भी उभर कर सामने आ जायेगा।

18 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्ववान मुल्ला गुलाम यहया बिहारी ने मख़दूमे जहाँ की इस टीका पर बड़े परिश्रम से अपना फुटनोट लगाया था। इस टीका के मूल का थोड़ा सा आरंभिक भाग मुल्ला गुलाम यहया बिहारी के फुटनोट सहित प्रकाशित हुआ था और उसका उर्दू अनुवाद भी छप चुका है। परन्तु सम्पूर्ण पुस्तक अब तक हस्तलिखित ही है।

(ii) फ़राएज़े शरफ़ी

यह हज़रत मख़दूमे जहाँ की अरबी भाषा में एक मात्र उपलब्ध रचना है। इस पुस्तक में हज़रत मख़दूमे जहाँ ने इस्लामी शरीयत के अनुसार उत्तराधिकार को स्पष्ट किया है। इसमें अधिकतर इस विद्या से सम्बन्धित पुस्तकों का सार है। यह भी अप्रकाशित है और इसकी केवल दो पाण्डुलिपियों का ही पता चल पाया है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के संदेश

प्राणियों की सेवा ही परमधर्म

हज़रत मख़दूमे जहाँ के जीवन का मुख्य ध्येय प्राणियों की सेवा और लोगों के काम आना था। प्राणियों की सेवा को ही सारे ब्रह्माण्ड के रचयिता अल्लाह पाक की प्रसन्नता का मार्ग समझते थे। लोगों की सेवा को वे पैगम्बरों का कर्त्तव्य समझते थे और दूसरों की कठिनाईयों को अपने सर लेते रहते थे, दूसरों के दुखों से दुखी रहना आपकी दिनचर्या थी। इस सम्बन्ध में अपने शिष्यों और श्रद्धा रखने वालों को भी सदा प्रवचन देते रहते थे। विशेष रूप से प्रशासनिक अधिकारियों और राजपरिवार के सदस्यों को जब भी चिट्ठी लिखते तो उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट कराते और इस सम्बन्ध में कुछ करने की लालसा जगाते और मनोबल बढ़ाते। तत्कालीन प्रभावशाली मलिक ख़िज़र को एक पत्र में लिखते हैं-

" इसअन्धकारमयसंसारमेंलेखनी,मुख,धनदौलतऔर पद से जितना सम्भव हो सके दीन दुखियों को आराम पहुँचाओ। व्रत, नमाज़, पुण्य सब अपने स्थान पर अच्छे ज़रूर हैं लेकिन दिलों को सुख पहुँचाने से अधिक लाभकारी नही"

आपके पत्रों के संग्रह में लोगों की सेवा, प्राणियों पर दया और दिल जोड़ने का संदेश मुख्य रूप से मिलता है अपने एक पत्र में इसी ओर संकेत करते हुए बड़ा प्यारा संदेश देते हैं:-

" एकमहानसंतसेलोगोंनेपूछाकिपरमात्मातकपहुँचने के मार्गों के बारे में बताईये तो वे बोले इस सृष्टि का हर एक कण परमात्मा तक तक पहुँचाने का मार्ग है, लेकिन सर्वोत्तम और सबसे निकटम मार्ग यह है कि लोगों के दिलों को प्रसन्न किया जाये, इससे निकटम मार्ग और कोई नहीं। मैं ने जो जो कुछ पाया इसी मार्ग से पाया और अपने शिष्योंकोभीइसीकीशिक्षादेतारहताहूँ।"

अपनी इसी विशेष शिक्षा पर बल देते हुए एक पत्र में लिखते हैं:-

"एक संत पुरुष के समक्ष एक व्यक्ति समकालीन राजा की इस प्रकार प्रशंसा कर रहा था कि इस नगर का राजा रात भर जागता है और नींद लेने के बजाये ईश जाप और नमाजें पढ़ने में रात व्यतीत करता है, तो उस संत पुरुष ने टोका और कहा कि बेचारा राजा अपना मार्ग भूल गया है इसलिए कि उस के लिए ईश्वर तक पहुँचने के का मार्ग यह है कि वह भूखों को भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन कराये, वस्त्रहीनों को भाँति-भाँति के कपड़े पहनाये, अप्रसन्न हृदय को प्रसन्नचित्त करे और जरूरतमन्दों की आवश्यकता की पूर्ति करे। अत्यधिक नमाजें और ईश-जाप में रात भर जागना संतों का काम है, हर मनुष्य को अपने लिए उचित कार्य करना चाहिए। रात भर जाग कर इश-भक्ति करने से उत्तम यह है कि किसी एक टूटे दिल का दुख दूर करे, उसके काम आ जाये और उसके मुर्झाए दिल को प्रसन्न

करें। क्योंकि कोई भी टूटी वस्तु अपना मूल्य नहीं रखती लेकिन टूटे दिल बड़े मूल्यवान होते हैं।

कहतेहैंकिएकदिनपैग़म्बरहज़रतमूसाअलैहिस्सलामइस प्रकार परमात्मा से विनती कर रहे थे कि हे परमात्मा, मैं तुम्हें कहाँ खोजूँ? तो उत्तर मिला कि मैं टूटे दिलों के समीप रहता हूँ। हज़रत मूसा ने आदर के साथ कहा कि हे परमात्मा मेरे दिल से अधिक किसी का दिल टूटा हुआ नहीं है तो आदेश हुआ कि फिर मुझे वहीं खोजो मैं वहीं मिलूँगा।"

दिल तोड़ने का कोई प्रायश्चित नहीं

एक बार हज़रत मख़दूमे जहाँ रमज़ान मास के अतिरिक्त सामान्य रोज़े से थे तभी आप की सेवा में एक वृद्धा बड़ी श्रद्धा और प्रेम के साथ कुछ खाना पका कर लाई और उसे खा लेने का निवेदन करने लगी। आप ने उसका निवेदन को सुना तो एक पल विचार किया और फिर उसके लाये खाने में से कुछ खा लिया। वह अति प्रसन्न हुई और आशीर्वाद देती हुई लौट गई। हज़रत मख़दूमे जहाँ के उपस्थित शिष्यों में से कुछ को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने प्रश्न किया कि आप तो रोज़े से थे, फिर कैसे खा लिया? तो हज़रत मख़दूमे जहाँ ने फ़रमाया–

" रोज़ातोड़नेकाप्रायश्चिततोहैपरन्तुदिलतोड़नेका . कोईप्रायश्चितनहींइसीलिएमैंनेखालिया।"

संसार का त्रिया चरित्र

सूफ़ी संतों ने संसार की मोह–माया, क्षणिक और भौतिक सुखों के नशे में चूर और इसी मार्ग पर चलने वाले लोगों को इन सब की वास्तविकता से अवगत कराया और उनका मोह भंग कर परलोक का प्रेम जगाया तथा ईश भक्ति का संदेश दिया, हज़रत मख़दूमे जहाँ ने भी इस सम्बन्ध में विशेष रूप से ध्यान दिया और बड़ा मनमोहक संदेश दिया। अपने एक शाश्वत पत्र में इस ओर इस प्रकार ध्यान दिलाते हैं:–

"हे भाई, तुम्हें ज्ञात हो कि यह दुनिया छल और कपट से भरी हुई है और बड़ी बेवफ़ा है। यह एक रंग में नहीं रहती। हर समय चोला बदलती रहती है। यह दिखती तो मध है परन्तु विष मिश्रित है। अगर यह दुनिया प्रातः किसी को समीप लाती है तो रात्री में दूर कर देती है। यदि सुबह के समय सम्मानित करती है तो शाम होते होते पाँव से रौंद देती है। इसके प्याले में घास और तिनके होते हैं और उस पर मक्खी भिन भिनाती रहती है। इसीलिए कहा गया है कि इसके मदिरा के प्याले को मुँह न लगाओ क्योंकि उसमें विष ही विष है और इसके फूल की पत्तियों को न सूँघो क्योंकि इसमें काँटे छिपे हैं।

यह बूढ़ी दुल्हन बहुत से बर्बर सम्राटों को मौत के घाट उतारना और अपने प्रेमियों को पैरों से रौंदना नहीं भूलती। यदि किसी को कुछ देती है तो फिर उसे लौटा भी लेती है। सत्य तो यह है कि यह दूनिया जादूगरनी है, इस का जादू तो यहाँ तक है कि इसकी चमक दमक स्वप्न के जैसी है, इसका खाना और पहनना भी काल्पनिक है और इसका सम्पूर्ण स्वाद और वासना स्वप्न दोष की भाँति है। फिर भी लोग इसके दीवानें हैं और इसी के पीछे भागे-भागे फिर रहे हैं।

एक बुद्धिजीवी से संसार की वास्तविकता के बारे में पूछा गया तो उस ने कहा- यह दूनिया एक स्वप्न है या हवा का झोंका है या कोई काल्पनिक कथा है। फिर उस व्यक्ति के बारे में प्रश्न किया गया जो कि दुनिया पर मर मिटा है तो उसने कहा कि- ऐसा व्यक्ति भूत प्रेत है या पागल है।

हेभाई!संतोंकाकथनहैकिदुनियामेंप्रसन्नताकाकोई प्रसंग ऐसा नहीं कि जिसमें दुख छिपा हुआ नहीं है। क्योंकि ऐसा सुख जिस में दुख न हो, ऐसी प्रसन्नता जिसमें मातम न हो रचयिता (अल्लाह) ने रची ही नहीं।

हज़रतईसा(मसीह)अलैहिस्सलामनेएकवृद्धाकोदेखा,

जो फटेहाल थी, उसका मुख भी काला पड़ गया था और देखने में बड़ी कुरूप लग रही थी, तो आप ने उस से पूछा कि तूम कौन हो, उसने कहा कि मेरा नाम दुनिया है। फिर आप ने पूछा यह तो बताओ कि अब तक तुमने कितने को पति बनाया। उसने उत्तर दिया अनगिनत, जिनका न अन्त बताया जा सकता है और न अनुमान लगाया जा सकता है। हज़रत ईसा ने पूछा- इन पतियों में से कितनों ने तुझे तलाक दी उसने उत्तर दिया कि- एक ने भी तलाक नहीं दी बल्कि मैं ने ही उन सब को मौत के घाट उतारा, वे सब मिट गए और मैं अपने स्थान पर हूँ।

हे भाई ये संसार संकटों से भरी नदी है, जिसमें रक्त ही रक्त है। ऐसी प्रेमिका है जिसका यौवन जान लेवा है। ऐसी महबूबा है, जो वस्तु विहीन है। इसकी प्रसन्नता भी आश्चर्यजनक है और इसका मर मिटना भी विस्मयजनक है। यह अपना यौवन छिपा कर रखती है। यह ऐसी सुन्दर और मनमोहक है, जो अपने मुखमण्डल पर नक़ाब लगाए रखती है। इसकी चाल भी मस्तानी है और दिल में प्यार, मुहब्बत नाममात्र भी नहीं। यह सब को प्यासा रखती है और सब को धोखे में रख कर अतृप्त छोड़ देती है। अगर सुबह में कुछ देती है तो रात में लौटा लेती है। अगर प्रात: आदर सत्कार करती है तो सन्ध्या में अनादर कर डालती है। यह बूढ़ी दुल्हन ढेर सारे नवयुवकों और राजाओं को मार डालना और अनगिनत प्रेमियों को पैरों से रौंदना भली भाँति जानती है। इसके बाद भी लोग उसके त्रिया चरित्र के जाल में फँस जाते हैं। इसके अन्दर खोट ही खोट है केवल एक ही अच्छाई है कि यह परलोक के लिए खेती है, इसमें बीजडालकरपरलोकमेंफ़सलप्राप्तकीजासकतीहै।"

(फ़वायदे रुकनी)

सारे पापों की जड़ दुनिया का प्रेम है।

दुनिया की भर्त्सना से यह नहीं समझना चाहिये कि हज़रत मख़दूमे जहाँ संसार को सर्वस्व छोड़ कर वनवास जाने को कह रहे हैं और मनुष्य जो एक सामाजिक प्राणी है, उसे समाज के सम्पूर्ण उत्तरदायित्व और कर्त्तव्यों से मूँह मोड़ने का संदेश दे रहे हैं। बल्कि उनका मार्ग तो वही मार्ग है, जिस पर चल कर स्वंय पैगम्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक जीवन्त उदाहरण संसार के सामने रखा था। जिसमें पालनहार अल्लाह पाक के प्रति दायित्वों के निर्वाह के साथ-साथ समाज के प्रति दायित्वों और कर्त्तव्यों के भी निर्वहन के बिना मोक्ष और मुक्ति की प्राप्ति का प्रश्न ही नहीं उठता। दुनिया की भर्त्सना से कोई दिगभ्रमित न हो इसीलिए स्वंय हज़रत मख़दूमे जहाँ इस भर्त्सना के तात्पर्य और वास्तविकता की व्याख्या अपने एक पत्र में इस प्रकार करते हैं-

> *"पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कहा है कि "सारे पापों की जड़ दुनिया का प्रेम है" यह नहीं कि दुनिया का स्वामित्व पापों की जड़ है। प्रेम का स्थान हृदय है, हाथ नहीं है तो अगर किसी के स्वामित्व में सारी दुनिया हो परन्तु उसका मोह उस के दिल में न हो और उसका व्यय अपने सुख और वासना की पूर्ति में नहीं बलिक अल्लाह पाक की उपासना तथा ईश भक्ति में, दान दक्षिणा में धर्मानुसार करता हो तो इसमें कोई भय नहीं, कोई दुविधा नहीं। क्या यह नहीं देखते कि सारे संसार का स्वामित्व पूर्व से पश्चिम तक हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को प्राप्त था परन्तु उसका मोह उनके दिल में नहीं था इसीलिए उससे उन्हें कोई हानि नहीं पहुँची। दुनिया का मोह है या नहीं इसकी वास्ताविक पहचान यह है कि उसके लिए दुनिया का होना और न होना दोनों बराबर हो अर्थात न तो दुनिया के होने और उसके पास रहने से उसे प्रसन्नता हो और न ही दुनिया के न होने या उसके हाथ से निकल जाने से उसे दुख हो और यह बहुत ही बड़ा काम है हर व्यक्ति के लिए आसान नहीं।"*

उद्देश्य के अनुसार कर्म के प्रकार

अपने एक और पत्र में जो शैख़ उमर को लिखा गया हज़रत मख़दूमे जहाँ इस विषय को और भी आसान और सहज करके बताते हैं कि-

" *अबयहजानलोकिदुनियामेंजोवस्तुहैंयाकमहैंवेतीन प्रकार के हैं।*

एक वह कि दुनिया का प्रयोग मात्र दुनिया के लिए हो। लालसा भी दुनिया और लक्ष्य भी दुनिया किसी भी प्रकार से परमात्मा के लिये न हो तो यह सब हर प्रकार से पाप ही पाप है।

दूसरा वह है जो दर्शाता तो हो कि यह सब परमात्मा के लिए है लेकिन वस्तुत: उसका लक्ष्य दुनिया ही हो उदाहरणस्वरूप उसका मोह और वासना को तजना इस लिए हो कि लोगों की दृष्टि में मैं साधु और सज्जन दिखूँ लोग महात्मा समझें, शिक्षा की प्राप्ति इसलिए कि लोगों में आदर सम्मान और पद प्राप्त हो, लोग पंडित समझें और इस ज्ञान के द्वारा संसार का ध न-दौलत एकत्र किया जा सके तो यह सब चाण्डाल है यधपि स्पष्ट यही होता है कि यह सब परमात्मा के लिए है।

तीसरा प्रकार वह है कि संसार में रहते हुए संसार को भोगते हुए लक्ष्य और कामना मात्र परमात्मा की प्रसन्नता हो यही प्रशंसनीय है जैसे खाना, पीना, सोना इस कारण हो कि परमात्मा की उपासना कर सकेगा और विवाह करना, वैवाहिक जीवन बिताने के पीछे लक्ष्य यह हो कि परस्त्री गमन से बचेगा और उससे जो संतान पैदा होगी वह सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके दूत पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद का नाम लेवा होगी और अपने मस्तक से मस्जिदों को आबाद करेगी और थोड़ी आवश्यक सामग्री और वस्तु को जमा करना कि इससे उपासना और आराधना में संतुष्टि और आराम मिलेगा और अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए लोगों का ऋणी न होना पड़ेगी तो इस लक्ष्य औरउद्देश्यसेसंसारकोभोगनाप्रशंसनीयहै।"

(मकतूबात दो सदी)

मनुष्यों के प्रकार

हज़रत मख़दूमे जहाँ अपने एक पत्र में मनुष्यों का प्रकार बताते हुए लिखते हैं कि:-

" पैग़म्बरहज़रतमुहम्मदसल्लल्लाहोअलैहेवसल्लमकेकथनुसार मनुष्यों के तीन प्रकार हैं। उनमें से एक जानवरों की भाँति हैं, उनके जीवन का उद्देश्य और क्षमता खाने, पीने, सोने और सहवास करने तक सीमित है। पवित्र कुरआन के अनुसार इस प्रकार के लोग जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे भी गए गुज़रे

और दूसरा प्रकार ऐसे लोगों का है जो फ़रिश्तों और दूतों की भाँति हैं उनकी सारी क्षमता और मेहनत, जाप, उपासना, साधना और अराधना में लगी है, उनका गुण फ़रिश्तों का गुण है और एक प्रकार उनका है जो पैगम्बरों की तरह हैं, उनकी क्षमता और उद्देश्य परमात्मा का प्रेम और उसकी भक्ति है। इसी को कहते हैं कि हर व्यक्ति का मूल्य उसकीक्षमताकेअनुसारहोताहै।"

(फ़वायदे रुकनी)

शिक्षा आवश्यक है

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने शिक्षा की प्राप्ति में स्वंय बड़ा उज्जवल उदाहारण स्थापित किया था और वे शिक्षा की महत्ता और आवश्यकता के बहुत बड़े पारखी थे अपने एक शिष्य को इस ओर ध्यान दिलाते हुए लिखते हैं कि

" रातदिनशिक्षाकीप्राप्तिमेंलगेरहोऔरइसेअपने लिए आवश्यक कर लो। आराम, विश्राम, नींद, भूख सभी को परे धकेल दो क्योंकि शिक्षा हर प्रसंग अर्थात तप और साधना में पवित्रता की भाँति है। जिस प्रकार नमाज़ पढ़ने में पवित्रता आवश्यक है उसी प्रकार कोई भी कर्म बिना ज्ञान के सही नहीं होता।

कहते हैं कि ज्ञान और शिक्षा नर है कर्म मादिन है धर्म और धन इसी से जन्म लेता है। कोई भी कर्म बिना शिक्षा के फलदायक नहीं होता जैसे भीतर से खाली बीज फल नहीपैदाकरता"

(मकतूबात दो सदी)

सत्संग के लाभ

शिक्षा की प्राप्ति के साथ-साथ सत्संग भी चरित्र निमार्ण में अति आवश्यक है हज़रत मख़दूमे जहाँ फ़रमाते हैं:-

" जिसप्रकारअनपढ़ोंऔरअशिक्षासेदूररहनाआवश्यक है उसी प्रकार ज्ञान का संग और ज्ञानियों का सत्संग भी अति आवश्यक है। ढेर सारे तप और साधना वहाँ नहीं पहुँचा सकते जहाँ सूफ़ी संतों के एक दिन का सत्संग पहुँचा देता है बस इस प्रकार समझो कि एक तुच्छ हीन चींटीं को मक्का पहुँचने की लालसा जगी तो वह कबूतर के पैरों से चिमट गई और वहाँ पहुँच गई। क्या यह नहीं देखते कि लकड़ी और घांस फूंस की प्रकृति में एक स्थान पर पड़े रहना है और जब इसी लकड़ी और तिनके को पानी का साथ और संग मिल जाता है तो पानी की धारा के साथ यह भी बहने लगता है, इसी प्रकार चींटी उड़ने का गुण नहीं रखती परन्तु कबूतर का संग प्राप्त हुआ तो कबूतर की उड़ान के साथ चींटी भी उड़ने लगी। बहना पानी का गुण है और उड़ना कबूतर की प्रकृति, केवल संग और साथ के कारण लकड़ी और चींटी को यह बात प्राप्त हो जाती है।

दूसरा उदाहारण लोहे का लो उसकी प्रकृति है कि पानी की सतह पर ठहर नहीं सकता और न चल सकता है यध पि एक कण ही क्यों न हो परन्तु वही लोहा जब नाव की लकड़ियों में जड़ दिया जाता है और उसी के साथ लग जाता है तो चाहे उसका वज़न एक मन या दो मन क्यों न

हो वही लोहा नाव की लकड़ी के संग रह कर पानी की सतह पर रुका भी रहेगा और तैरता भी रहेगा। सूफ़ी संतों के सत्संग की महत्ता और उसके प्रभाव और फल को इसी से समझो, जानो और पहचानो कि मात्र दिखावे और प्रथानुसार उपासना और अराधना से बिना किसी पारंगत सूफ़ी संत का सत्संग प्राप्त किये छुटकारा नहीं मिल सकता"

(मकतूबात सदी)

ढाई आखर प्रेम का

प्रेम, मुहब्बत, इश्क़ सूफ़ी संतों के संदेश का मुख्य प्रसंग रहा है हज़रत मख़दूमे जहाँ ने भी इस विषय पर विभिन्न पत्रों में ध्यान आकर्षित किया है। एक पत्र में इस प्रकार लिखते हैं:-

"ए भाई, तुम्हें ज्ञात हो कि जिस तरह नमाज़ और रोज़ा आवश्यक है उसी प्रकार अन्तर्मन के लिए प्रेम, मुहब्बत और इश्क़ फ़र्ज और आवश्यक हैं। प्रेम व मुहब्बत का जन्म स्थान दुख और पीड़ा है। इश्क़ बन्दे (मनुष्य) को अल्लाह तक पहुँचाता है, इसीलिये इश्क़ को अल्लाह तक पहुँचने वाले मार्ग हेतु आवश्यक कर दिया गया है। इश्क़ जीवनहैऔरइश्क़नहींतोमौतहै।कहागयाहैकिइश्क़ अग्नि है और यह जिस स्थान पर पहुँचती है उसे जला कर भस्म कर देती है। अल्लाह के प्रेमियों का हृदय ढका हुआ अग्नि कुण्ड है। अगर इसमें से एक चिन्गारी भी बाहर आ जाये तो सम्पुर्ण ब्रह्मांण्ड को जला कर राख कर दे।

कहा जाता है कि सारे संसार के पाप के लिए नरक की आग है और नरक को दण्ड देने के लिए प्रेमियों के दिल की आग है अगर उनके हृदय पर पानी से भरी सारी नदियों को बहा दिया जाये तो उनका सारा जल अग्नि हो जाये। यह संसार की अग्नि ईश प्रेमियों के हृदय की अग्नि के

लिए ईंधन की तरह है। यही वह स्थान है, जिस से यह बात कही गई है:
जो प्रेम में आग की तरह न हुआ वह इश्क के स्वादों से लाभान्वित नहीं हुआ।
कल प्रलय (क़यामत) के दिन जब अल्लाह के प्रेमी अपनी क़ब्रों से बाहर आयेंगे तो, अपने सर्वस्व पर विचार करेंगे और यदि अपने दुख दर्द और प्रेम कीं पीड़ा में तनिक भी कमी या ह्रास पाएंगे तो इस प्रकार रोएंगे और चिल्लाएंगे तथा विनती करेंगे कि नरक वालों को भी इनकी पीड़ा पर करुणा आएगी इसी अर्थ में यह कहा गया है:-
अगर इस प्रेम की पीड़ा तुम्हारी साथी बन जाये तो फिर यही पीड़ा हमेशा के लिए तुम्हारी, मार्गदर्शक बन जाये
ए भाई,अगरतुमसेहोसकेतोइसप्रेमअग्निकीएक
चिंगारी ही प्राप्त कर लो, जो तुम्हारे साथ कब्र में जाये।
ए भाई, आशिकों का मार्ग आश्चर्यजनक और विस्मयजनक है और अल्लाह के प्रेमियों के कार्य भयभीत करने वाले और कठिन हैं। न हर एक मनुष्य इसे सुन सकता है और न ही नपुंसक इसे अपना सकता है। इस के लिए ऐसे दीवाने और मजनूँ की आवश्यकता है जो लोगों के पत्थर खा सके और उनके के तीखे बोल सुन सके। ऐसे फ़रहाद की आवश्यकता है जो पहाड़ काट सके और ऐसी जुलेख़ा की आवश्यकता है जो यूसुफ़ के नाम की रट लगा सके इसीलिए कहा जाता है कि
"जाओ खेलो कूदो आशिक़ी तुम्हारे बस की नही"
ऐभाईजिसदिनआशिक़ोंकेनेता(हुसैनबिनमनसूर
हल्लाज) को सूली पर चढ़ाया गया उस दिन हज़रत इमाम शिबली ने अल्लाह पाक के दरबार में यह अनुरोध किया कि ए अल्लाह तू अपने मित्रों की हत्या कैसे कर देता है? उत्तर मिला ऐसा मैं इसलिए करता हूँ कि उन्हें उनके ख़ून का पारितोषिक मिले

फिर हज़रत शिबली ने पूछा कि उनके खून का पारितोषिक क्या है? तो उत्तर मिला मेरा दर्शन और मेरा सौन्दर्य, जिसे मैं क़त्ल करता हूँ उसके रक्त का पारितोषिक भी मैं स्वयं हूँ।

ऐ भाई, वह अपने प्रेम का सौभाग्य हर किसी को नहीं देता है और न हर व्यक्ति इश्क़ के लायक़ होता है। जो प्रेम और इश्क़ के लायक़ है वही ख़ुदा के लायक़ है। जो ईश्वर के लायक नहीं वह ख़ुदा के भी लायक़ नहीं। जो इश्क़ में ओत प्रोत हैं वही इसके अन्तः गुणों से परिचित हैं और जो इश्क़ से अनभिज्ञ हैं वे इसके बारे में क्या जानें। इश्क़ की महत्ता तो इश्क़ वाले ही जानते हैं। सारा संसार स्वर्ग का अभिलाषी है, इश्क़ का अभिलाषी एक भी नहीं मिलता। इसका कारण यह है कि स्वर्ग मनोकामना की पूर्ति का स्थान है और इश्क़ तो आत्मा की ख़ुराक है। रुपये पैसे के हजारों चाहने वाले मिल जायेंगे परन्तु मोति और जवाहरात के अच्छे पारखी खोजने से भी नहीं मिलते।

इश्क़ एक ऐसी सवारी है जो एक ही छलाँग में दोनों लोकों से आगे पहुँचा देती है

ऐ भाई, अपने अहंकार से निकल जाओ और स्वयं को इश्क़ के हवाले कर दो, जैसे ही तुम ने अपने आप को इश्क़ के हवाले किया वैसे ही परम लक्ष्य प्राप्त कर लोगे। जानते हो इस मार्ग में जो इतने सारे पर्दे पड़े हुए हैं उनका तात्पर्य क्या है? उनका तात्पर्य यह है कि आशिक़ की आँखों की ज्योति दिन प्रतिदिन तीव्र से तीव्र होती जाये ताकि उस परममित्र प्रमात्मा की तेजपूर्ण सुन्दरता को बिना किसी अवरोध के देख सके।"

(फ़वायदे रुकनी)

मानव का अन्त उसके प्रभावी गुण के अनुसार

"ऐ भाई, परमात्मा के विधान का निर्णय है कि प्रलय के दिन हर व्यक्ति का निर्णय उसके कर्मों के लक्ष्य के अनुसार होगा। यदि तुम्हारे हृदय में परमात्मा की चाह और उसका प्रेम भरा हुआ है तो परमात्मा के प्रेमियों और उसके आशिकों के संग तुम्हारा अंजाम होगा। जानते हो उनके लिए पारितोषिक और पुरस्कार क्या है? हुज़ूर पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया-

"निस्संदेह परमात्मा का एक ऐसा स्वर्ग है, जिसमें न तो स्वर्ग की सुन्दरियाँ हैं और न भव्य भवन हैं बल्कि हमारा पालनहार उस स्वर्ग में हँसते हुए दर्शन देता है। यह वह स्थान है जहाँ न स्वर्ग की पहुँच है और न नरक की।
अगर तुम्हारे मन में स्वर्ग का मोह और लक्ष्य प्रभावी है तो पुण्यात्माओं के संग तुम्हारा सदगति होगी और ऐसे लोगों के लिए पवित्र कुरआन के अनुसार फ़िरदौस नामी स्वर्ग, जो सजसजाकर आतिथ्य के लिए तैयार है, का शुभ संदेश प्राप्त होता है और यदि संसार का मोह और इसकी चाह तुम पर प्रभावी है तो संसार वालों के साथ ही तुम्हारा अन्त होगा। ऐसे व्यक्तियों के लिए एक रुकावट और अवरोध का प्रबन्ध है जो उनके और उनकी चाह और लक्ष्य के मध्य खड़ी कर दी गई है। यह वह स्थान है जहाँ सिर पर मिट्टी डालने और अपना मातम करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं अब तुम स्वयं विचार करो कि तुम्हारे मन में लक्ष्य क्या है और किस का मोह है?
परमात्मा की भक्ति और प्रेम प्रभावी है या स्वर्ग का मोह और प्रेम या फिर दुनिया का मोह और लक्ष्य है। तुम्हारे दिल पर जो प्रभावी होगा उसी के अनुसार तुम्हारा अन्त होगा।
अगर किसी पर परलोक का प्रेम और मोह प्रभावी है तो परलोक पूरी सुन्दरता और वैभव के साथ इस प्रकार सामने

आएगा कि इसका प्रेमी इसे देखकर हज़ारों प्राण और जान और सुख चैन की बलि देने लगेगा। जैसा कि किसी ने कहा है-

"इस संसार में जिस वस्तु के तुम दीवाने हो प्रलय के दिन वही वस्तु तुम्हारे समक्ष होगी।"

अगर संसार का प्रेम और मोह तुम पर सवार है तो दुनिया अपनी समस्त बुराईयों और खोट के साथ तुम्हारे सम्मुख लाई जायेगी और दुनिया का चाहने वाला इसे देखकर हज़ारों कठिनाईयों और कष्ट के साथ इस पर जान देने के लिए मजबूर होगा जैसा कि कहा गया है-

"संसार में तुम्हारा जीवन जिन विचारों और जिन लक्ष्यों के लिए व्यतीत हुआ है प्रलय तक तुम्हारा पहुँचने का मार्ग वही रहेगा।"

ऐ भाई, जब यह बात निश्चित है, तो तुम्हें यह भी ज्ञात होना चाहिए कि संसार में जितने जंगली पशु हैं, उनमें कोई न कोई विशेष गुण होता है और मनुष्य में भी वे गुण वर्तमान होते हैं। संसार में मनुष्य के भीतर जिस गुण का प्रभाव होगा कल प्रलय के दिन उसी गुण का आदेश उस पर लागू होगा अर्थात् उसी गुण वाले पशु के शरीर में उसको फल मिलेगा। उदाहारण स्वरूप यदि यहाँ किसी पर क्रोध का गुण प्रभावी है तो कल प्रलय के दिन कुत्ते के रूप में अन्तिम फल मिलेगा। अगर किसी पर वासना का भूत सवार है तो सुअर के रूप में उसका अन्त होगा। इसी प्रकार अगर किसी में अहंकार का गुण प्रभावी है तो बाघ के रूप में उसका अन्त होगा और चापलूसी और चमचागिरी का गुण रखने वाले का अन्तिम रूप लोमड़ी का होगा। इसी प्रकार और दूसरे गुणों को समझना चाहिए।

ऐ भाई, बहुत सारे मनुष्य ऐसे हैं कि जिन को तुम मानव रूप में देख रहे हो लेकिन प्रलय के दिन वे जंगली पशू के रूप में उठाये जायेंगे और बहुत सारे जंगली पशु ऐसे हैं जो

प्रलय के दिन मानव की पंक्ति में खड़े किये जायेंगे। यह कठिन और दुर्गम घाटी है और बड़ा कठोर प्रसंग है। चिन्तन मनन में डूबे रहने वालों के अतिरिक्त किसी को भी इसकी चिन्ता नहीं।

देखो सुस्ती और लापरवाही ठीक नहीं। धीरे-धीरे इस बात की आदत डालनी चाहिए कि इन बुरे गुणों में कमी आती जाये क्योंकि यदि परमात्मा की दया दृष्टि का सहयोग रहा तो अवगुण पूर्णरूप से दूर हो जायेंगे और यह एक बहुत बडी उपलब्धि होगी।

हाँ- जो यह जानना चाहता है कि कल उसके साथ क्या बर्ताव होगा और किस गुण पर उसका अन्त होगा तो उसे चाहिए कि आज ही अपने कर्मों और गुणों का निरीक्षण करे कि उसमें कौन सा गुण प्रभावी है, इसीलिए कि कल प्रलय के दिन उसीके अनुसार अन्त होगा, और यह मालूम करना कोई कठिन कार्य नहीं है।

इसी प्रकार अगर कोई यह जानना चाहता है कि अल्लाह पाक उससे प्रसन्न है या अप्रसन्न तो उसे अपने कर्मों का निरीक्षण करना चाहिए यदि उसके सारे कर्म परमात्मा के आदेशानुसार हैं तो समझ जाये कि परमात्मा की प्रसन्नता उसके संग है क्योंकि आदेशों का पालन प्रसन्नता की पहचान है और यदि उससे सारे कार्य पाप के हो रहे हैं तो समझना चाहिये कि परमात्मा उससे खुश नहीं है। इसलिए कि पाप और अधर्म परमात्मा की अप्रसन्नता की पहचान हैं और यदि पाप और पुण्य दोनों प्रकार के कर्म वह कर रहा है अर्थात् धर्म और अर्धम दोनों हो रहा है तो ऐसी परिस्थिति में जो प्रभावी होगा उसीके अनुसार निर्णय होगा। आज का यह जीवन स्थायी जीवन नहीं है। यहाँ के जो कार्य हैं अगर यहाँ न हो सके तो फिर वहाँ उस लोक में कैसे पूरे होंगे। यदि किसी में बुरे गुण है और वह उन्हें दूर नहीं कर सका तो कल प्रलय के दिन उसे स्वर्ग में प्रवेश

देकर सम्पूर्ण विलास और पुरस्कार उसको प्रदान कर दिया जाये तब भी वह बुरे गुण उस से दूर नहीं होंगे, जो इस संसार में साथ लगे रहे वे लगे ही रहेंगे। ऐसा मनुष्य सम्पूर्ण पुरस्कारों के बावजूद भी भिखारी ही रहेगा और परम मित्र (अल्लाह) तक पहुँचने से असमर्थ ही रहेगा। इसीलिए इसी संसार में परिवर्तन लाना चाहिए अगर यहाँ नहीं हो सका तो वहाँ भी न होगा।"

(फ़वायेदे रुक्नी)

क्षमायाचक निष्पाप व्यक्ति के समान है

सूफ़ी संतों का प्रमुख कार्य यह होता है कि वे लोगों को पापों से पुण्य की ओर लाते हैं। भौतिक सुखों से मन को उचाट कराते हैं और अलौकिक सुख चैन की लालसा जगाते हैं। जीवन से दुष्टता, बर्बता और अकर्मन्यता को दूर कर शिष्टता, नम्रता और कर्म प्रेमी होने के गुण जगाते हैं। प्रत्येक सूफ़ी संत समाज में चेतना, कर्त्तव्यनिष्ठा और मानवता का संचार करने वाला होता है। हज़रत मख़दूमे जहाँ एक महान सूफ़ी संत होने के कारण बड़ी सुन्दरता के साथ इस ओर विशेष ध्यान देते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन इसी लालसा में बीता कि लोग परमात्मा के समीप आयें, पापों से मुक्ति प्राप्त करें, मानवता के गुणों से सुशोभित हों और मोक्ष प्राप्त करें। लोगों की पिशाचता और परमात्मा से अनभिज्ञता उनकी नींद उचाट गई थी इसलिए उनके संकलित प्रवचनों में, पत्रों के संग्रह में और दूसरी पुस्तकों में जो विशेष और प्रमुख संदेश मिलता है उसकी एक झलक फ़वायदे रुकनी नामक पुस्तक के छठे फ़ायदे में इस प्रकार मिलती है:-

" ऐभाई,जन्मसेमृत्युतकपापोंसेएकदमबचारहना फ़रिश्तों और ईश-दूतों की विशेषता है और आदि से अन्त तक पापों में लगे रहना शैतान की विशेषता है तथा पाप करना फिर उससे क्षमा और पुण्य की ओर वापस लौटना (तौबा करना) आदम और उसकी सम्पूर्ण सन्तान अर्थात् मानव की विशेषता है।

मानव केवल पाप के कारण दण्डित नहीं किया जायेगा बलिक पाप के उपरांत तौबा (क्षमा) न मांगने अर्थात् पुण: पुण्य की ओर न लौटने के कारण वह पकड़ा जायेगा। क्या तुम यह नहीं देखते कि यदि मानव ने पाप किया और फिर उस पाप से मुँह मोड़ कर क्षमा याचना करते हुए पुण्य की ओर लौट गया तो समस्त लोग इस पर एकमत हैं कि वह पकड़ा नहीं जायेगा। पाप से क्षमा माँगने वाला उस व्यक्ति केसमानहै,जिसनेपापकियाहीनही

मानव से पाप हो, इसमें आश्चर्य क्यों है? अरे भाई आदमी वासनाओं और इच्छाओं का मिश्रण है। शैतान पीछे पड़ा है उद्दण्ड मन उसके भीतर छिपा हुआ है।

ऐ भाई जैसे भी रहो और जिस काम में भी व्यस्त रहो क्षमा याचना से अचेत मत रहो इसलिए कि अल्लाह पाक के कार्य आज्ञाकारी लोगों की आज्ञाकारिता से परे और पापियों के पापों से अधिक पवित्र और पावन हैं। वह जो चाहता है करता है। उसके कार्यों में कारण का प्रवेश नहीं। इसीलिए महात्माओं ने कहा है:-

"अनुकम्पा तो मात्र अल्लाह की कृपा पर आधारित है, उसका सम्बन्ध न तो कर्म से है और न किसी के गुणों से है।"

ऐ भाई, मानव को चाहिए कि वह स्वंय पाप में दूषित न हो और यदि उससे पाप हो जाये तो जल्दी से जल्दी उस पाप से मुक्त हो जाये, धर्म विधान का निर्णय है कि छोटे से छोटा पाप भी बार-बार करने से छोटा नहीं रहता बलिक बड़ा पाप हो जाता है और बड़े-बड़े पाप को करने के बाद सच्चे दिल से क्षमा याचना (तौबा) कर लेने के बाद वह पाप समाप्त हो जाता है।

ऐ भाई मृत्यु ताक में है। समय भी कम है अचानक कहीं यमदूत का ललाट दिख गया तो फिर क्या होगा? इसलिए कि काम भी अधूरा हैं। देखो यदि तुम पापों में लिप्त और

संलग्न हो तो क्षमा याचना का मार्ग मत छोड़ो और उसकी कृपा और अनुकम्पा के उम्मीदवार रहो। तुम फ़िरऔन के जादूगरों से अधिक पापों में लिप्त तो नहीं हो। गुफ़ा वालों (अहसाबे कहफ़) के कुत्ते से अधिक अपवित्र तो नहीं हो, सीना पर्वत की चोटी (तूरे सीना) के पत्थरों से अधिक निर्जीव और शिथिल तो नहीं हो और हन्नाना की लकड़ी से अधिक मूल्यहीन तो नहीं हो। यदि कोई हबशा से (काले) दास को लाये और उसका नाम कपूर रख दे तो इसमें किसी का कया बिगड़ता है।

(फ़वायदे रुक्नी)

अगर अल्लाह साथ हैं तो यह दिल मस्जिद है।

पापों से मुक्ति और पुण्य से मित्रता तभी हो सकती है जबकि मनुष्य ईश प्रेम में रम जाये और अल्लाह की प्रसन्नता और इच्छा को अपना परम धर्म स्वीकार ले। इसीलिए हज़रत मख़दूमे जहाँ ईश-प्रेम जगाने पर विशेष ध्यान देते थे। इसी ओर रुचि दिलाते हुए लिखते हैं:-

"ऐ भाई तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि इस मार्ग के लिए तजरीद और तफ़रीद आवश्यक है। सम्पूर्ण सम्बन्धों और जीवों से कट जाना तजरीद है और स्वंय अपने आप से जुदा हो जाना तफ़रीद है, वह भी इस प्रकार कि न दिल में कोई मैल हो, न पीठ पर कोई बोझ हो, न किसी प्रसिद्धि की खोज हो, न मन में इच्छाओं का भण्डार हो और न किसी वस्तु से कोई सरोकार हो। हिम्मत सर्वोच्च आकाश की चोटी से भी बुलन्द हो। दोनों लोक से उसे घबराहट हो केवल अपने लक्ष्य (*परममित्र*) से अनुराग हो।

यदि दोनों लोक सौंप दिये जायें और परम मित्र का मिलन न हो तो. कोई खुशी, ख़ुशी न रहे और यदि दोनों लोक छीन लिये जायें और परम मित्र मिल जाये तो कोई दुख, दुख न रहे। किसी महात्मा ने कहा है:-

"अल्लाहकेसंगकोईघबराहटनहींऔरअल्लाहके अतिरिक्त किसी के भी साथ कोई प्रसन्नता और आराम नही"

जिस ने भी कहा है बहुत सुन्दर कहा है:-

*" यदिआपसाथहैंतोयहदिलमस्जिदहैऔरयदिआप
नहीं तो यही दिल अग्निकुण्ड है, बिना आपके यह दिल
नरकहैऔरआपमिलगएतोफिरयहीदिलस्वर्गहै।"
ऐ भाई, अल्लाह के अतिरिक्त जितनी वस्तुएं हैं, उनके
बिना तो गुजारा हो सकता है परन्तु उसके बिना किसी हाल
में भी नहीं रहा जा सकता। ---- जब इस स्थान तक
मानव पहुँच जाता है तो उस समय स्वत्व की इमारतें ढा
देता है, मैं और तू की आखें निकाल देता है, उसकी दृष्टि
में मृत्यु और जीवन एक हो जाते हैं---- खान-पान और
वस्त्र के लिए किसी प्राणी का आभारी नहीं होता, वह
महान हिम्मत वाला गोताखोर अथाह समुद्र में जान पर
खेल जाता है और उसके बदले में रात के अन्धेरे को दूर
कर देने वाला मोती प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति बूढ़ी
औरत (संसार) के तुच्छ दीये के धुएं पर क्या जान देगा,
उसका लक्ष्य तो सर्वशक्तिमान अल्लाह का दरबार होता
है, उसका हाथ अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे की
ओर बढ़ता ही नहीं। उसी की प्राप्ति के लिए पाँव हमेशा
आगे की ओर बढ़ाता रहता है। मान सम्मान और पद की
सवारी को वह पीछे छोड़ देता है।"*

(फ़वायदे रुक्नी)

मेरे पत्रों को कहानी और कथा के जैसे मत पढ़ो

हज़रत मख़दूमे जहाँ अपने लिखे पत्रों को पढ़ने और समझने तथा मार्ग दर्शन के लिए प्रयोग में लाने की विधि इस प्रकार बताते हैं:-

*"(सर्वशक्तिमान अल्लाह के सही परिचय तक पहुँचने के
लिए) एक ऐसी भयानक नदी को पार करना होगा जिसकी
लहरें आदमखोर हैं, न कोई नाव है और न कोई नाविक
केवल इश्क़ (प्रेम) इस नदी की नाव है। ईश्वर की कृपा
नाविक है और इस नदी में भिन्न-भिन्न प्रकार के भय हैं।*

ऐसे में क्या करोगे? इस सन्यासी के शब्दों को सामने रखो, आशा है कि इस नदी की आदमख़ोर लहरों के भंवर से, इनके अध्ययन के कारण सही सलामत पार लग जाओगे। इस नदी को पार करने में जो जो कठिनाइयाँ आयें, उनका उपचार इन ही शब्दों में खोजो, इसलिए कि तुम्हें इन शब्दों के अर्थों का ज्ञान हो चुका है। इस कल्पना के साथ अध्ययन करो कि मानो इसी संन्यासी के मुख से सुन रहे हो

ऐ भाई, मेरे जो भी लेख तुम तक पहुँचे हैं उन्हें पूरी तन्मयता और हृदय की संमुखता के साथ बराबर अध्ययन करते रहो। जिस प्रकार कहानी और कथा पढ़ते हैं उस प्रकार मत पढ़ो।

एक महात्मा से लोगों ने पूछा कि जब ऐसा समय आ जाये कि सदगुरु का सत्संग उपलब्ध न हो तो उस समय क्या करना चाहिए? उन्होंने उत्तर दिया कि महापुरुषों की रचनाओं में से थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन पढ़ लिया जाये, क्योंकि जब सुर्यास्त हो जाता है तो दीये से प्रकाश लिया जाता है।"

एक और स्थान पर अपने पत्रों के अध्ययन की ओर इस प्रकार ध्यान दिलाते हैं:-

तुम भली भाँति जान लो कि परलोक का ज्ञान सूफ़ी संतों और परलोक के ज्ञानियों की बराबर सेवा करने से ही प्राप्त होता है और ये महात्मा और महापुरुष दुर्भाग्यवश हम लोगों के समय में लाल गंधक (दुर्लभवस्तु) हो गये हैं। ऐसे में क्या करोगे बस यह करना है कि जो पत्र तुम को भेजे गए हैं उन में एक दो पत्र प्रतिदिन चिन्तन-मनन के साथ अध्ययन में रखो, यदि एकांत में पढ़ो तो सर्वश्रेष्ठ है और यह पद्य पढ़ो-

" *अगरचीनीकाबोरानहींखरीदसकतातोइतनातोकरसकता हूँकिशक्करकीबोरीपरसेमक्खियाँउड़ाऊँ*"

(फ़वायदे रुक्नी)

हज़रत मख़दूमे जहाँ का कविता प्रेम

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों, प्रवचनों ओर पुस्तकों में फ़ारसी भाषा की उत्तम कविताओं की पंक्तियाँ बहुत बड़ी संख्या में मिलती हैं जिन्हें अर्थ को स्पष्ट करने और मनमोहक बनाने के लिए गद्य के मध्य बड़ी सुन्दरता और दक्षता से हज़रत मख़दूमे जहाँ ने प्रयोग में लाया है। इन में अधिकतर विख्यात फ़ारसी कवियों और सूफ़ी संतों की रचनायें हैं परन्तु कुछ ऐसे पद्य भी हैं, जो किसी भी प्रसिद्ध कवि की कविताओं के संग्रह में नहीं हैं, उनके बारे में विद्ववानों का मत है कि यह स्वंय हज़रत मख़दूमे जहाँ द्वारा रचित पद्य हैं। फ़ारसी की तुलना में अरबी भाषा के पद्य कम प्रयोग में आये हैं।

ऐसे अवसर की भी चर्चा मिलती है कि हज़रत मख़दूमे जहाँ के समक्ष किसी ने कोई पद्य सुनाया तो आप उसे सुनकर व्याकुल हो उठे और आप असामान्य रूप से मत्तता में लीन हो गये।

फ़वायदे रुक्नी में एक सम्पूर्ण अध्याय सूफ़ी मार्ग के विभिन्न स्तरों के अनुरूप केवल पद्यों पर आधारित है जिसमें हज़रत मख़दूमे जहाँ ने विभिन्न कवियों की चयनित पंक्तियाँ एकत्र कर दी हैं।

हज़रत मख़दूमे जहाँ कविता के उत्तम पारखी थे और कविता में कवि के मूल विचार तक पहुँच कर उसका आनन्द लेते थे। यही कारण था कि आपके शिष्य और आगन्तुक आपसे किसी किसी कविता का सही अर्थ जानने का प्रयास भी करते थे और इस सम्बन्ध में भी आप उनका मार्गदर्शन करते थे।

हज़रत मख़दूमे जहाँ को अनगिनत पद्य और कवितायें कन्ठस्थ थीं और आप उनका बड़ी दक्षता के साथ बोलने और लिखने में प्रयोग करते थे। आपकी कविता प्रेम का सबसे प्रबल प्रमाण तो यह है कि आप न केवल प्राचीन कवियों की रचनाओं के ज्ञाता थे बलिक नवीनतम कवियों की रचनायें भी आपके मुख पर रहा करती थीं शेख़ सादी, मौलाना जलालुद्दीन रूमी, शेख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार, अमीर ख़ुसरो, शैख़ शर्फ़ुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर पानीपती इत्यादि की रचनाएं विशेष रूप से आपको स्मरण थीं।

अहमद अली सन्देल्वी ने फ़ारसी भाषा के कवियों की चर्चा पर आधारित अपनी पुस्तक "**मख़ज़नुल ग़राएब**" में आपकी चौपाई उद्धृत की है:-

ऊदम चूनबवद चोबे बेद आवुरदम

रूप सेयहो मुए सपीद आवुरदम

तू ख़ुद गुफ़्ती के ना उम्मीदी कुफ़्रस्त

फ़रमाने तो बुरदमो उम्मीद आवुरदम

एक प्रसिद्ध अरबी पद्य का फ़ारसी अनुवाद आप इस तरह करते हैं

अज़ मारे ग़मत गज़ीदह दारम जिगर

कोरा नकुनद, हेच फ़सूने असरे

जुज़ दोस्त के मन शेफ़ता रूए वयम

अफ़सूनो एलाजे मन नदानद दिगरे

हज़रत मख़दूमे जहाँ और हिन्दवी

भारत वर्ष में सभी सूफ़ी संतों ने जनमानस की भाषा को स्वीकार कर लिखने, बोलने का कार्य किया है और क्षेत्रिय भाषा को बढ़ावा दिया है, यही कारण है कि क्षेत्रिय बोलियों के उत्थान और उनके परिपक्व होने में सूफ़ियों का बहुत बड़ा योगयदान रहा है। हज़रत मख़दूमे जहाँ भी हिन्दवी, जो कि उर्दू हिन्दी का प्रारम्भिक रूप था, स्वंय बोलते थे और दूसरों से सुन कर आनन्द भी उठाते थे।

एक बार किसी ने हज़रत मख़दूमे जहानियाँ जहाँ गशत का कथन "*बाटभलीपरसाँकरी*" आप के आगे दुहराया तो आप भी बोले "*देस भलापरदूर*"

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी अपने एक पत्र में लिखते हैं कि एक बार एक कमान्ची (?) मख़दूमे जहाँ के समक्ष आया और कमान्चा रख कर दोहरा पढ़ने लगा:-

एकत कन्दी बेधा बहुतर मरके गर्दन

चिन्ता हीं मा इच्छा मरण तेतहीं नहीं

मख़दूम इस दोहरे को सुनकर बड़े भाव विभोर हो उठे और आपकी आँखों में पानी भर आया।

मख़दूमे जहाँ के एक कथन में "**भत**" का शब्द उसी अर्थ में प्रयोग में आया है जिस अर्थ में आज भी प्रयोग में है। बिहार में पके चावल के लिए "**भात**" का शब्द प्रयोग में लाया जाता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के निम्नलिखित दोहरे बड़े प्रसिद्ध हुए

जी मगन में है कि आई हैं सुहानी रतियाँ

जिनके कारण थे बहुत दिन से बनाई गतयाँ

शरफ़ा गोर डरावन तिस अन्धारी रात

वाँ न पूछे कोई तुम्हारी जात

हज़रत अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी बताते हैं कि जिस रात हज़रत मख़दूमे जहाँ की मृत्यु हुई, हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी, जो कि अदन (*सऊदीअरबकीएकप्रसिद्धबन्दरगाह*) में थे, स्वप्न में देखा कि हज़रत मख़दूमे जहाँ यह दोहरा पढ़ रहे हैं:-

आई रात सुहाईयाँ

जिन कारन ढइया खाइयाँ

हज़रत मख़दूमे जहाँ की इसी भाषा में कई औषध विधि भी मिलती है जिनमें से कुछ यहाँ लिखी जाती हैं:-

(1)

पात कसैंजी बिख हरे, और फूल रतौंधी जाय
जड़ कसैंजी बाघ रोइन, बीज से हीज न साय

(2)

तिल तीसी दाना तीखुर ताल मखाना
घी शक्कर में साना खाये जनाना हो मरदाना

(3)

लोध फिटकिरी मुर्दा संग हल्दी, जीरा एक एक रंग
अफ़ीम चने भर मिर्चें चार कराओ बराबर थोथा डार
पोस्त के पानी से पोटरी करे नीन का बीद उतरते हरे

(4)

नून मिरिच मजीठ ले आवे नीला थोथा आग जलावे
लोध पैठानी कथ पापड़या पीस बराबर मंजन करया
मंजन करके पान चबावे दाँत का पीरा कभू न पावे

(5)

हर बहेड़ा आँवला चीता तनिक सोंठ मिलादे मीता
खाँसी साँसी सब जर जाय अन्न न जानूँ कितना खाये

हज़रत मख़दूमे जहाँ की हिन्दी कविताओं की चर्चा करते हुए मौलवी अब्दुल हक लिखते हैं-

"वे पूरबी और हिन्दी भाषा के कवि थे। अब तक उनके बताये हुए मन्त्र साँप बिच्छू और साये के उतारने और रोग से मुक्ति के लिए झाड़ फूँक में पढ़ते हैं, जिनके अन्त में उन की दुहाई होती है। प्रोफ़ेसर शीरानी ने अपनी पुस्तक में मौलाना महबूब आलम साहब की ब्याज़ से एक कजमुन्दरा अनुकृत किया है। मेरे एक मित्र को भी इस प्रकार के साँप का विष उतारने का मन्त्र याद है उसमें भी शाह साहब (*हज़रतमख़दूमे जहाँ*) की दुहाई है। इन मंत्रों और कजमुन्द्रों से उस समय की पूरबी बोली का कुछ अनुमान होता है अलबत्ता उसमें दो दोहरे आ गए हैं वे ध्यान देने योग्य हैं वे यह हैं-

काला हन्सा न मिला बसे समुन्दर तीर
पंख पसारे मक्का हरे निर्मल करे शरीर
दर्द रहे न पीड़
शरफ़ हरफ माएल कहीं दर्द कुछ न बसाय
गुरू छूएं दरबार के सो दर्द दूर हो जाय"

(उर्दू की इब्तेदाई नश्वोनुमा में सुफ़ियाए केराम का काम)

आपके प्रवचनों के अध्ययन से पता चलता है कि आप योग विद्या से भी भली भाँति परिचित थे और उस विद्या की परिभाषाओं को अच्छी तरह जानते थे।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के अन्तिम क्षण

हज़रत मख़दूमे जहाँ की शिक्षा और संदेश में मृत्यु की तैयारी और मृत्यु के बाद के जीवन के प्रति चिन्ता पर विशेष बल मिलता है। जीवन के अच्छे बुरे कार्यों के फलस्वरूप जो बदला परलोक में मिलता है उसका आरंभ मृत्यु काल से ही हो जाता है। किसी की मृत्यु के समय उस की दशा देखकर ही यह पता चल जायेगा कि उससे परमात्मा प्रसन्न है या अप्रसन्न। इसलिए बड़े-बड़े सूफ़ी संत अपने मृत्यु के समय की दशा के लिए चिंतित रहते और उसकी तैयारी में जुटे रहते। हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों और प्रवचनों में बार-बार आक़बत और आख़रत अर्थात् अंत,

अन्जाम, परिणाम की चिन्ता और स्मरण पर असामान्य बल देखने को मिलता है। आपके अंतिम क्षणों में आपकी यही शिक्षा जीवित होकर सामने आई। हज़रत ज़ैन बदरे अरबी ने उस समय का आँखों देखा हाल लिख लिया था, जो कि आज बहुमूल्य दस्तावेज़ के तुल्य है। यहाँ उसका सारांश लिखा जाता है।

बुध का दिन था और **782** हिजरी के शव्वाल मास की पाँचवीं तिथि (**2, जनवरी 1380**) मैं सेवा उपस्थित हुआ। प्रातः की नमाज़ के बाद उस नई कुटिया में जिस को मलकुश्शरक़ निज़ामुद्दीन ख़्वाजा मलिक ने निमार्ण कराया था सज्जादा (*नमाज़पढ़नेकीदरी*) पर तकिया से सहारा लगाय बैठे थे। शैख़ ख़लीलुद्दीन (*सगेभाईऔरशिष्य*) तथा दूसरे मित्र और शिष्य जो लगातार कई रात्री से आपकी सेवा के लिए जागते रहे थे, जिनमें क़ाज़ी शमसुद्दीन, मौलाना शहाबुद्दीन (*जोख़्वाजामीनाकेभाँजे थे*), मौलाना इब्राहिम, मौलाना आमूँ, क़ाज़ी मियाँ, हेलाल, अक़ीक़ और दूसरे प्रिय शिष्य उपस्थित थे। आप कभी कोई मंत्र जाप करते और सभी से जाप कराते और अधिकतर अल्लाह पाक की महानता और बड़ाई का बखान करते, उसके प्रति कृतज्ञता और आभार प्रकट करते। इसके बाद मख़दूम कुटिया से बरामदे में पधारे और तकिया का सहारा लिया, थोड़ देर बाद अपने पवित्र हाथों को इस प्रकार फैलाया जैसे किसी से हाथ मिलाना चाहते हों। फिर आपने क़ाज़ी शमसुद्दीन का हाथ अपने हाथ में ले लिया और देर तक लिये रहे, फिर उनका हाथ छोड़ दिया। अपने सेवकों और शिष्यों को विदा करने का आरम्भ उन्हीं से हुआ। फिर क़ाज़ी ज़ाहिद का हाथ पकड़ कर अपने पवित्र छाती पर रखा और फ़रमाया-

"हमवहीहैं,हमवहीहैं" फिरफ़रमाया" हमवही(परमात्माके) दीवानेहैं,हमवहीदीवानेहैं"

फिर अपने स्वभाव के अनुसार संतों के प्रति आदर भाव और अपनी तुच्छता और हीनता व्यक्त करते हुए बोले-

"नहीं बलिक हम उन दीवानों की जूतियों तले की ख़ाक हैं। फिर उपस्थित लोगों में से हर एक की ओर संकेत किया और हर किसी के हाथ और दाढ़ी को चूमा तथा सभी से विशेष रूप से अल्लाह पाक की दया, कृपा और क्षमा के उम्मीदवार रहने को कहा और पूरी आवाज़ से

पवित्र क़ुरआन का एक टुकड़ा पढ़ा जिसका अर्थ था कि "*अल्लाहकी दया और कृपा से निराश मत हो, अल्लाह सारे पापों को निश्चित ही क्षमा करदेगा*" उसके बाद उपस्थितगणों की ओर मुँह करके बोले- कल तुम से (*परलोकमें*) प्रश्न करें कि क्या लेकर आये हो तो यही कहना कि मैं आपका वही आदेश लाया हूँ जिसमें आपकी दया और कृपा से निराश न होने के लिए कहा गया है। अगर मुझ से भी पूछेंगे तो मैं भी यही कहूँगा। उसके बाद विभिन्न जाप और प्रार्थना पढ़ते रहे फिर मौलाना तक़ीउद्दीन अवधी की ओर अपना हाथ फैलाया और बोले- "*अन्तशुभ हो*" और उन पर बड़ी कृपा और दया की फिर मौलाना आमूँ को पुकारा। मौलाना आमूँ कुटिया के भीतर थे वे सुन कर दौड़ते हुए आये। आपने उनका हाथ पकड़ लिया और अपने पवित्र मुखमण्डल पर मलने लगे और बोले तुमने बड़ी सेवा की, तुम्हें नहीं छोड़ूँगा, निश्चिंत रहो, एक ही जगह रहेंगे। अगर प्रलय के दिन पूछेंगे क्या लाये हो? तो कहना वही "*अल्लाह की कृपा से निराश मत हो निश्चित ही अल्लाह सभी पापों को क्षमा कर देगा।*" अगर मुझ से प्रश्न करेंगे तो मैं भी यही उत्तर दूँगा। मित्रों से कहो धीरज रखें। अगर मेरी प्रतिष्ठा रह गई तो मैं किसी को नहीं छोड़ूँगा। उसके बाद हेलाल और अक़ीक़ की ओर ध्यान दिया और बोले- तुम ने हम को बहुत प्रसन्न रखा, हमारी बड़ी सेवा की। जैसे हम तुमसे प्रसन्न रहे हैं, तुम भी प्रसन्न रहोगे। उस समय आप के दोनों पाँव हेलाल की गोद में थे और उन की दशा पर आप की बड़ी कृपा थी। उसके बाद एक-एक करके सभी शिष्य आपके समीप आते गये और आप सभी पर कृपा दृष्टि डालते, एक दो वाक्य में उनकी सेवा की चर्चा करते, आर्शीवाद देते और विदा करते जाते और बीच-बीच में पवित्र क़ुरआन के अंश पढ़ते जाते, प्रार्थना और जाप करते जाते। नमाज़ का समय आता तो नमाज़ भी पढ़ते जाते यहाँ तक की मग़रिब (*सध्या*) की नमाज़ के बाद आप जाप और प्रार्थना में पूरी तरह डूब गये जब एशा (*रात्री*) के नमाज़ का समय आया तो पवित्र क़ुरआन का वह कथन दुहराया जिसमें अल्लाह के मित्रों के लिए भय और दुख से मुक्ति का वचन दिया गया है फिर ला इलाहा इल्लल्लाह (*अल्लाहकेअतिरिक्तकोईभीपूज्यऔरउपासनाकेयोग्य नहीं*) कहा और अपना मुख बन्द कर लिया। फिर एक बार *बिस्मिल्लाहिर्रमा*

निर्रहीम (अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालू और कृपालू है) कहा और प्राण त्याग दिया।

यह घटना एशा (*रात्री*) की नमाज़ के समय 6, **शव्वाल वृहस्पतिवार** की रात्री में **782 हि०/1380 ई०** की है। उस समय हज़रत मख़दूमे जहाँ की आयू **121** वर्ष की थी। वृहस्पतिवार के दिन दोपहर से पहले इस महापुरूष को अपनी माताश्री के सटे धरती को सौंप दिया गया।

लतायफ़े अशरफ़ी नामक पुस्तक के अनुसार आप ने मृत्यु से पहले यह वसीयत की थी कि मेरे जनाज़े की नमाज़ ऐसा व्यक्ति पढ़ायेगा जो कि सैयद वंश का हो, राजपाट को छोड़ कर संत मार्ग अपनाने वाला और सात शैलियों से पवित्र क़ुरआन के पठन में सक्षम हो।

वसीयत के अनुसार आप का जनाज़ा तैयार करके लोगों की अभूतपूर्व संख्या इस इंतेज़ार में थी कि वसीयत पूरी किस तरह होती है तभी हज़रत सैयद अशरफ़ जहाँगीर नामी तेजस्वी युवक ने अंगरक्षकों और सिपाहियों के साथ बिहार में प्रवेश किया, वे सिमनान का राजपाट त्याग कर सच्चे गुरू की खोज में निकले हुए थे और हज़रत मख़दूमे जहाँ की महिमा सुन कर इस ओर आ रहे थे। वे धर्म विद्या में निपुण थे और सातों शैलियों से पवित्र क़ुरआन के पाठ करने में भलीभाँति पारंगत थे। अर्थात उनमें तीनों गुण विद्यमान थे इसलिए उन्हें ही हज़रत मख़दूमे जहाँ के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के दफ़न होने के बाद हज़रत सैयद अशरफ़ जहाँगीर सिमनानी आपकी दरगाह पर आत्मलाभ के लिए रूके फिर लाभान्वित होकर आज्ञा प्राप्त की और बंगाल के मालदा जिला में पण्डवा की ओर प्रस्थान किया जहाँ हज़रत अलाउल हक़ पण्डवी से मुरीद हुए और ख़िलाफ़त प्राप्त कर अपने समय के महान सूफ़ी संत हुए।

बड़ी दरगाह

हज़रत मख़दूमे जहाँ की मृत्यु से 6 वर्ष पहले आपके सगे मौसेरे भाई और प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत मख़दूम अहमद चिरमपोश की मृत्यु हुई तो उनके दफ़न के समय हज़रत मख़दूमे जहाँ भी अम्बेर गये और उस समय वहाँ उपस्थित रहे। हज़रत मख़दूमे जहाँ वहाँ से लौटे तो नगरीय क्षेत्र को छोड़कर आबादी से बाहर अपनी माताश्री के मज़ार पर आये और अपनी कब्र का स्थान स्वंय सब को बताया और आपने शिष्यों में से भी जो साथ थे, उन्हें भी उसी स्थान पर उनको अपने समीप कब्र के लिए स्थान बाँट दिया। उस समय आपकी माताश्री के मज़ार पर एक गुम्बद निर्मित था, जिसे 775 हि० में हज़रत इब्राहीम मलिक बया के सुपुत्र मलिक दाऊद ने एक चबूतरे के साथ निर्माण कराया था।

782 हि०/1380 ई० में हज़रत मख़दूमे जहाँ के इस स्थान पर दफ़न होने के बाद से ही यह स्थान विशेष महत्व और श्रद्धा का अनुपम केन्द्र बन गया और बड़ी दरगाह कहलाने लगा। यह पावन स्थल नगरीय क्षेत्र से बाहर दक्षिणी छोर पर स्थित है, जिसे पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हुई पंजानी नदी नगर से काटती थी। अब यह नदी सूख सी गई है। यह इलाक़ा दस्तावेज़ों के अनुसार हुजूरपूर मेंहदौर कहलाता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ का पवित्र मज़ार बड़ी दरगाह क्षेत्र के केन्द्र में स्थित है और चारों ओर कच्ची पक्की अनगिनती कब्रें स्थित हैं। मौलाना सैयद शाह अबू सालेह मुहम्मद यूनस शुऐबी के अनुसार कब्रों का सिलसिला जिन जमीनों में फैला हुआ है यह ज़मीन लगभग 64 एकड़ होगी। इसीसे बड़ी दरगाह के विशाल क्षेत्र का अनुमान लगाया जा सकता है। अपनी माताश्री की क़ब्र बनने के बाद से हज़रत मख़दूमे जहाँ यहाँ बराबर आते थे। एक बार वृद्धावस्था और अस्वस्थता के कारण डोली पर सवार होकर शबे बराअत में वहाँ आपके आने की चर्चा मूनिसुलमुरीदीन में भी मिलती है। आप वहाँ नमाज़ भी पढ़ते थे और आप के नमाज़ पढ़ने का एक विशेष स्थान भी था। आज तक वह स्थान मख़दूम जहाँ के मुसल्ले के नाम से मौजूद है और वर्तमान मस्जिद के बरामदे में बायें किनारे पर है।

मख़दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार के ठीक सामने, पश्चिम ओर, मस्जिद के बरामदे से सटे दक्षिण, खुले प्रांगण में एक पत्थर वर्तमान है जिस पर बैठकर हज़रत मख़दूमे जहाँ वज़ू (*धर्मविधानकेअनुसारपवित्रहोनेके लिएमूँहहाँथधोना*) करते थे और कभी-कभी पत्थर से सटकर बैठ जाते थे। यही कारण है आज तक आपके वार्षिक उर्स के मुख्य आयोजन में जो ईद के मास में पाँचवीं तिथि को **12** बजे रात्रि में आप की दरगाह पर सम्पन्न होता है, आपके सज्जादानशीन उसी पत्थर से उसी प्रकार सटकर आपकी दरगाह की ओर मुख करके बैठते हैं और कुल पढ़ा जाता है। इस पत्थर की विशेषता बताते हुए मौलाना अबू साएम मुहम्मद यूनस लिखते हैं:-

> " *इसकीविशेषताअभीभीहैकिगर्मीयोंकेमौसममें*
> *कड़ी धूप में, बारह बजे दिन में यह पत्थर खुले प्रांगण में*
> *पड़ारहताहैऔरगर्मनहींहोताहै।* "

हज़रत मख़दूमे जहाँ के पवित्र चरणों के पास थोड़ा स्थान छोड़ कर आपके सगे भाई हज़रत ख़लीलुद्दीन का मज़ार है और उनके मज़ार के समनांतर हज़रत मख़दूमे जहाँ के दूसरे शिष्यों के मज़ार बने हुए हैं, जिनमें पूर्व की ओर हज़रत ज़ैन बदरे अरबी और उन की माता की कब्रें भी स्थित हैं। हज़रत ख़लीलुद्दीन के चरणों के पीछे मज़ारों की पंक्ति में हज़रत मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीनों की कब्रें हैं, जिनको लोहे की रेलिंग से घेर कर स्पष्ट कर दिया गया है। इनमें हज़रत शाह वलीउल्लाह, हज़रत शाह अमीरूद्दीन, जनाब हुज़ूर शाह अमीन अहमद, हज़रत शाह बुरहानुद्दीन, जनाब हुज़ूर शाह मुहम्मद हयात, जनाब हुज़ूर शाह मोहम्मद सज्जाद के मज़ार पूर्व से पश्चिम की ओर क्रमानुसार हैं। इस पंक्ति के पीछे की पंक्ति में दिवंगत सज्जादानशीन जनाबहुज़ूर सैयद शाह मुहम्मद अमजाद और उनके सटे पूरब हज़रत शाह वली उल्लाह के पिता हज़रत शाह अलीमुद्दीन दुरवेश का मज़ार है। यह सभी अपने-अपने काल में हज़रत मख़दूमे जहाँ की गद्दी की शोभा बढ़ा चुके हैं। इसी क्षेत्र में मख़दूम के शिष्य और प्रिय सेवक शेख़ चुल्हाई और शिष्य तथा रसोईये फ़तूहा के मज़ार भी स्थित हैं। हेलाल और अक़ीक के भी मज़ार इसी आस पास घेरे हुए मौजूद हैं। हज़रत मख़दूमे जहाँ के कुछ दूसरे शिष्यों और सगे

सम्बन्धियों के मज़ार भी इसी क्षेत्र में हैं। बड़े-बड़े सूफ़ी संत, महात्मा और अपने-अपने काल के विशिष्ट व्यक्ति इस क्षेत्र में चिर नींद्रा में लीन है। हज़रत मख़्दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार के उत्तर सिरहाने में तोशाख़ाना है, जिसमें दरगाह पर चढ़ने वाली भेंट रखी जाती है। इसी तोशाख़ाना में हज़रत मख़्दूमे जहाँ के 23 वें सज्जादा हज़रत शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी के समय से, उनके आदेशानुसार मख़्दूमे जहाँ के प्रयोग में लाई गई और दूसरी पवित्र वस्तुऐं (*तबर्रूकात*) रखी हुई हैं। पहले यह तबर्रुकात ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में रहते थे। हर वर्ष वार्षिक उर्स के अवसर पर ईद की 8 तीरख़ को सज्जादानशीन के प्रतिनिधि द्वारा इन्हें आमदर्शन के लिए रखा जाता है।

हज़रत मख़्दूमे जहाँ की दरगाह शरीफ़ लगभग 600 वर्षों तक आकाश की नीली छत्री में जगमगाती रही अब सुन्दर भव्य गुम्बद बन गया है। हज़रत मख़्दूमे जहाँ की दरगाह शरीफ़ की सुन्दरता देखते बनती है। हर समय प्रात: हो या संध्या, दोपहर हो या रात्री यहाँ आश्चर्यजनक रूप से हार्दिक शांति और आलौकिक छत्रछाया का आभास होता है। देर रात में आपके मज़ार के दर्शन का तो पूछना ही क्या। शांत वातावरण में आपकी महिमा तनिक और उजागर होकर चमकती है और ह्रदय को छू जाती है। बड़े-बड़े संत महात्माओं और ज्ञानियों ने आपकी दरगाह शरीफ़ पर अपनी उपस्थिति दर्ज करके आत्मलाभ और आलौकिक सुख प्राप्त किया और तृप्त हुए हैं। राजा से लेकर रंक तक की मनोकामना यहाँ पूरी होती आई है। सुबह से रात तक यहाँ श्रद्धालुओं का मेला सा लगा रहता है। दूर-दूर से हर धर्म और जाति के लोग बड़े आदर और श्रद्धा के साथ यहाँ का दर्शन कर धन्य होते हैं।

901 हि०/1495-96 ई० में सिकन्दर लोदी आपकी दरगाह शरीफ़ में श्रद्धांजली अर्पित करने बिहार शरीफ़ आया और दरगाह के बाहर दीन दुखियों, निर्धनों को दान दक्षिणा दे कर लौटा।

हर काल में यहाँ राजा, महाराजाओं और प्रशासन ने श्रद्धा स्वरूप और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए निमार्ण कार्य कराया है। सूरवंश के शासकों ने अपने शासन काल में दरगाह शरीफ़ के चारों ओर मकान, मुसाफ़िरख़ाना, मस्जिद और हौज़ का निर्माण कराया था और फ़ौवारा भी

लगवाया था।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के नौवें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह अख़वन्द फ़िरदौसी के काल में स्वतंत्र शासक सुलेमान केरारानी[1] ने **977** हिजरी/**1569-70** ई० में बड़ी दरगाह में महत्वपूर्ण निर्माण कार्य कराया। दरगाह शरीफ़ में प्रवेश के लिए अन्तिम द्वार जो सन्दली दरवाज़ा कहलाता है वह उसी के द्वारा निर्मित है। इस द्वार के शीर्ष पर 3'.11''-x 9.5'' का उसका शिलालेख विद्यमान है।

इसी द्वार के दाहिनी ओर हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी का हुजरा[2] है सन्दली दरवाजे से ठीक उत्तर सतह से थोड़ी ऊँची सतह पर मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के हुजरे के सामने उनके ख़लीफ़ा शैख़ जमाल औलया अवधी का मज़ार और हुजरा है।

सन्दली द्वार से पहले दरगाह शरीफ़ में प्रवेश के दूसरे द्वार का निर्माण शैख़ सलाहुद्दीन ने कराया था। इसी द्वार से सटे पूरब दीवार के निकट एक पंक्ति में बने मज़ार भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के सज्जादाशीनों के हैं।

सम्राट अकबर को भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रति श्रद्धा थी। उसके नौरत्नों में से एक अबुलफ़ज़ल ने आईने अकबरी में हज़रत मख़दूमे जहाँ और उनके पत्रों की भूरी-भूरी प्रशंसा की है।

बादशाह जहाँगीर भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के प्रतिश्रद्धा रखता था। उसने **1033** हि० में अपने समकालीन हज़रत मख़दूमे जहाँ के **13** वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह अब्दुस्सलाम फ़िरदौसी की सेवा में मौज़ा मसादिर पूर की जागीर फ़रमान के द्वारा भेंट की थी।

---

(1) सुलेमान खाँ करारानी पठान सरदारों में से एक था। शेरशाह सूरी के पुत्र इस्लामशाह के शासन काल में वह बिहार का गर्वनर नियुक्त हुआ। इस्लाम शाह की मृत्यु के उपरांत राजनीति ने ऐसी करवट बदली कि इसने बिहार बंगाल में अपना स्वतंत्र शासन सुदृढ़ कर लिया। सुलेमान करारानी ने बंगाल और बिहार पर 1565 से 1572 ई० के मध्य शासन किया। अकबर के शासन सुदृढ़ करने पर सुलेमान ने उसे प्रसन्न करके अपने क्षेत्र पर अपने शासन को बचा लिया था और अकबर के दरबार से हज़रते आला की उपाधि भी प्राप्त कर ली थी। परन्तु उसके पुत्र और उत्तराधिकारी दाऊद खाँ ने, जिसकी चर्चा भी बड़ी दरगाह के शिलालेख में है, अपनी गतिविधियों के कारण अकबर से मुकाबला कर, न केवल शासन गँवाया बलिक अपनी जान से भी हाथ धो बैठा।

(2) हुजरा एक ऐसी छोटी कुटिया को कहते हैं जो केवल आराधना और उपसना के लिए बनाई जाती है। यह न तो ऊँची होती है कि खड़ा हुआ जा सके और न इतनी लम्बी होती है कि लेट कर पैर फैलाया जा सके। इसका प्रवेश द्वार भी छोटा होता है और प्रकाश तथा वायु के लिए एक छोटा रौशनदान रहता है।

बादशाह शाहजहाँ भी इस एतिहासिक दरगाह शरीफ़ की महत्ता के प्रति जागरूक था। उसके शासन काल में बिहार के सूबेदार हबीब ख़ाँ सूर ने 1056 हि०/ 1646-47 ई० में हज़रत मख़दूमे जहाँ के 14 वें सज्जादा नशीन मख़दूम शाह ज़कीउद्दीन के काल में महत्वपूर्ण निर्माण कार्य कराये। उसने बड़ी दरगाह क्षेत्र में एक ईदगाह का निर्माण कराया और पक्की ईंटों से उसके फ़र्श को पक्का बनाया तथा दरगाह शरीफ़ में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ईदगाह के पीछे पश्चिम में एक हौज़ (*तालाब*) बनवाया उसे हौज़े शरफुद्दीन नाम दिया जो आज तक मख़दूम तालाब के नाम से मौजूद है। ईदगाह की दीवार में उसके निर्माण कार्य का 4'.10'' x 1' का शिला लेख मौजूद है।

इस तालाब की एक विशेषता यह भी थी कि हज़रत मख़दूमे जहाँ के मज़ार शरीफ़ के पास से पानी की निकासी इस तालाब में ताँबे के पाईप के द्वारा की गई थी। जब कभी हज़रत मख़दूमे जहाँ के मज़ार को गुस्ल दिया जाता या वर्षा होती है तो उस पवित्र क्षेत्र का पानी इसी तालाब में गिरता था। वह ताँबे का परनाला मख़दूम तालाब में पहले दिखाई देता था। परन्तु अब नहीं है।

शाहज़ादा अज़ीमुश्शान ने भी अपने गर्वनरी काल में हज़रत मख़दूमे जहाँ के मज़ार शरीफ़ बड़ी दरगाह में हाज़री दी और निर्माण कार्य में विशेष रुचि दिखाई उसने मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के हुजरे का नवनिर्माण कराया और ईद एवं बक़रईद के अवसर पर विशिष्ट भोज का प्रबन्ध कराया। इस भोज का राजकीय स्तर पर प्रबन्ध मुगल शास्कों के काल में बहुत दिनों तक चलता रहा।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के 15 वें सज्जादानशीन हज़रत शाह वजीहुद्दीन के काल में मुगल शासक फ़र्रुखसियर ने भी कई गाँव हज़रत मख़दूमे जहाँ की दरगाह और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के खर्चे के लिए बड़ी श्रद्धा के साथ भेंट किये। जिसका फ़रमान ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के पुस्तकालय में मौजूद है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के 19 वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी के नाम से मुहम्मद शाह रंगीला ने मौज़ा हुज़ूरपूर में मेहदौर और कई गाँव हज़रत मख़दूमे जहाँ के उर्स और ख़ानक़ाह के ख़र्चे

के लिए भेंट किया।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के 20 वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह अलीमुद्दीन दुरवेश फ़िरदौसी के काल में शाह आलम द्वितीय ने बिहार शरीफ़ बड़ी दरगाह और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में हाज़री दी और कई गाँव हज़रत मख़दूमे जहाँ के उर्स के खर्चे के लिए भेंट किये और दरगाह के मार्ग में दीन, दुखियों, मजबूरों और भिखारियों पर उसने बड़ी संख्या में चाँदी के इतने फूल लुटाये के सबके आँचल भर गए। शाह आलम के कई फ़रमान ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के पुस्तकालय में मौजूद हैं। शाह आलम द्वितीय ने मिस्टर जॉज़ेफ़ जैकेल बहादुर को तत्कालीन सज्जादाशीन हज़रत शाह अलीमुद्दीन के साथ विशिष्टता बरतने और उनके आदर सत्कार करने का भी निर्देश दिया था, जिसका फ़रमान भी मौजूद है।

1171 हि० में नवाब मीर जाफ़र भी बड़ी दरगाह में श्रद्धा पूर्वक हाजिर हुआ और हयाते सबात नामी हस्तलिखित पुस्तक के अनुसार वस्तुएं दरगाह शरीफ़ में भेंट कीं।

उस काल में महाराजा शताब राय और महाराजा कल्याण सिंह आशिक भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के वार्षिक उर्स में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्मिलित हुआ करते थे और दरगाह के समीप निर्धनों का खुल कर दान दक्षिणा देते थे।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के 20 वें सज्जादानशीन हज़रत शाह अलीमुद्दीन की मृत्यु के बाद जब उनके एक मात्र अल्पायु पुत्र हज़रत शाह वलीउल्लाह मख़दूमे जहाँ के 21 वें सज्जादानशीन हुए तो उनकी सज्जादाशीनी और तौलियत का सत्यापन भी शाह आलम ने एक विशेष फ़रमान के द्वारा किया और उसमें उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कड़े निर्देश दिये।

राजा बोध नारायण भी दरगाह के भक्तों में से थे उन्होंने भी कुछ गाँव दरगाह शरीफ़ और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के खर्चे के लिए भेंट किये थे वह भेंट पत्र भी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में सुरक्षित है।

मख़दूमे जहाँ का वार्षिक उर्स समारोह चिरागाँ

हज़रत मख़दूमे जहाँ के स्वर्गवास को 636 वर्ष बीत गए अर्थात इस वर्ष आपका 636 वाँ उर्स समारोह आयोजित होगा। हज़रत मख़दूमे जहाँ के वार्षिक उर्स के इस प्राचीन आयोजन का बिहार और बंगाल की संस्कृति पर गहरा प्रभाव रहा है। आपके वार्षिक उर्स में उमड़ने वाली भीड़ में हर धर्म और सम्प्रदाय के लोग बड़ी श्रद्धा और कामना के साथ सम्मिलित होते हैं। भारत वर्ष में अजमेर शरीफ़ को जो प्रसिद्धि प्राप्त है, और वहाँ के वार्षिक उर्स का जो महत्व है वही बिहार और बंगाल में बिहार शरीफ़ को प्राप्त है।

रमज़ान शरीफ़ के पवित्र मास के बाद ईद की ख़ुशियों के साथ-साथ मख़दूमे जहाँ के वार्षिक उर्स का भी शुभागमन हो जाता है। हज़रत मख़दूमे जहाँ का वार्षिक उर्स **चिरागाँ** कहलाता है। किसी स्थान को दीयों के प्रकाश से प्रकाशित करने को चिरागाँ कहते हैं चूँकि हज़रत मख़दूमे जहाँ के उर्स के अवसर पर बड़ी दरगाह और उस ओर आने वाले बिहार शरीफ़ नगर के सभी मार्ग दीयों, मशालों, फ़ानूसों इत्यादि के प्रकाश से जगमगा उठते थे इसलिए यह आयोजन चिरागाँ प्रसिद्ध हो गया। रमज़ान के महीने से ही हज़रत मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीन उर्स की तैयारियों में संलग्न हो जाते हैं। दरगाह शरीफ़ की मरम्मत, चूनाकारी, पेंटींग, श्रद्धालुओं की सुविधा के उपाय होने लगते हैं। उर्स शरीफ़ का मुख्य दिवस तो ईद की पाँच तारीख़ है, लेकिन ईद के बाद से ही लोगों का समूह दरगाह शरीफ़ और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म पहुँचने लगता है और हर घर अतीथियों से आबाद हो जाता है। सार्वजनिक स्थानों पर ख़ेमे गड़ जाते हैं और सराये भर जाती है। पाँच तारीख़ आते-आते पूरा दरगाह क्षेत्र श्रद्धालुओं से पूर्णत: भर जाता है।

उर्स शरीफ़ के विशेष कार्यक्रम मख़दूमे जहाँ की ख़ानक़ाह

मुअज़्ज़म में सम्पन्न होते हैं। जहाँ ईद की पाँच तारीख़ प्रातः से ही पवित्र क़ुरआन का जाप और क़ुल का आरम्भ हो जाता है और लंगर बँटने लगता है। शाम 4 बजे के बाद से ख़ानक़ाह में हज़रत मख़दूमे जहाँ के अनमोल पत्रों की शिक्षा का कार्यक्रम होता है। तथा रात्रि के उस समय जबकि हज़रत मख़दूमे जहाँ की मृत्यु हुई थी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में उस समय का आँखों देखा हाल सुनाया जाता है, जिसे सुन कर हर व्यक्ति भावविभोर हो उठता है। फिर एशा (*रात्रि*) की नमाज़ के बाद मख़दूमे जहाँ का प्रसाद लंगर सभी को खिलाया जाता है। इसके बाद 12 बजे रात्रि के समीप सज्जादानशीन दरगाह शरीफ़ जाने की तैयारी करते हैं और पारम्परिक वेश भूषा में डोली पर बैठकर श्रद्धालुओं की अपार भीड़ में मशालों के मध्य जब वे दरगाह शरीफ़ की ओर चलते हैं तो अजीब अनोखा मनमोहक दृष्य होता है। हर एक श्रद्धालु इसका प्रयास करता है कि मख़दूमे जहाँ के सज्जादाशीन के पवित्र हाथों को चूम सके नहीं तो फिर केवल स्पर्श मात्र करने का ही सौभाग्य प्राप्त कर ले।

12 बजे रात्रि में सज्जादानशीन दरगाह में पधारते हैं सीधे मख़दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार पर जाकर परम्परानुसार हाज़री देते हैं, फिर गुम्बद से निकल कर खुले प्रांगण में हज़रत मख़दूमे जहाँ के स्थान पर आसीन होते हैं और पवित्र क़ुरआन का पाठ (*क़ुल*) सम्पन्न होता है।

क़ुल के बाद सज्जादानशीन सभी श्रद्धालुओं की मनोकामना की पूर्ति और जनकल्याण, विश्व शांति तथा सदभाव के लिए प्रार्थना करते हैं। फिर सभी को अर्शीवाद देते हुए डोली पर ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म लौट आते हैं। तब ख़ानक़ाह में प्रारम्भ होती है सूफ़ी परम्परानुसार क़व्वाली, जिसमें ईश प्रेम जगाने वाली कवितायें, पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की स्तुतियाँ और हज़रत मख़दूमे जहाँ की महिमा में कही गई कविताएं से लोगों को भावविभोर कर डालती हैं। यह आयोजन सुबह की नमाज़ तक चलता है। सुबह की नमाज़ के उपराँत बाँस की बनी

टोकरियों में रोटी और हलवा तथा कोरे घड़े में शरबत ला कर रखा जाता है और हज़रत मख़दूमे जहाँ तथा उनके पीरो मुर्शिद शैख़ नजीबुद्दीन फ़िरदौसी के पवित्र आत्मा के लिए कुल पढ़ा जाता है।

इसके बाद सज्जादानशीन के साथ सभी उपस्थित सूफ़ी संत व श्रद्धालुगण अपने-अपने हाथों में लम्बोतरे मृदभाँड (*गागर*) लिये हुए ख़ानक़ाह से निकल कर समीप ही मख़दूम बाग़ में जाते हैं और वहाँ से सभी अपने-अपने गागर में मख़दूमे जहाँ के नियाज़ के लिए पकने वाले भोजन हेतु पानी भरकर लाते हैं। पानी लाने और आने के क्रम में क़व्वाल साथ-साथ यह पारम्परिक बोल विशेष राग में गाते हुए चलते हैं-

(गागर लेकर जाते समय)

शरफ़ा जहाँ के
सोंधे आँचल बोर
सोनी की तेरी घयलया रे
रेशम पाग की डोर
सब पन्हरियाँ भर-भर गैलीं
अपनी-अपनी ओर

(पानी भर कर लौटते समय)

शाहे शरफ़ जी मैं तो से माँगूँ
आनन्द, सुख, सम्पत्ति, ईमाँ
शाहे शरफ़ जी मैं तो से माँगूँ

6 तारीख़ को रात में गागर में लाये पानी से बना खाना नेयाज़ होता है और सभी में बाँटा जाता है और 9 तारीख़ तक उर्स समारोह के अन्तर्गत ख़ानक़ाह में सज्जादानशीन से अशीर्वाद प्राप्त करने के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है और परम्परानुसार कव्वाली और पवित्र जाप तथा लंगर का सिलसिला भी चलता रहता है।

हज़रत मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीनों की स्वर्णिम श्रृंखला

हज़रत मख़दूमे जहाँ के परलोक सिधारने के समय मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी अदन (*अरबकीएकप्रसिद्धबन्दरगाह*) में थे। अपने धर्मगुरू की मृत्यु के बाद बिहार पहुँचे और हज़रत मख़दूमे जहाँ के पहले सज्जादानशीन हुए।

1. मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी
(782-803 हि० 1380-1401 ई०)

आप हज़रत मख़दूमे जहाँ के पहले सज्जादानशीन हुए और लगभग 21 वर्षों तक इस पद पर रहकर मख़दूमे जहाँ के मार्ग का अनुसरण करते रहे।

आप का पैतृक देश बल्ख़ था, जो कि अविभाजित सोवियत रूस का एक भाग था। आपके पिता शैख़ शमसुद्दीन बल्ख़ी अपने देश के राजपरिवार से सम्बन्धित थे बल्कि राजपाट त्याग कर सपरिवार भारत चले आये थे और यहाँ किसी सम्मानित पद पर आसीन रह कर सच्चे गुरू की खोज में व्यस्त थे। बिहार के महान सूफ़ी संतों की शुभ चर्चा सुनकर बिहार शरीफ़ पधारे और हज़रत मख़दूम अहमद चिरमपोश के मुरीद हो कर यहीं के हो रहे। आपके बाद आपका परिवार भी बिहार शरीफ़ आ गया। अपने परिवार के साथ मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी भी बिहार शरीफ़ आये तब आप एक तेजस्वी छात्र थे और आपके अन्दर असामान्य मेधा छिपी हुई थी। प्रकृति में वाद-विवाद करने और बिना प्रमाण और दलील के किसी बात को न मानने की विशिष्टता थी। इसीलिए ऐसे ज्ञानी गुरू की खोज थी जो इस कसौटी पर खरा उतरे।

अपने पिता के गुरू मख़दूम चिरमपोश के पास मन नहीं लगा तो मख़दूमे जहाँ की सेवा में पहुँचे और कुछ ज्ञान, विज्ञान की उलझी गुत्थियाँ उनके समक्ष रखीं। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने बड़े ध्यान से उनके प्रश्नों को सुना और उत्तर देना प्रारम्भ किया। मौलाना मुज़फ़्फ़र हर उत्तर को यह कहकर काटते गए कि मैं इसे स्वीकार नहीं करता हूँ परन्तु हज़रत

मख़दूमे जहाँ बड़े धैर्य और स्नेह के साथ उत्तर देते गए यहाँ तक कि आप हज़रत मख़दूमे जहाँ के ज्ञान के गुरुत्वाकर्षण के शिकार होकर मन्त्रमुग्ध हो गये और वाद विवाद छोड़ अपने शिष्यों में सम्मिलित कर लेने की विनती करने लगे। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने जिनकी दिव्यदृष्टि आपके भविष्य को भलीभाँति देख रही थी, मुस्कुरा कर आपको मुरीद कर लिया और फ़रमाया प्रिय, जिस मार्ग में तुम मेरे साथ चलना चाहते हो, उस मार्ग में ज्ञान अतिआवश्यक है। तुम ने अब तक जो शिक्षा ग्रहण की उसका उद्देश्य पद और आदर सम्मान प्राप्त करना था इसलिए वह शिक्षा तुम्हें कोई विशेष लाभ न पहुँचा सकेगी। अब मात्र अल्लाह के लिए शिक्षा ग्रहण को अपना उद्देश्य बनाओ और शोध में लग जाओ तब जो ज्ञान प्राप्त होगा, वह इस मार्ग में बड़ा सहायक सिद्ध होगा।

आप एक बार फिर दिल्ली गये और लगभग 2 वर्षों तक अहंकार और इच्छा को मार कर अध्ययन तथा शोध में व्यस्त रह कर लक्षय प्राप्त किया और कुछ दिनों तक फ़िरोज़ शाह तुग़लक के द्वारा स्थापित मदरसे में प्रधानध्यापक भी रहे। फिर पीरो मुर्शिद के वियोग ने इतना सताया कि बिहार शरीफ़ आ गये और हज़रत मख़दूमे जहाँ की सेवा में रहने लगे। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उन्हें ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म के लंगर ख़ाने का प्रबन्ध सौंपा और धीरे-धीरे आप हज़रत मख़दूमे जहाँ की छत्र-छाया में रहकर तप और साधना के मार्ग को पार कर अपने गुरू के सबसे प्रिय शिष्य हो गये। स्वंय हज़रत मख़दूमे जहाँ आपका आदर करते और आप पर असामान्य कृपा और स्नेह की दृष्टि रखते।

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी भी हज़रत मख़दूमे जहाँ के आदर और प्रेम की प्रतिमूर्ति थे। यहाँ तक कि हज़रत मख़दूमे जहाँ जैसे पीर और मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी जैसे मुरीद का उदाहरण दिया जाने लगा।

आपने हज़रत मख़दूमे जहाँ की ही तरह पत्राचार के द्वारा ज्ञान प्रकाश फैलाने का कार्य किया। बड़े-बड़े प्रशासनिक अधिकारी, राजे-महाराजे आपके भक्तों में थे। सूफ़ी संतों के मध्य आपकी महिमा का गुणगान होता था। हज़रत शैख़ नसीरूद्दीन चिराग़ देहलवी से आपकी मित्रता थी। उन तक हज़रत मख़दूमे जहाँ के पत्रों का संग्रह अध्ययन हेतु, आप ही के द्वारा पहुँचा था। बंगाल का स्वतंत्र शासक सुल्तान ग़ेयासुद्दीन भी आपका भक्त

था और आप की सेवा में बड़े आदर से पत्र लिखता था और आप भी उसके पत्रों का उत्तर देते रहते थे। हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के कुल 181 पत्र प्राप्त हैं। सभी पत्र उच्च कोटी की भाषा में हैं और इनकी विषयवस्तु बड़ी ही विद्वतापूर्ण है। मुझे सुल्तान गेयासुद्दीन के भी कुछ बहुमूल्य पत्र प्राप्त हुए हैं, जो मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के नाम हैं।

पत्रों के अतिरिक्त आपकी निम्नलिखित रचनाएं भी मिलती हैं।

(1) कविताओं का संग्रह (*दीवान*) (प्रकाशित)

(2) शरह अक़ायदे निस्फ़ी की व्याख्या

(3) रिसाला मुज़फ़्फ़रिया दर हिदायते दुरवेशी

(4) मशारेक़ुल अन्वार का फ़ारसी रूपान्तरण

आप 803 हिजरी के रमज़ान मास की तीन तारीख़ को अदन में परलोक सिधारे और जन्नतुल अदन में दफ़न हुए। उस समय आपके प्रिय भतीजे, शिष्य और ख़लीफ़ा मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद बल्ख़ी आपके संग थे। आप ने उन्हें अपने बाद मख़दूमे जहाँ का दूसरा सज्जादानशीन मनोनित कर भारत जाने का निर्देश दिया था।

आपके प्रमुख ख़लीफ़ा निम्नलिखित हुए

(1) मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद

(2) मौला क़मरूद्दीन बल्ख़ी (*छोटेभाई*)

(3) हज़रत जमाल औलिया अवधी

2. मख़दूम हुसैन बिन मुइज़ नौशए तौहीद बल्ख़ी

(803-844 हि०/1401-1441 ई०)

आप हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के सगे भतीजे, प्रिय शिष्य और ख़लीफ़ा हज़रत शैख़ मुईज़ुद्दीन बल्ख़ी के पुत्र तथा हज़रत शम्स बल्ख़ी के पौत्र थे।

आप का जन्म ज़फ़राबाद (*जौनपूरसेपूर्वमें4मीलकीदूरीपर स्थितएकएतिहासिकनगर*) में हुआ। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने आप के जन्म की सूचना मिलने से पूर्व ही हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी को इसकी सूचना दी और अपनी ओर से शुभ कामना व्यक्त की तो हज़रत मौलाना को बड़ा आश्चर्य हुआ परन्तु जब मौलाना मुइज़ की चिट्ठी मिली

तो इस पूर्व सूचना की पुष्टि हो गई। हज़रत मख़दूमे जहाँ ने आपके लिए अपना एक पवित्र वस्त्र इसलिए प्रदान किया कि इससे नवजात शिशु का वस्त्र बनाया जाये तथा अपने एक रूमाल से नवजात शिशु के लिए एक टोपी भी सिलवा कर भेजी जो कि छठी के दिन मख़दूम हुसैन के सिर पर सुशोभित हुई। इस पवित्र टोपी में आश्चर्यजनक विशेषता यह थी कि हज़रत मख़दूम हुसैन ने इसे जीवन भर पहना जब सिर से उतारते छोटी प्रतीत होती और जब पहनते तो सिर पर सही होती। जब मख़दूम हुसैन की मृत्यु हुई तो आपके सम्बन्धियों और शिष्यों ने कहा कि इस पवित्र टोपी को आपकी छाती पर रख दिया जाये या इसे जीवन की ही भाँति पहना दिया जाये। हज़रत मख़दूम हुसैन के एक प्रिय शिष्य हज़रत सैयद मीर कोतवाल ने अपने हाथ से वह टोपी आपके सिर पर पहनाई तो उस समय भी वह ठीक आई।

एक बार हज़रत मख़दूमे जहाँ को मौलाना मुज़फ़्फ़र वज़ू करा रहे थे और हज़रत मख़दूमे जहाँ ने अपनी पवित्र पगड़ी को उतार कर नमाज़ पढ़ने के स्थान पर रखा हुआ था। मख़दूम हुसैन बच्चे थे, खेलते हुए आये और पवित्र पगड़ी अपने सिर पर रख नमाज़ के स्थान पर खड़े हो नमाज़ पढ़ने का रूप धारण कर लिया। जब मौलाना मुज़फ़्फ़र ने देखा तो उन्होंने आप को ऐसे खिलवाड़ से रोकना और मना करने का प्रयास किया तो हज़रत मख़दूमे जहाँ ने उन्हें देखकर फ़रमाया कि मौलाना मुज़फ़्फ़र क्यों रोकते हो, वह अपने स्थान को पहचानता है। इस प्रकार हज़रत मख़दूमे जहाँ ने आपके बचपन में ही आपके अपने उत्तराधिकारी होने की भविष्यवाणी कर दी थी।

एक दिन हज़रत मख़दूमे जहाँ ने फ़रमाया कि "*मौलानामुज़फ़्फ़रहम और तुम परिश्रम करते हैं लेकिन इसका पारिश्रमिक प्रिय हुसैन को प्राप्त होगा।*"

एक बार हज़रत मख़दूमे जहाँ ने फ़रमाया कि "*मैंनेतनूर (तन्दूर) कोगर्मकियाऔरमुज़फ़्फ़रनेरोटीपकाईऔरखायेंगेप्रियहुसैन।*"

हज़रत मख़दूम हुसैन को बचपन से ही हज़रत मख़दूमे जहाँ का सत्संग प्राप्त रहा फिर हज़रत मख़दूमे जहाँ से ही मुरीद होने का भी सौभाग्य प्राप्त किया और हज़रत मख़दूमे जहाँ के चरित्र का आप पर बड़ा

गहरा प्रभाव रहा। आपने सूफ़ी वाद की एक प्रमुख पुस्तक "**अवारिफ़ुल मआरिफ़**" के आधे भाग की शिक्षा हज़रत मख़दूमे जहाँ से प्राप्त की थी। परन्तु आगे की शिक्षा के लिए हज़रत मख़दूमे जहाँ ने फ़रमाया था कि मेरा अन्तिम समय समीप है पर तुम चिन्ता मत करो शैख़ बदीउद्दीन शाह मदार इस देश में पधारने वाले हैं, तुम इस पुस्तक का शेष भाग उनकी सेवा में जाकर पूरा कर लेना।

जब शाह मदार भारत वर्ष में पधारे और जौनपूर पहुँचे तो मख़दूम हुसैन उनकी सेवा में पहुँचे। उन्होंने आप पर बड़ी कृपा की और उन्होंने ही आपको "**समन्दरे तौहीद**" की उपाधि दी और शेष पुस्तक की शिक्षा पूर्ण की तथा अपनी ओर से आपको ख़िलाफ़त भी प्रदान की।

आप की शिक्षा और दीक्षा हज़रत मख़दूमे जहाँ के आदेशानुसार हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी के देख रेख में हुई। हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने आपकी शिक्षा-दीक्षा में कोई कसर नहीं उठा रखी साथ ही इतना प्रिय रखते कि किसी को इसका आभास नहीं हो पाता कि यह आपके सगे पुत्र नहीं बलिक भतीजे हैं।

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी जब अरब गए तो मख़दूम हुसैन को भी साथ लेते गए। चार साल पवित्र मक्का नगर में रहकर मख़दूम [illegible]न ने प्रसिद्ध विद्वान शैख़ शमसुद्दीन ख़्वारिज़मी से क़ुरआन के पाठ की शिक्षा ली। तथा काबा के पवित्र और पावन क्षेत्र में ठीक काबा के स[illegible]ने मुक़ामे इब्राहिम में पवित्र क़ुरआन के पठन की सातों शैलियों में इस विद्या के प्रकाण्ड विद्वान शैख़ शमसुद्दीन हलवाई से दक्षता प्राप्त की। इसके अतिरिक्त पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के प्रवचनों क पवित्र संग्रह *सहीमुस्लिम* और *सहीबुख़ारी*की प्रारम्भ से अन्त तक शब्दश: शिक्षा अपने चाचा हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी से प्राप्त की। पवित्र मक्का में दूसरे विद्वानों से भी लाभान्वित होकर स्वंय भी शिक्षा जगत में प्रसिद्ध हो गए तो मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने अपने ओर से दूसरों के मार्गदर्शन के लिए अधिकृत करते हुए ख़िलाफ़त भी प्रदान कर दी।

मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी की मृत्यु के समय आप उनके साथ अदन में ही थे और उनकी मृत्यु के बाद आदेशानुसार बिहार लौटे और हज़रत मख़दूमे जहाँ के दूसरे सज्जादानशीन का पदभार संभाला और लगभग 41

वर्ष तक हज़रत मख़दूमे जहाँ की गद्दी की शोभा बढ़ाते रहे।

हज़रत मख़दूम हुसैन बड़े शक्तिशाली महान और अति लोकप्रिय सूफ़ी संत गुजरे हैं। आपके पौत्र शैख़ अहमद का कथन है कि हज़रत मख़दूम हुसैन के तेजस्वी मुखमण्डल और दिव्यशक्ति परिपूर्ण काया वाला कोई दूसरा संत देखने में नहीं आया। महानता और दिव्य प्रकाश के कारण सामने से आपके मुखमण्डल को देखने की हिम्मत न होती थी। जब आप किसी ओर देखते या पवित्र सिर को झुकाये रखते तो अच्छी तरह दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता था।

हज़रत मख़दूम हुसैन फ़रमाते थे कि लोग मुझको समझते हैं कि मैं दीवारों के भीतर बैठा हूँ लेकिन सम्पूर्ण संसार मेरे समीप एक प्याले पानी के बराबर है कि जो कुछ दूसरे के भीतर है मुझे स्पष्ट दिखता है।

हज़रत मख़दूम हुसैन ने मक्का के पवित्र नगर में निवास करते हुए एक दरूद* का संकलन किया जो कि इस प्रकार था-

"अल्लाहुम्मासल्लेअलामुहम्मदिनवअलाआलेमुहम्मदिन अदद ख़लक़ेका व रेज़ाअ नफ़सेका व ज़ेनता अर्शेका व मेदादा कलेमातेका"

इस दरूद के संकलन के बाद आपके गुरू और चाचा, हज़रत मौलना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी ने आधी रात को स्वप्न में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को देखा कि फ़रमाते हैं कि *"मुज़फ़्फ़रइस*

(*) इस्लाम धर्म में सलात या दरूद की बड़ी महत्ता और लाभ है। दरूद ऐसी विनती का नाम है, जिसमें परमात्मा से यह निवेदन किया जाता है कि आप अपने प्रिय चयनित पैग़म्बर (दूत) हज़रत मुहम्मद और उनकी सन्तान पर अपनी अपार कृपा और दया दृष्टि की वर्षा कीजिये तथा उनपर अपने शुभ नाम सलाम की छाया रखिये।

पवित्र क़ुरआन में भी इस सम्बन्ध में यह सूचना मिलती है कि स्वंय प्रमात्मा, पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद पर अपार दया और कृपा की वर्षा करता रहता है और उसके ईशदूत भी दरूद नामक विनती करते रहते हैं इसलिए प्रमात्मा के आदेशों के प्रति समर्पित मानवों को चाहिये कि वे भी उसके प्रिय पैग़म्बर हेतु यही विनती बारंबार करते रहें।

दरूद नामक विनती से प्रमात्मा बड़ा प्रसन्न होता है और हर वह मनोकामना जिसके आरम्भ और अंत में तीन बार दरूद पढ़ लेते हैं वह शीघ्र पूर्ण होती है। दरूद की महिमा में अत्याधिक कथन और इसके लाभ के सम्बन्ध में ढेर सारे बखान मिलते हैं। सूफ़ी संतों के यहाँ इस के जाप की विशेष महत्ता है। स्वंय पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कई प्रकार के दरूद अपने शिष्यों (सहाबियों) को सिखाये थे। बिना दरूद के पैग़म्बर मुहम्मद का शुभ नाम लेना उचित नहीं है इसलिए उनके शुभ नाम के साथ लघुतम दरूद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) अवश्य कहा जाता है। अनेक सूफ़ी संतों ने दरूद के मूलभूत अव्यवों को रखते हुए स्वंय भी दरूद की रचना की है।

रात को तुम्हारे भतीजे ने मुझ को ऐसा उपहार भेंट किया है कि आज तक किसीनेऐसाउपहारबहुतकमभेजाहै" तथा यह भी प़रमाया कि "*पहलेकेवलएकहुसैनमेरेप्रियथेअर्थातअलीकेपुत्रहुसैनअबदो हुसैन मेरे प्रिय हुए एक वही अली के पुत्र हुसैन और दूसरे मुईज़ के पुत्र हुसैन (तुम्हारेभतीजे)*"

मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी की आँखें खुलीं तो उसी समय शैख़ हुसैन के कमरे पर गये और द्वार खटखटाया फिर स्वंय पहले सलाम किया और बड़े आदर भाव के साथ अपना स्पप्न उनको सुनाया तो मख़दूम हुसैन ने उन्हें दरूद के संकलन के बारे में बताया। उन दिनों जो लोग पवित्र काबा के दर्शन हेतु आये हुए थे उनमें तीस या चालीस पारंगत संत और ईशमित्र थे, उन सबने रात्रि में स्वप्न में पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया और सभी को आदेश प्राप्त हुआ कि शैख़ मुज़फ़्फ़र के भतीजे ने दरूद संकलन कर मुझे भेंट किया है उसको कन्ठस्थ करलो। सुबह हुई तो हर एक हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र के पास आये और अपना-अपना स्पप्न सुनाया और दरूद सुनकर याद किया और जहाँ से आये थे वहाँ इस पवित्र दरूद को लेकर लौट गये।

हज़रत मख़दूम हुसैन की सेवा में जो कोई भी आता धनी हो . निर्धन, किसी भी धर्म का हो, आप उसे उस की अवस्था के अनुसार कु़ छ देकर विदा करते। खाली हाथ कोई कम ही फिरता।

हज़रत मख़दूम हुसैन के काल में ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म की छटा ही निराली थी। तीस, चालीस सूफ़ी संत ख़ानक़ाह में ऐसे रहते थे जो कि प्राय: हर समय पवित्र अवस्था में प्रमात्मा के ध्यान में लीन, जाप और चिन्तन मनन में व्यस्त रहते थे। कठोर साधना और तप का क्रम चलता रहता था। आपके काल में उच्च कोटी के पद्य गाने वाले क़व्वाल 60 और 70 की संख्या में एकत्र होकर गाते थे और जहाँ तक दृष्टि काम करती थी बड़े-बड़े सूफ़ी संत, प्रशासनिक अधिकारी, राजपरिवार के सदस्य और गणमान्य व्यक्तियों की भीड़ होती थी।

मख़दूम हुसैन अरबी और फ़ारसी भाषा के उद्भट विद्वान थे और धर्म विज्ञान में पारंगत थे। हदीस (पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद के प्रवचनों का अध्ययन) में आपकी विशेष रुचि थी।

भारत वर्ष म हदीस की शिक्षा के प्रचार प्रसार में आपका योगयदान महत्वपूर्ण और आधारभूत है।

आप के मुरीदों और शिष्यों की संख्या भी बहुत अधिक थी। देश, विदेश में आपके शिष्य फैले हुए थे। आपने भी हज़रत मख़दूमे जहाँ की भाँति पत्राचार के द्वारा ज्ञान के प्रसार का कार्य बड़ी व्यापकता के साथ किया। आपको पत्रों की शैली और उनका स्वरूप भी हज़रत मख़दूमे जहाँ से मिलता जुलता है। आपके **200** पत्रों की एक पाण्डुलिपि गतवर्ष मैं ने हैदराबाद के आसफ़िया ग्रन्थालय में खोज निकाली है, जिसमें उच्च कोटी के सूफ़ी दर्शन और इस्लामी धार्मिक विधाओं का समावेश है। इन पत्रों के उर्दू अनुवाद में श्री डाक्टर सैयद अली अरशद साहब शरफ़ी (*गुलज़ार इब्राहीम,भैंसासुरबिहारशरीफ़*) व्यस्त हैं और वे शीघ्र ही प्रकाशित होकर अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होंगे।

आपकी मृत्यु का समय समीप आया तो आपके सुपुत्र, शिष्य, मुरीद और उत्तराधिकारी हज़रत हसन दायम जश्न बल्ख़ी ने बड़ी निराशा के साथ अनुरोध किया कि हम को धार्मिक या सांसारिक जैसी भी आवश्यकता होती थी उसकी पूर्ति आप की सेवा में हो जाती थी। अब आप हम से विदा हो रहे हैं तो हमारा क्या होगा। आप ने फ़रमाया-

> "*क्यों चिन्ता करते हो, अल्लाह पाक के मित्रों को जो अधिकार और शक्ति इस लोक में प्राप्त है वह उस लोक में जाकर दोगुनी हो जाती है, क्योंकि इस संसार में आत्मा बन्दी है, तुरंत पूर्व और पश्चिम में नहीं जा सकती लेकिन जब शरीर से अलग हुई तो पलक झपकते आ, जा सकती है और पल भर में एक संसार का काम कर सकती है। इसलिए तुम्हें कोई आवश्यकता हो तो मेरी ओर ध्यान करना और हज़रत मख़दूमे जहाँ से विनती करना, अगर अल्लाह की सहमति हुई तो तुम्हारी आवश्यकता अवश्य पूर्णहोजायेगी।*" आज भी यह विधि कारगर है।

हज़रत मख़दूम हुसैन **844** हि०/**1441** ई० के ज़िलहिज्जा मास की **24** तारीख़ को परलोक सिधारे और बड़ी दरगाह से पश्चिम कुछ बाँस की दूरी पर पहाड़पूरा नामक स्थान में आप की दरगाह बनी।

आप के प्रसिद्ध **ख़लीफ़ा** निम्नलिखित हुए

(1) हज़रत हसन दायम जशन बल्ख़ी (*सुपुत्र*)
(2) हज़रत शैख़ सुलेमान बल्ख़ी (*पुत्र*)
(3) हज़रत शैख़ मूसा बनारसी
(4) हज़रत कुत्बुद्दीन बीनाए दिल जौनपूरी
(5) हज़रत सैफुद्दीन बल्ख़ी
(6) हज़रत बहराम बिहारी
(7) हज़रत इल्म मनेरी

आपकी रचित **पुस्तकें** निम्नलिखित हैं-

(1) हज़रात ख़म्स (*अरबीभाषामें*)
(2) रिसाला क़ज़ा व क़द्र
(3) रिसाला तौहीद अख़स्सुल ख़वास
(4) रिसाला दर ब्याने हश्त चीज़
(5) रिसाला तौहीदे ख़ास
(6) औराद दह फ़सली
(7) पत्रों का संग्रह
(8) फ़ारसी कविताओं का संग्रह (*दीवान*)
(9) मसनवी ज़ादुल मुसाफ़ेरत
(10) रिसाला दर शमाएलो ख़साएले नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम
(11) मसनवी चहार दरवेश

आपके प्रवचनों को आपके एक प्रिय मुरीद क़ाजी नेमतुल्लाह ने संग्रहित कर "**गन्जे ला यख़फ़ा**" नाम दिया है। यह भी एक बहुमूल्य संग्रह है।

3. हज़रत मख़दूम हसन दायम जश्न बल्ख़ी

(844-855 हि०/1441-1451 ई०)

आप अपने पिता श्री, हज़रत मख़दूम हुसैन के बाद मख़दूमे जहाँ के तीसरे सज्जादानशीन हुए और लगभग 11 वर्षों तक उस पवित्र गद्दी को शोभान्वित करते रहे।

आपकी शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से ही हुई। आप भी अपने समय के

महान सूफ़ी सन्त हुए हैं। आप में दान शीलता की प्रवृति बड़ी मुखर थी। घर में कुछ रखना आप को पसन्द न था यहाँ तक कि हज़रत मख़दूम हुसैन ने एक बार उनकी इस प्रवृत्ति के बारे में फ़रमाया कि–

" *प्रियहसनकोअगरघरभरधनदौलतमिलजाये,फिर*
भी यह कुछ ही दिनों में उसे बाँटकर निश्चिंत हो जायें।
बल्किअगरपावेंतोहमेंभीकिसीकोदेदें।"

आपने अपने पिताश्री, हज़रत मख़दूम हुसैन की अरबी भाषा में रचित पुस्तक "**हज़रात ख़म्स**" की फ़ारसी भाषा में सुन्दर व्याख्या का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। आप ने हज़रत मख़दूम हुसैन के पत्रों को भी एकत्र कर अपनी भुमिका के संग एक संग्रह का रूप दिया।

आपके सुपुत्र हज़रत अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी बताते हैं कि एक बार उनकी माताश्री बहुत बीमार हुईं और दिन प्रतिदिन उनका रोग बढ़ता ही गया और उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं बची। उधर कई दिनों से पिताश्री (*मख़दूमहसनदायमजश्नबल्ख़ी*) पहाड़ी पर थे। जब वे घर लौटे तो अपनी पत्नी के चारों ओर अपने बच्चों को रोते हुए देखा तो बड़े दुखी हुए और बोले कि मैं इन बच्चों को बिन माँ का नहीं देख सकता फिर मेरा हाथ पकड़ा और पहाड़पूरा मख़दूम हुसैन की दरगाह पर आये और मख़दूम हुसैन के चरणों पर सर रख दिया। थोड़ी देर बाद सिर उठाया अपने हाथ से वहाँ जिस स्थान पर आज उनकी मज़ार है एक चिह्न लगा दिया। फिर उसी जगह आपको ज्वर आ गया। यहाँ तक कि आप स्वंय चलकर घर न आ सके। हम लोग डोली में लेकर आपको घर आये। दो, तीन दिन के बाद दिनांक सोमवार **855** हि०/**1451** ई० में शाबान की इक्कीसवीं तिथि को परलोक सिधार गए और अपने बच्चों को बिन माँ का नहीं देखा। आप की मृत्यु के 9 दिन बाद माताश्री की मृत्यु हुई।

आपकी क़ब्र हज़रत मख़दूम हुसैन के चरणों में स्थित है।

आप की रचनाओं में फ़ारसी भाषा में दो **पुस्तकें** प्रसिद्ध हैं–

(1) काशेफ़ुल असरार (हज़रात ख़म्स की व्याख्या)

(2) लताएफ़ुल मआनी

4. हज़रत मख़दूम अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी फ़िरदौसी

(855-891 हि०/1451-1486 ई०)

आप अपने पिताश्री के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के चौथे सज्जादाशीन हुए और लगभग 36 वर्ष तक इस गद्दी की शोभा रहे।

आपका जन्म रमज़ान की 27 तारीख़ को 826 हिजरी में हुआ था। जन्म के बाद चालीस दिनों तक आपकी आँखें बन्द रहीं जिसके कारण घर वाले बड़े चिंतित थे लेकिन आपके दादा हज़रत मख़दूम हुसैन ने लोगों को सन्तावना दी और चालीस दिनों तक लगातार चाश्त की नमाज़ पढ़ कर अपने पवित्र मुखस्राव को आपकी बन्द आँखों पर मलते रहे। अन्तत: चलीसवें दिन आखें खुलीं और आपको इस संसार में पहला दर्शन मख़दूम हुसैन का प्राप्त हुआ। आप बराबर अपने दादा की सेवा में रहे और उनसे ही शिक्षा प्राप्त करते रहे।

हज़रत मख़दूम हुसैन आपकी शिक्षा-दीक्षा में विशेष रुचि लेते थे और बराबर उच्च से उच्चतर शिक्षा की प्राप्ति के लिए उत्प्रेरित करते रहते थे। अपनी बीमारी की ही अवस्था में आपको अक़ायद की प्रसिद्ध पुस्तक **"शरह अक़ायदे निस्फ़ी"** मौलाना मुज़फ़्फ़र रचित व्याख्या के संग पढ़ाई और ढेर सारे आर्शीवाद दिये।

एक बार पवित्र मक्का के दर्शन के लिए आप सपरिवार भ्रमण कर रहे थे कि समुद्र में तेज़ आँधी के कारण जहाज़ डूबने लगा और बचने की कोई आशा नहीं रही। सारे यात्री मृत्यु को सामने देखने लगे। इस अवस्था में आप परमात्मा के ध्यान में लीन होकर कहने लगे कि ए अल्लाह मैं तेरे इस कार्य से भी सहमत हूँ अवश्य ही इसमें भी कोई भलाई छिपी होगी। उसी समय आप की सुपुत्री फ़ातिमा को ऊँघ आई तो उसने हज़रत अली को स्वप्न में देखा कि वे तसल्ली दे रहे हैं कि तुम लोग चिंतित न हो, तुम्हारा जहाज़ सुरक्षित रहेगा। इसके बाद जहाज़ ख़तरे से बाहर हो गया। इसी कारण आप लंगर दरिया प्रसिद्ध हो गए।

एक दिन एक व्यक्ति फ़रीद नामी एक छोटी सी टोपी लिये हुए आप की सेवा में आये और कहने लगे कि मेरे जन्म होने पर मेरे पिता ने हज़रत मख़दूम हुसैन से मेरे लिए एक टोपी माँगी थी। हज़रत मख़दूम ने एक

बचकानी टोपी प्रदान की थी, जिसे छट्ठी के दिन पहनाया गया था। अब वह टोपी मेरे सिर पर नहीं आती है, बहुत छोटी है। मैं ने विचार किया कि आप की सेवा में इस के बारे प्रश्न करूँ देखूँ क्या आदेश होता है। आप ने वह टोपी ली और दोनों हाथ उसके अन्दर देकर फिराने लगे और हज़रत मख़दूमे जहाँ के मख़दूम हुसैन को टोपी भेजने और उसके जीवन भर पहनने की कथा सुनाने लगे। जब कथा समाप्त हुई तो उनको समीप बुलाया। फ़रीद समीप आये और सिर झुकाया आपने *बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम* कह कर उनके सर पर रखा तो इतनी बड़ी थी कि भवों तक पहुँची।

आप रमज़ान की 19 तारीख़ को 891 हि० में परलोक सिधारे आप की दरगाह भी पहाड़पूरा में मख़दूम हुसैन की दरगाह में प्रवेश से पहले ही कब्रिस्तान में एक सामान्य घेरे के भीतर है।

आप के प्रवचनों का संग्रह "**मूनिसुलक़ुलूब**" के नाम से विख्यात है। फ़ारसी भाषा में यह अभी तक हस्तलिखित है। हज़रत मख़दूमे जहाँ और उनके सज्जादानशीनों के विषय में इस प्रवचन संग्रह से बहुमुल्य सूचनायें प्राप्त होती हैं।

इसके अतिरिक्त फ़ारसी कविताओं का एक संग्रह भी आप की यादगार है। आपके प्रसिद्ध ख़लीफ़ा आपके सुपुत्र हज़रत मख़दूम इब्राहिम बल्ख़ी हुए।

5. हज़रत मख़दूम इब्राहिम सुल्तान बल्ख़ी फ़िरदौसी

(891-914 हि०/1486-1508-09 ई०)

आप अपने पिता के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के पाँचवें सज्जादानशीन हुए और लगभग 23 वर्षों तक इस पद पर आसीन रहे।

आप भी अपने काल के लोक प्रिय सूफ़ी संत गुज़रे हैं। आपके पाँच पुत्र थे। (1) हाफ़िज़ बल्ख़ी (2) महमूद बल्ख़ी (3) दुरवेश बल्ख़ी (4) शाहीन बल्ख़ी (5) दौलत बल्ख़ी

रमज़ान की 19 तारीख़ को 914 हिजरी में आपकी मृत्यु हुई। आप की दरगाह बिहार शरीफ़ में गंगन दीवान की दरगाह से पहले काँटा पर है।

6. हज़रत मख़दूम हाफ़िज़ बल्ख़ी फ़िरदौसी

आप अपने पिता के बाद 914 हिजरी में हज़रत मख़दूमे जहाँ के छठे सज्जादानशीन हुए। आप एक महान संत के वंशज और स्वंय भी एक महान संत थे आपके समय में ही हज़रत मख़दूमे जहाँ के वशंज में से एक सूफ़ी संत हज़रत मख़दूम शाह भीख, बड़ी दरगाह बिहार शरीफ़ में अपने स्वास्थ की कामना से आकर रहने लगे तो मख़दूम के वंशज होने के कारण आपने उनका इस सीमा तक आदर सत्कार किया कि स्वंय उन्हें अपने स्थान पर मख़दूमे जहाँ का सज्जादाशीन बना कर धन्य हो गए। आपने बिहार शरीफ़ में ही अपने गुरूओं की भाँति लोगों की शिक्षा-दीक्षा और कल्याण में समय बिताया।

आप का मज़ार बड़ी दरगाह क्षेत्र प्रारम्भ होने से पहले मिलने वाले तिराहे के समीप नवनिर्मित हबीब खाँ मार्केट के भीतर बल्ख़ी मुहल्ले में स्थित है। आप के पुत्र हज़रत जीवन बल्ख़ी का मज़ार भी साथ ही है। हज़रत जीवन बल्ख़ी के वंशज बिहार शरीफ़ से फुलवारी शरीफ़ के समीप मौज़ा बेउर चले आये थे और फिर वहाँ से फ़तूहा में आकर बस गए। रायपूरा फतूहा (*पटना*) में आज तक आप के वंशज की यादगार मौजूद है और हज़रत मौलाना सैयद शाह अलीमुद्दीन बल्ख़ी वर्तमान सज्जादाशीन हैं।

7. हज़रत मख़दूम सैयद शाह भीख फ़िरदौसी

हज़रत मख़दूम हाफ़िज़ बल्ख़ी के जीवन में ही उनके स्थान पर मख़दूमे जहाँ के सातवें सज्जादाशीन हुए। आप हज़रत मख़दूमे जहाँ के सुपुत्र हज़रत मख़दूम ज़कीउद्दीन की एकमात्र सुपुत्री बीबी बारका (*हज़रत वहीदुद्दीनचिल्लाकशकीपत्नी*) के वंशज थे। इसलिए मख़दूमे जहाँ के वंशज होने के कारण सभी आपके प्रति आदर भाव रखते थे और बिहार शरीफ़ में आपके आगमन ने मानो मख़दूम की स्मृति को जीवन्त बना दिया था। आपकी लोकप्रियता आकाश छूने लगी। हर व्यक्ति आपके प्रेम और स्नेह में भावविभोर हो गया। इस बीच मख़दूम की भी आप पर स्पष्ट कृपा दृष्टि चमत्कार स्वरूप हुई अर्थात आप रोग ग्रस्त होकर दरगाह

शरीफ़ पर स्वास्थ की कामना से हाज़िर हुए थे और दरगाह शरीफ़ पर हाज़री ने आपको रोग मुक्त कर दिया। तब से आज तक आप ही के वंश में मख़्दूमे जहाँ की सज्जादानशीनी चली आ रही है।

आप को सूफ़ीवाद की शिक्षा-दीक्षा हज़रत शाह बसीरूद्दीन नूरशामी से प्राप्त हुई थी और आप फ़िरदौसी सिलसिले में उन्हीं के मुरीद और ख़लीफ़ा थे। हज़रत शाह बसीरूद्दीन नूरशामी को हज़रत शाह सदरूद्दीन रज़ा से यह सब कुछ प्राप्त हुआ था और हज़रत शाह सदरूद्दीन रज़ा स्वंय, हज़रत मख़्दूमे जहाँ के प्रिय मुरीद और ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना नसीरूद्दीन सुन्नामी से लाभान्वित हुए थे।

आप हज़रत मख़्दूमे जहाँ की दरगाह शरीफ़ के प्रति अभूतपूर्व आदर सम्मान का भाव रखते थे और दिन रात ईश-जाप में व्यस्त रहते थे।

आप अपनी वसीयत के अनुसार बड़ी दरगाह में प्रवेश के उस द्वार से सटे दफ़न हुए जिसका निर्माण शैख़ सलाहुद्दीन ने कराया था।

(8) हज़रत मख़्दूम शाह जलाल फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़्दूम शाह भीख फ़िरदौसी के बाद मख़्दूमे जहाँ के आठवें सज्जादनशीन हुए। आप अपने पिता के मार्ग का पूर्णतः अनुसरण करते रहे और आपका निवास भी बड़ी दरगाह पर ही रहा केवल वार्षिक उर्स शरीफ़ के अवसर पर ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म पधारते और सज्जादनशीन के कर्त्तव्यों को पूरा करते।

आप का मज़ार भी अपने पिता और बड़े भाई हज़रत शाह लाल के समीप है।

9. हज़रत मख़्दूम शाह अख़वन्द फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़्दूम शाह जलाल फ़िरदौसी के बाद मख़्दूमे जहाँ के नौवें सज्जादानशीन हुए और पूर्वजों के मार्ग का अनुसरण किया। आपने सूरी वंश को उत्थान और अवनति दोनों देखी तथा मुगलों का भी शासन काल देखा। आप ही के काल में सन्दली दरवाज़े का निर्माण बड़ी दरगाह में हुआ।

आप अपने पिता के ही मुरीद और ख़लीफ़ा थे। आप का मज़ार पिता एवं दादा के मज़ार से पूरब तनिक ऊँचे चबूतरे पर है।

10. हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह अख़वन्द फ़िरदौसी के उपरांत हज़रत मख़दूमे जहाँ के 10 वें सज्जादानशीन हुए। आपने सूफ़ीवाद की शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से ही प्राप्त की और उन्हीं के मुरीद और ख़लीफ़ा हुए।

आप का जीवन भी अपने पूर्वजों की भाँति दरगाह शरीफ़ पर ही गुज़रा।

आपका मज़ार भी अपने पिता से सटे है।

11. हज़रत मख़दूम शाह अहमद फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 11 वें सज्जादानशीन हुए। आप अपने पिता के ही शिष्य मुरीद और ख़लीफ़ा थे। आप ने अपने पूर्वजों की ही भाँति बड़ी दरगाह में रहकर लोगों के मार्गदर्शन और कल्याण में अपना जीवन बिताया। आपका मज़ार भी अपने पिता के सटे है।

12. हज़रत मख़दूम दीवान शाह अली फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह अहमद फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 12 वें सज्जादानशीन हुए। आप ने भी शिक्षा-दीक्षा अपने पिता ही से प्राप्त की और महान सूफ़ी संत हुए। आप हज़रत मख़दूम शाह भीख के वंशज में सर्वप्रथम थे, जिन्होंने बड़ी दरगाह का निवास छोड़ कर ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में स्थाई निवास प्रारम्भ किया। आपके ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में निवास करने से ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म की प्राचीन छटा फिर जीवंत हो उठी ओर यह पवित्र स्थान एक बार फिर मख़दूम के वंशजों से आबाद और प्रकाशित हो उठा। आप ने ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म क्षेत्र में विभिन्न निर्माण कार्य कराया। लंगर जारी किया। ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म क्षेत्र को फिर से आबाद करने के कारण यह मुहल्ला आप ही के नाम से मुहल्ला शाह अली प्रसिद्ध हुआ।

दूर-दूर से सत्य प्रेमी ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म आकर आप से लाभान्वित

होने लगे और आपकी महानता की चर्चा दिल्ली दरबार तक जा पहुँची। तत्कालीन सुल्तान ने ख़ानक़ाह के खर्चे के लिए जागीरें भेंट कीं।

आपका विवाह हज़रत मख़दूम शोऐब फ़िरदौसी शैख़पूरवी के वंशज में हुआ। जिनसे दो पुत्र प्रसिद्ध हुए (1) हज़रत शाह मुस्तफ़ा (2) हज़रत मख़दूम शाह अब्दुस्सलाम

इन दोनों ही पुत्रों से आपका वंश ख़ूब फला-फूला और अब तक फल फूल रहा है। आप का मज़ार भी बड़ी दरगाह में अपने पूर्वजों के संग है।

13. हज़रत मख़दूम शाह अब्दुस्सलाम फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम दीवान शाह अली फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 13 वें सज्जादानशीन हुए। शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से ही प्राप्त की और उन्हीं से मुरीद होकर ख़िलाफ़त प्राप्त की।

1033 हिजरी में सम्राट जहाँगीर ने मौज़ा मसादिरपूर आप ही को भेंट किया था।

आप का मज़ार हज़रत मख़दूमे जहाँ के चरणों के बाद दूसरी पंक्ति में है।

14. हज़रत मख़दूम शाह ज़कीउद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने पिता शाह अब्दुस्सलाम फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 14 वें सज्जादानशीन हुए।

आप पिता के शिष्य मुरीद और ख़लीफ़ा थे। इस्लामी विद्या में निपुण और महान सूफ़ी संत थे। प्रसिद्ध मौलाना अब्दुन्नबी मुहद्दिस बिहारी जो कि शैख़ नूरूल हक़ मुहद्दिस देहलवी के शिष्य थे आप से भी लाभान्वित हुए थे। आप ही के काल में हबीब खाँ सूरी ने बड़ी दरगाह में ईदगाह और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए हौज़े शरफ़ुद्दीन (**मख़दूम तालाब**) का निर्माण कराया।

आप का मज़ार मख़दूम जहाँ के चरणों के बाद तीसरी पंक्ति में स्थित है।

15. हज़रत मख़दूम शाह वजीहुद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह ज़कीउद्दीन के बाद मख़दूमे जहाँ के 15 वें सज्जादानशीन हुए।

दरगाह शरीफ़ की अचल सम्पत्तियों को लेकर आपके सौतेले भाईयों ने आपसे विवाद प्रारम्भ किया था परन्तु तत्कालीन सूफ़ी संतों और दूसरी दरगाहों के सज्जादानशीनों ने मिल कर आपके अधिकारों की लिखित पुष्टि की और इस प्रकार विवाद समाप्त हो गया।

आप अपने काल के विख्यात सूफ़ी संत हज़रत शाह रुक्नुद्दीन शत्तारी (*सज्जादानशीनमख़दूमशाहअलीशत्तारी,जन्दाहा,वैशाली*) से मुरीद होकर ख़िलाफ़त प्राप्त की थी। इसके अतिरिक्त आप अपने पिता के भी ख़लीफ़ा थे।

आपकी सेवा में तत्कालीन गर्वनर अज़ीमुश्शान ने हाज़री दी थी और बड़ी दरगाह पर निर्माण कार्य में रुचि ली थी। सुल्तान फर्रुख़सियर ने भी कई गाँव मख़दूमे जहाँ के उर्स के लिए भेंट किये थे। आप के काल में मख़दूमे जहाँ का उर्स बड़े धूम-धाम से होता था। आप ही के काल में वे सारी पवित्र वस्तुएं (*तबर्रुकात*) जो अब तोशाख़ाने में रखी हैं, ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में एकत्र हुईं।

आप का मज़ार भी बड़ी दरगाह में है।

16. हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद बुज़ुर्ग फ़िरदौसी

आप अपने पिता हजरत मख़दूम शाह ज़कीउद्दीन के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 16 वें सज्जादानशीन हुए। परन्तु आप कुछ ही दिनों बाद स्वर्ग सिधार गए।

17. हज़रत मख़दूम शाह अली फ़िरदौसी

आप अपने सगे भाई हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद बुज़ुर्ग फ़िरदौसी की मृत्यु के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 17 वें सज्जादानशीन हुए। परन्तु आप भी जल्दी ही स्वर्ग सिधार गए।

18. हज़रत मख़दूम शाह अलाउद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने सगे भाई हज़रत मख़दूम शाह अली फ़िरदौसी के उपरांत मख़दूमे जहाँ के 18 वें सज्जादानशीन हुए, परन्तु आप भी अपने दो बड़े भाईयों की ही भाँति जल्दी ही परलोक सिधार गए।

19. हज़रत मख़दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने सगे भाई हज़रत मख़दूम शाह अलाउद्दीन फ़िरदौसी की मृत्यु के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 19 वें सज्जादानशीन हुए। अपने तीन भाईयों की जल्दी-जल्दी मृत्यु के बाद आप के काल में ठहराव आया और आपकी लोकप्रियता सुदृढ़ हुई। राजगीर में हज़रत मख़दूमे जहाँ के हुजरे का नवनिर्माण आप ही के काल में 1150 हि० में हुआ। आपके समय में ही मुग़ल शासक मुहम्मद शाह रंगीला ने कई गाँव ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में भेंट किये।

आप का मज़ार भी बड़ी दरगाह में है।

20. हज़रत मख़दूम शाह अलीमुद्दीन दुरवेश फ़िरदौसी

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 20 वे सज्जादानशीन हुए। आप हज़रत शाह मुहम्मद शफ़ी शुत्तारी के मुरीद और ख़लीफ़ा थे, जो कि हज़रत शाह रुक्नुद्दीन शत्तारी के परनाती और मुरीद तथा ख़लीफ़ा थे।

आप एक लोकप्रिय महान सूफ़ी संत गुज़रे हैं। आप की महानता की चर्चा शाही दरबार तक जा पहुँची। शाह आलम द्वितीय बिहार शरीफ़ में हाज़री के लिए आया और आप से भेंट कर आर्शीवाद प्राप्त किया। उसने कई गाँव मख़दूमे जहाँ के दरगाह के खर्चे के लिए भेंट किये।

शाह आलम द्वितीय के कई शाही फ़रमान ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में सुरक्षित हैं, जिससे अपने काल में हज़रत शाह अलीमुद्दीन फ़िरदौसी की अतिलोकप्रियता और महानता का पता चलता है।

आपके तीन विवाह हुए। पहली पत्नी से कोई सन्तान न हुई। दूसरी पत्नी से केवल एक लड़की बीबी मरियम थीं। तीसरी पत्नी सैयद मनव्वर

अली की पुत्री थीं उनसे एक पुत्र हज़रत शाह वली उल्लाह आपकी अन्तिम अवस्था में जन्मे।

आप का मज़ार, गतवर्ष परलोक सिधारे हज़रत मख़दूमे जहाँ के 26 वें सज्जादानशीन हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद अमजाद फ़िरदौसी के मज़ार से सटे पूर्व में है।

21. हज़रत मख़दूम शाह वलीउल्लाह फ़िरदौसी

अपने पिता मख़दूम शाह अलीमुद्दीन दुरवेश फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 21 वें सज्जादानशीन हुए। आप का जन्म भी हज़रत मख़दूमे जहाँ का एक स्पष्ट चमत्कार था। हज़रत शाह अलीमुद्दीन को तीनों विवाह से कोई पुत्र नहीं हुआ और वृद्धावस्था के लक्षण शरीर पर स्पष्ट होने लगे तो आप सन्तान के न होने से मख़दूम की गद्दी के संचालन के प्रति चिंतित हुए और अपने हार्दिक पुत्र हज़रत शाह एहसानुल्लाह चिश्ती (*सज्जादानशीनहज़रतमख़दूमशाहफ़रीदुद्दीनतवीलाबख़्श चिश्तीचाँदपूरा,बिहारशरीफ़*) से अपनी चिंता की चर्चा की और उन्हीं के परामर्शानुसार, उनके साथ आप मख़दूमे जहाँ की दरगाह शरीफ़ पर विशेष हाज़री के लिए फूल और सुगंधित सामग्री के साथ चले। मार्ग में हज़रत शाह एहसानुल्लाह चिश्ती ने हज़रत मख़दूमे जहाँ की महिमा में एक कविता रची और उसी में अपनी विशेष चिन्ता की ओर मख़दूमे जहाँ का ध्यान आकृष्ट कराया और उसे पढ़ते हुए दरगाह शरीफ़ पर हाज़री दी और वह रात वहीं दरगाह शरीफ़ पर ध्यान में बितायी तो एक तेजस्वी पुत्र का अर्शीवाद प्राप्त हुआ। हज़रत शाह एहसानुल्लाह चिश्ती की कविता के कुछ पद्य इस प्रकार हैं-

या शरफ़ दीं तुझ शरफ़ से ज़ुमला आलम पुरशरफ़
ज़ुमला आलम पुरशरफ़ है तुझ शरफ़ से हर तरफ़
ज़ुल्म करना चाहता है हासिदे नादाँ हरफ़
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाहे नजफ़

एक तो मैं हूँ अकेला दुसरे सुनसान है
तिस उपर उन हासिदों के डाह का घमसान है
तुम करो आबाद इस जंगल को जो वीरान है
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाह नज़फ़

जो मुरादें थीं मेरी सब तुम ने बरलाया शताब
शाद हैं सब दोस्त मेरे और हैं दुशमन कबाब
आरज़ू एक और मैं रखता हूँ ऐ आली जनाब
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाह नज़फ़

या शरफ़ दीं तुझ से रखता हूँ मैं ये इल्तेजा
शाह अलीमुद्दीं को दे तु एक पेसर बहरे ख़ुदा
वरना चन्गुल मेरा और दामन तेरा रोज़े जज़ा
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाह नज़फ़

साले हिजरी ग्यारह सौ अस्सी और उस पर पाँच है
ये हेकायत बोलता हूँ तुम सुनो सब साँच है
लग रही अब दिल में मेरे इश्क़ की सौ आँच है
मुश्किलें आसाँ करो मेरी पए शाह नज़फ़

रो रो कर की गई यह विनती स्वीकार हुई और हज़रत शाह वलीउल्लाह का जन्म हुआ। आप चार पाँच वर्ष के ही थे कि आपके पिता की मृत्यु हो गई। हज़रत शाह अलीमुद्दीन की मृत्यु के बाद आप के सौतेले बहनोई को मख़दूमे जहाँ की गद्दी पर आसीन होने की जिज्ञासा हुई उधर अधिकतर परिवार के लोग परम्परानुसार पिता के बाद पुत्र को सज्जादानशीन बनाना चाहतें थे। इसलिए विवाद ने जन्म लिया। विवाद सुलझाने हेतु दोनों पक्षों और उनके समर्थकों ने उस काल के सबसे महान सूफ़ी संत हज़रत मख़दूम मुनइम पाक* को निर्णय के लिए अधिकृत किया। हज़रत मख़दूम मुनइम पाक, जिनकी सेवा पीढ़ी दर पीढ़ी इस तुच्छ

(*) हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद मुनइम पाक (1082-1185 हि०) अपने काल के विख्यात महान सूफ़ी संत हुए हैं। आप की जन्म भूमि पचना ग्राम जिला शेख़पूरा थी। आपने शिक्षा-दीक्षा बाढ़ के मीर मुहल्ला में हज़रत दीवान जाफ़र की ख़ानक़ाह में प्राप्त की। हज़रत दीवान जाफ़र के पुत्र हज़रत दीवान सैयद ख़लीलुद्दीन से मुरीद हुए और सभी सूफ़ी शाखाओं में ख़िलाफ़त प्राप्त की। फिर दिल्ली जा कर उच्च शिक्षा और शोध कार्य किया। फिर स्वंय दिल्ली में उच्च शिक्षा प्रदान करते रहे। दिल्ली में ही अबुलउलाईया सिलसिले के हज़रत शाह फ़रहाद और हज़रत शाह असदुल्लाह से लाभान्वित हुए और इन दोनों के बाद उनकी ख़ानक़ाह के सज्जादानशीन हुए। फिर दिव्य संकेत से पटना पधारे और पटना सिटी के मुहल्ला मीतन घाट में मुल्ला मीतन की मस्जिद में बाक़ी बचा सारा जीवन व्यतीत किया। आपने अभूतपूर्व लोकप्रियता अर्जित की। आप उच्चकोटी के सूफ़ी संत और महापुरुष गुज़रे हैं। इस उपमहाद्वीप में आपके शिष्यों की श्रृंखला असामान्य रूप से फैली है। आपकी दरगाह शरीफ़ ख़ानक़ाह मीतन घाट में मौजूद है और **हज़रत सैयद शाह सलीमुद्दीन अहमद मुनएमी** वर्तमान सज्जादानशीन हैं।

लेखक के परिवार में चली आती है, हज़रत मख़दूमे जहाँ के परम भक्त थे, उन्हीं ने कहा कि हज़रत मख़दूमे जहाँ जो निर्णय करेंगे उसी को लागू किया जायेगा यह कहकर दरगाह शरीफ़ चले गए और हज़रत मख़दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार के समीप ध्यान में लीन हो गए जब स्पष्ट संकेत प्राप्त हुआ तो वह पवित्र चादर जो नवीन सज्जादानशीन की पगड़ी के लिए मख़दूमे जहाँ के मज़ार पर रखी जाती है, लेकर ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म आये। सभों की दृष्टि आपकी ओर थी और आपका निर्णय सुनने को सभी बेचैन थे। हज़रत शाह एहसानुल्लाह चिश्ती अल्पायु शाह वलीउल्लाह को ख़ानक़ाह में मख़दूमे जहाँ के गद्दी के पास ले गए और हज़रत मख़दूम मुनइम पाक ने यह कहते हुए हज़रत शाह वलीउल्लाह के शीर्ष पर पवित्र चादर की पहली पगड़ी अपने हाथों से बाँध दी कि जिस प्रकार हज़रत मख़दूमे जहाँ को देखा है, उसी प्रकार मेरे हाथ से यह कार्य सम्पन्न हो रहा है। आप की पगड़ी के बाद सभी सूफ़ी संतों और दूसरे संस्थानों से आए सज्जादानशीनों ने भी अपनी अपनी ओर से पगड़ी बाँध दी और सारा विवाद समाप्त हो गया तथा सर्वसम्मति से हज़रत शाह वलीउल्लाह, हज़रत मख़दूमे जहाँ के 21 वें सज्जादानशीन हो गए।

आपके मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीन होने का सत्यापन मुग़ल शासक मुहम्मद शाह की ओर से भी फ़रमान के रूप में आया, जो कि ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म में सुरक्षित है।

हज़रत शाह वलीउल्लाह ने हज़रत शाह हुसैन अली शत्तारी (*सज्जादानशीन,ख़ानक़ाहशत्तारिया,जन्दाहा*) से मुरीद होकर संतमार्ग की शिक्षा दीक्षा प्राप्त की। आप हज़रत शाह हमीदुद्दीन राजगीरी से भी लाभान्वित हुए।

आप को हज़रत मख़दूमे जहाँ से असामान्य घनिष्ठता थी और हज़रत मख़दूमे जहाँ की भी आप पर अभूतपूर्व दया और कृपा थी।

आपने अपने काल में ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म का नवनिर्माण कराया और बड़े लोकप्रिय हुए।

आप ने 1234 हिजरी में 23 रजब को परलोक सिधारे। आप का मज़ार हज़रत मख़दूमे जहाँ के चरणों के बाद दूसरी पंक्ति में सज्जादानशीनों के घिरे हुए विशिष्ट क्षेत्र में पहला है।

22. हज़रत मख़दूम शाह अमीरुद्दीन फ़िरदौसी

(1234-1287 हि०)

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह वली उल्लाह के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 22 वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 53 वर्ष तक हज़रत मख़दूमे जहाँ की गद्दी की शोभा रहे। आपका जन्म 1217 हि० के मुहर्रम मास की 9 तारीख़ को हुआ था।

आपने शिक्षा-दीक्षा अपने काल के प्रसिद्ध विद्वान मौलाना शाह अज़ीज़ुल्लाह कुरजवी से प्राप्त की थी जो कि हज़रत मख़दूम मुनइम पाक के ख़लीफ़ा हज़रत शाह कुत्बुद्दीन बसावन मुनएमी के सुपुत्र थे। आप हज़रत शाह हुसैन अली शत्तारी अर्थात अपने पिता के ही पीरो मुर्शिद से मुरीद हुए और ख़िलाफ़त प्राप्त की। अपने पिता से भी लाभान्वित हुए तथा महान सूफ़ी संत हज़रत ख़्वाजा अबुल बरकात अबुलउलाई के सुपुत्र हज़रत शाह अबुल हसन अबुलउलाई से भी सिलसिला अबुलउलाईया की ख़िलाफ़त प्राप्त की।

आपका शरीर दुबला पतला था परन्तु मुखमण्डल पवित्र वंश के तेज और आभा से परिपूर्ण था और आप की महानता के बारे में सभी समकालीन संत एकमत थे।

आप में दनशीलता बहुत थी। स्वभाव ऐसा था कि पीड़ित और दूखी व्यक्ति भी आप से मिल कर अपनी पीड़ा और दुख भूल जाता था।

आप फ़ारसी और उर्दू भाषा के लोकप्रिय कवि हुए हैं। इन दोनों भाषाओं में आपको दक्षत प्राप्त थी। आपकी उर्दू ग़ज़ल के कुछ पद्य यहाँ लिखना अनुचित न होगा:-

शरारे हुस्न से तेरे नहीं कोई ख़ाली
हरम का संग हो पत्थर हो या कलीसा हो

करता हूँ सरापा को तेरे नक्श मैं दिल पर
तस्वीर तेरी ज़ेरे बग़ल जाये तो अच्छा

बे यार के जीने से तो मरना ही भला है
अब जान मेरी तन से निकल जाये तो अच्छा

आप 1287 हि० में जमादि प्रथम मास की 5 वीं तिथि को शुक्रवार की रात्रि में परलोक सिधारे और अपने पिता से सटे पश्चिम दफ़्न हुए।

23. जनाबहुज़ूर मख़दूम शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी

(1287-1321 हि०/1870-1903 ई०)

आप अपने पिता हज़रत मख़दूम शाह अमीरूद्दीन फ़िरदौसी के बाद मख़दूमे जहाँ के **23** वें सज्जादानशीन हुए और लगभग **34** वर्षों तक हज़रत मख़दूमे जहाँ की पवित्र गद्दी की शोभा बढ़ाते रहे।

आप का जन्म **23** रजब **1248** हि० को सोमवार की रात्रि में हुआ। आप ने क्रमश: मौलवी एनायत हुसैन, मौलाना हाजी सैयद वजीरूद्दीन और मौलाना मुहम्मद मूसा मुल्तानी से शिक्षा दीक्षा प्राप्त की। बीस वर्ष की उम्र में आप शिक्षा और ज्ञान में निपुण हो चुके थे। आप में अभूतपूर्व मेधा थी और स्मरण शक्ति इतनी तीव्र थी कि केवल एक बार पढ़ने से सम्पूर्ण पुस्तक याद हो जाती थी। आप के शिक्षक तथा सहपाठी सभी आप की कुशाग्र बुद्धि के प्रति आश्चर्यचकित रहते थे। आप की लिखावट भी बहुत सुन्दर होते थे।

आप की काया भी बड़ी सुन्दर थी और मुखमण्डल में बड़ा आकर्षण था, जो देखता मंत्रमुग्ध हो जाता।

सूफ़ी वाद की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की और फिर उन्हीं के आदेशानुसार हज़रत मख़दूम शाऐब फ़िरदौसी के सज्जादानशीन हज़रत शाह जमाल अली फ़िरदौसी से मुरीद हुए और अपने पिता के अतिरिक्त उनसे भी ख़िलाफ़त प्राप्त की। हज़रत शाह जमाल अली की मृत्यु के बाद आपने प्रसिद्ध सूफ़ी संत हज़रत शाह विलायत अली मुनएमी इस्लामपूरी की सेवा में उपस्थित हो कर बहुत कुछ लाभ प्राप्त किया और ख़िलाफ़त भी प्राप्त की।

आप अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान और पारंगत सूफ़ी संत गुज़रे हैं। सभी समकालीन संत आपका नाम न लेकर आदर स्वरूप आपको *जनाबहुज़ूर* से सम्बोधित करते थे। आप के बाद मख़दूमे जहाँ के सभी सज्जादानशीन **जनाबहुज़ूर** कहलाने लगे। फ़ारसी भाषा में आपको उत्कृष्ट दक्षता प्राप्त थी। फ़ारसी पद्य में आपकी रचनायें बहुत बड़ी संख्या में है, जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं-

(1)	शजराते तय्येबात	(2)	सिलसिलतुल लाली
(3)	गुले फ़िरदौस	(4)	गुले बहिश्ती
(5)	रौज़तुन्नईम	(6)	इबरत अफ़ज़ा
(7)	शहदो शीर	(8)	रिसाला इल्मे नुजूम
(9)	रिसाला इल्मे रमल	(10)	चौपाईयों का संग्रह

आपने कविता में अपना *तख़ल्लुस*(उपनाम) *सेबात* रखा था उर्दू में भी आपकी कविताएं मिलती हैं।

आप से असंख्य लोगों ने सूफ़ी वाद की शिक्षा ली और आपने लगभग 35 व्यक्तियों को शिक्षा-दीक्षा देकर दूसरों की शिक्षा के लिए अधिकृत (*ख़िलाफ़त*) किया। जिनमें प्रसिद्ध ख़लीफ़ा निम्नलिखित हैं-

(1) हज़रत मौलाना शाह बुरहानुद्दीन फ़िरदौसी (*सुपुत्र*)
(2) हज़रत शाह मुहम्मद हयात फ़िरदौसी (*पौत्र*)
(3) हज़रत शाह वसी अहमद उर्फ़ शाह बराती (*सुपुत्र*)
(4) हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फ़ाज़िल (*दामाद*)
(5) हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद सईद (*सुपुत्र*)
(6) हज़रत मौलवी जमालुद्दीन गोरखपूरी
(7) हज़रत सैयद शाह मुहम्मद नाज़िम मानपूरी
(8) हज़रत मौलवी अबदुर्रहमान अमृतसरी
(9) हज़रत शैख़ मुहम्मद इस्माईल बम्बई
(10) हज़रत सैयद शाह अबू मुहम्मद अशरफ़ हुसैन सज्जादानशीन कछौछा शरीफ़ फ़ैज़ाबाद
(11) हज़रत मौलाना शाह रशीदुद्दीन (*सुपुत्र*)
(12) हज़रत हाफ़िज़ सैयद शाह मुहम्मद शफ़ी फ़िरदौसी (*सुपुत्र*)
(13) हज़रत शाह मुहम्मद इलयास यास बिहारी (*सुपुत्र*)
(14) हज़रत शाह नजमुद्दीन फ़िरदौसी। इत्यादि

आप ने अपने पूर्वजों की भाँति पत्राचार के द्वारा भी शिक्षा दीक्षा का कार्य किया।

आप ने अपनी धर्मपत्नियों की मृत्यु के कारण पाँच विवाह किये और इन पाँचों पत्नियों से आपको बड़ी संख्या में सुपुत्र और सुपुत्रियाँ हुईं। आप की सभी संतान अभूतपूर्व रूप से शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण

उपलब्धियों की पात्र हुई।

आप के जीवन और उपलब्धियों पर आधारित एक विस्तृत पुस्तक हज़रत शाह नजमुद्दीन फ़िरदौसी लिखित **"हयाते सेबात"** के नाम से हस्तलिखित सुरक्षित है। आप के जीवन पर शोध कार्य करके डाक्टर अली अरशद साहब शरफ़ी ने डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है।

आप का स्वर्गवास 12 मई 1903 ई०/5 जमादी द्वितीय 1321 हि० को रात्रि के 1 बज कर 55 मिनट पर हुआ। आप का मज़ार अपने पिता के सटे पश्चिम में है।

24. जनाबहुज़ूर मख़दूम सैयद शाह मुहम्मद हयात फ़िरदौसी

(1903-1935 ई०/1321-1354 हि०)

आप अपने दादा जनाबहुज़ूर सैयद शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी के बाद पिता की अकस्मात मृत्यु के कारण हज़रत मख़दूमे जहाँ के 24 वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 32 वर्षों तक इस पवित्र गद्दी की शोभा रहे।

आप का जन्म 1297 हि० में हुआ। आपने शिक्षा दीक्षा अपने फूफा हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद फ़ाज़िल से प्राप्त की और अपने दादा से मुरीद हुए और ख़िलाफ़त प्राप्त की।

आप की संगीत और कविता में गहरी रूचि थी और इसके माध्यम से आप ईश जाप और ध्यान में लीन रहते थे। उर्दू और विशेष कर हिन्दी और मगही कविता कहने में आपको दक्षता प्राप्त थी।

जमादी द्वितीय की पहली तिथि को 1354 हि० (*1935ई०*) में आपकी मृत्यु हुई। आपका मज़ार अपने पिता के सटे पश्चिम में है।

25. जनाबहुज़ूर मख़दूम सैयद शाह मुहम्मद सज्जाद फ़िरदौसी

(1935 ई० - 1976 ई०)

आप अपने पिता जनाबहुज़ूर सैयद शाह मुहम्मद हयात फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 25 वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 41 वर्षों तक इस पवित्र गद्दी की शोभा बढ़ाते रहे।

आपका जन्म 1911 ई० में हुआ था। आपने शिक्षा दीक्षा अपने पिता

से प्राप्त की और उन्हीं से मुरीद हुए और फिर ख़िलाफ़त प्राप्त की।

आप अपने काल के महान सूफ़ी संत और लोकप्रिय गद्दीनशीन गुज़रे हैं। आप ही के काल में हज़रत मख़दूमे जहाँ के मज़ार पर भव्य गुम्बद का निमार्ण हुआ। आप के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करने वाले लोग अभी जीवित हैं और वे आपकी महिमा के जीवन्त साक्षी हैं।

आप ने शव्वाल की 25 तारीख़ को 1976 ई०में परलोक सिधारा और अपने पिता के सटे पश्चिम में दफ़न हुए।

26. जनाबहुज़ूर मख़दूम सैयद शाह मुहम्मद अमजाद फ़िरदौसी
(1976-1997 ई०)

आप अपने पिता जनाबहुज़ूर सैयद शाह मुहम्मद सज्जाद फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़दूमे जहाँ के 26 वें सज्जादानशीन हुए और लगभग 21 वर्षों तक इस पवित्र गद्दी की शोभा रहे। आप अपने पिता के शिष्य, मुरीद और ख़लीफ़ा थे।

आप शान्त और सुशील स्वभाव के दयालु हृदय वाले मृदु भाषी संत पुरूष थे। आपने बहुत ही सादा सहज और पारदर्शी जीवन व्यतीत किया जो सारा का सारा जन सामान्य के लिए समर्पित था। लोगों के दुख दर्द, परेशानियाँ, विपत्तियाँ, कष्ट और असुविधा के बारे में सुनकर आप इस प्रकार विचलित हो उठते मानो वह स्वंय उनकी पीड़ा हो। दान शीलता, परोपकारिता, बलिदान और संयम की आप जीवंत प्रतिमूर्ति थे। दिखावा, बनावट और अहं की भावना आपको छू तक नहीं गई थी। आपके जीवनवृत पर एक पुस्तक लिखी जा रही है, जिसमें विस्तार से सभी पहलूओं को प्रकाशित किया जायेगा।

आप के काल में ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म की प्रगति और उत्थान के मार्ग में कई महत्वपूर्ण मील के पत्थर स्थापित हुए। हज़रत मख़दूमे जहाँ के हुजरे तथा ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म और हज़रत मख़दूमे जहाँ के पवित्र मज़ार शरीफ़ के नव निमाण का अति महत्वपूर्ण कार्य हुआ। मख़दूमे जहाँ की रचनायें मकतूबाते दो सदी, मादेनुल मआनी, ख़्वाने पुरनेमत, मूनिसुल मुरीदीन इत्यादि का पहली बार उर्दू रूपान्तरण प्रकाशित हुआ।

आप के मुरीद और शिष्य न केवल इस उपमहाद्वीप में हैं बल्कि

अरब देशों और अमेरिका में भी हैं। आप एक अत्यन्त लोकप्रिय और महान सूफ़ी संत हुए हैं।

आप सफ़र मास की 23 तारीख़ 1418 हि० अर्थात 29 जून 1997 ई० को रविवार को 2 बजे दिन में अल्लाह के शुभ नाम के साथ परलोक सिधारे और बड़ी दरगाह में अपने पिता के चरणों में दफ़न हुए।

वर्तमान सज्जादानशीं

27. जनाबहुज़ूर सैयद शाह मुहम्मद सैफुद्दीन फ़िरदौसी

आप अपने पिता जनाबहुज़ूर मख़दूम सैयद शाह मुहम्मद अमजाद फ़िरदौसी के बाद 26 सफ़र 1418 हि० को अन्तिम बुध के दिन अर्थात 2 जूलाई 1997 ई० को हज़रत मख़दूमे जहाँ के 27 वें सज्जादानशीं हुए हैं। आप ने लखनऊ में स्थित विश्वविख्यात नदवतुल उलमा विश्वविधालय से धार्मिक शिक्षा प्राप्त की है और संत मार्ग में अपने पिताश्री के शिष्य, मुरीद और ख़लीफ़ा हैं।

आप के काल के प्रारम्भ में ही हज़रत मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद बल्ख़ी की पवित्र दरगाह शरीफ़ (*पहाड़पूरा*) की विशाल चहारदीवारी का अभूतपूर्व कार्य बड़ी तीव्रता और कुशलता के साथ चल रहा है और बड़ी दरगाह में भी खुले प्रांगण में मार्बल फ़र्श होने के साथ-साथ सौन्दर्यीकरण का कार्य भी बड़े पैमाने पर चल रहा है। जिस सूर्य के उगते समय किरण की दशा हो उसके प्रताप की कल्पना भली भाँति की जा सकती है।

मैं इसी कामना के साथ इस पुस्तक को समाप्त करता हूँ कि अल्लाह पाक उन्हें चिरंजीवी बनाये, मख़दूमे जहाँ की प्रतिमूर्ति और अपने पूर्वजों के लिए गर्व का विषय बनाये। मख़दूमे जहाँ की पवित्र गद्दी की शोभा चारों दिशाओं में फैले और यह हज़रत मख़दूमे जहाँ के सज्जादानशीनों की स्वर्णिम श्रृंखला अमर रहे।

मेरे पीरे शरफ़ तोरी नगरी सलामत
मेरे शाहे शरफ़ तोरी डेयोढ़ी सलामत अरज करे एक नारी
घरवा से निकसी, ब्रिज ताले ठारी अंसुवन भीजे मोरी सारी
सब पन्हरियाँ भर-भर गैलीं मैं तोरा दरवाजे ठारी
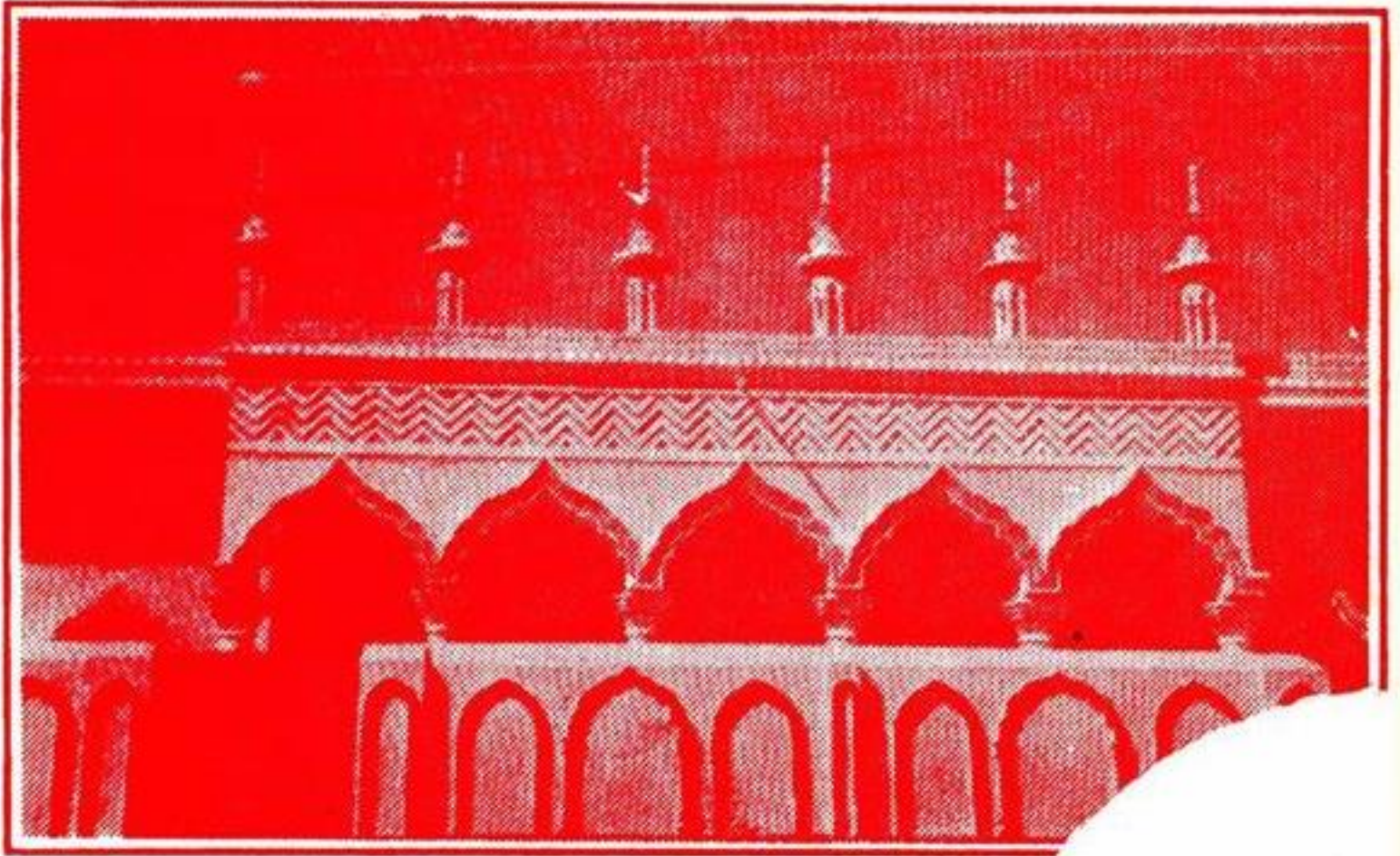
खानकाहे-मोअज्जम, बिहार शरीफ, का नवनि'

मखदूम साहब ने लिखा है–

''एक महात्मा से लोगों ने पूछा कि जब सद्‌गुरू का सत्संग उपल॰॰ न हो तो उस समय क्या करना चाहिए? उन्होंने उत्तर दिया कि महापुरुषों की रचनाओं में से थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन पढ़ लिया जाए, क्योंकि जब सूर्यास्त हो जाता है तो दीये से प्रकाश लिया जाता है।''

(फवायदे रुकनी)